ईसप की कहानियाँ

(पुस्तक मे ३०० कहानियाँ और ८६ चित्र हैं)

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, लिमिटेड,

प्रयाग ।

बार]

[मूल्य २)

Printed and published by K. Mittra at
The Indian Press Ltd
Allahabad

विषय	पृष्ठ

विषय

पके हुए अंगूरों के गुच्छे मोतियों की झालरों की तरह झूल रहे हैं। उन मनोहर और रसभरे अंगूरों को देख कर गीदड़ के मुँह में पानी भर आया। किन्तु कई बार उछल कूद करने पर भी वह उनको न पा सका। तब वह अपने मन को समझाता हुआ वहाँ से यह कह कर चल दिया कि ये अंगूर खट्टे हैं।

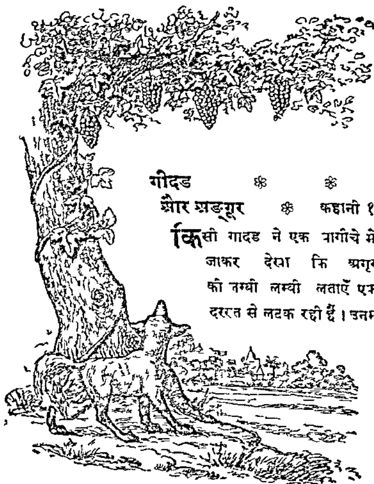
शिकारी और सिंह    कहानी २

एक शिकारी, एक दिन तीर कमान लेकर एक जङ्गल में शिकार खेलने गया। उसको देखते ही वन के सब जीव-जन्तु डर के मारे इधर-उधर भागने लगे। पर, पशुओं का राजा सिंह वहाँ से न हटा, वह शिकारी के सामने उससे भिड़ जाने के लिए आ डटा। यह देखकर शिकारी बोला—ठहरो, मैं अपने दूत को अभी भेजता हूँ, वह तुम्हें बतला देगा कि मैं कैसा आदमी हूँ। यह कह कर उसने एक ऐसा तीर छोड़ा कि वह सिंह की पीठ पर जा लगा। तीर की चोट से पीड़ित होकर सिंह जङ्गल की ओर भागा। यह देखकर एक गीदड़ ने सिंह को फिर भी साहस के साथ लड़ने को कहा। उसकी बात सुनकर सिंह बोला—'नहीं भाई, अब मैं तुम्हारी बात न मानूँगा, जिसका दूत ऐसा बलवान् है, वह खुद न जाने कैसा बलवान् होगा।'

चीलह और कबूतर    कहानी ३

कितने ही कबूतर, बहुत समय से, एक चीलह के डर के मारे इधर-उधर छिपे रहते थे। वे बड़ी सावधानी के साथ अपने अपने घोंसलों में रहते थे, इस कारण चीलह उनका कुछ न कर सकती थी। बार बार कबूतरों पर टूटने पर भी जब चीलह के हाथ कुछ न लगा तब उसने एक चाल चली। वह एक रोज कबूतरों से कहने लगी—तुम लोग हमेशा डरते डरते अपना

ईसप की कहानियाँ



गीदड और अङ्गूर ❀ ❀ ❀ कहानी १

किसी गीदड ने एक बागीचे में जाकर देखा कि अंगूर की लम्बी लम्बी लताएँ एक दरख्त से लटक रही हैं। उनमें

ीवन क्यों दु खी बना रहे हो ? एक काम करो तो तुम्हारा सब डर दूर हो जाय। ्म मुझे अपना राजा बना लो, ऐसा कर लोगे तो मैं शत्रुओं से तुम्हारी रक्षा रूँगी। कबूतरों ने उसकी इस झूठ बात पर विश्वास कर लिया। बस, उसी दिन से ाह चील्ह अच्छा मौका पाकर रोज एक एक कबूतर खाने लगी। इस प्रकार, थोड़े ी दिनों म, वह सब कबूतरों को खा गई। जा कबूतर सबसे पीछे बच रहा था ासे जब चील्ह खाने लगी तब वह बाला—हमारे लिए यह ठीक ही हुआ। जा ोग अपनी इच्छा से ही अपना सारी शक्ति का भार शत्रुओं अथवा अत्याचारियों ो सौंप देते हैं उनका यहा दशा होती है। उनकी दी हुई शक्ति ही उनके विनाश ा कारण होती है। इसमें उन्हें आश्चर्य करने और दु खी होने का कोई ारण नहीं।

जो लोग आगे पीछे का अच्छी तरह खयाल किये बिना ही शत्रु के हाथ अपने आपको ौंप देते हैं, उनकी अन्त में यही दुर्गति होती है।

गीदड़ और बकरा    कहानी ४

एक गीदड एक कुएँ में गिर गया था। बहुत समय तक वह अनेक प्रकार की चेष्टा करता रहा, पर कुएँ से बाहर न निकल सका। कुछ ्र बाद एक मूर्ख बकरा पानी पीने की इच्छा से वहाँ आकर खडा हुआ गीदड को कुएँ में पडा देख कर पूछने लगा—भैया हो, कुएँ का पानी है ? मीठा और अधिक है न ? गीदड अपनी दुर्दशा की बात छिपा कर बडी ्। से बोला—भाई, पानी का क्या कहना है। ऐसा मीठा है कि इसे छोड ् निकलने की इच्छा ही नहीं होती। और है भी बहुत अधिक। मैं अकेला ्न। पी सकूँगा। उतर आओ भाई, उतर आओ। यह सुनकर मूर्ख बकरा -पीछा किये बिना ही एक-दम कुएँ में कूद पडा। गीदड भी उसी समय आये

ए अपने भ्राता के सींगों पर पैर रखता हुआ शीघ्रता से छलांग मार कर कुएँ ऊपर पहुँच गया। ऊपर जाकर उसने गम्भीरता के साथ बकरे से कहा—"उ

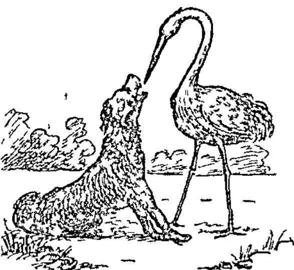
जितनी लम्बी दाढ़ी है, उसकी आधी भी यदि तुममें बुद्धि होती तो तुम से पहले अवश्य ही कुछ विचार कर लेते।

अन्त में पश्चात्ताप करने की अपेक्षा पहले ही सोच विचार कर लेना श्रे

भेड़िया और बगला   

एक समय एक भेड़िये के गले में हड्डी अटक गई। दुःख के इधर उधर फिरने लगा और जो जानवर उसकी नजर कहता—भाई, मेरे गले से हड्डी निकाल दो, मैं तुमको इसके बदले कु पर कोई भी उसकी इस बात पर राजी नहीं हुआ। अन्त में एक

मिन्नत और प्रार्थना पर बड़ी दया आई। वह पुरस्कार पाने की आशा से उसके गले की हड्डी निकाल देने पर राजी होगया। भेड़िये ने अपना मुँह खोल दिया। तब बगले ने



उसमें अपनी लम्बी गर्दन डाल कर चोंच से हड्डी निकाल ली। इसके अनन्तर बगले ने भेड़िये से नम्रता के साथ कहा कि आपने जो इनाम देने का वादा किया था उसे पूरा कीजिए। भेड़िये ने दाँत कड़कड़ा कर गुस्से के साथ कहा—अरे अकृतज्ञ, मेरे मुँह के भीतर अपनी पूरी गर्दन डालकर भी तूने उसे बाहर निकाल लिया। यही पुरस्कार क्या तेरे लिए कम है। इसे अनुग्रह न मान कर तू और किस पुरस्कार की आशा रखता है। यदि अपना भला चाहे तो अब शीघ्र ही मेरे सामने से दूर हो, नहीं तो अभी तेरी गर्दन को दबा कर पुरस्कार पाने की प्रार्थना बन्द कर दूँगा। यह सुनकर बगला चुपचाप वहाँ से चला गया।

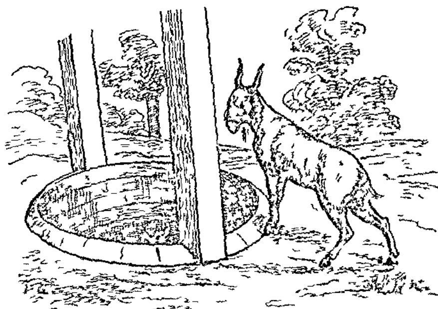
इतो भ्रष्टस्ततो भ्रष्ट

एक बकरी का बच्चा किसी गृहस्थ के घर के अन्दर बँधा हुआ था। उसने सिर उठाया और लोहे का सींकचा लगी हुई घर की खिड़की से देख

चींटी और पतंग    ६

अधिक ठण्ड पड़ने के कारण सारा देश बरफ से ढक गया है। खेतों में कहीं भी कुछ नहीं। एक भूखे पतङ्ग ने इधर-उधर उड़ कर देखा, एक चींटी

हुए अपने भ्राता के सींगों पर पैर रखता हुआ शीघ्रता से छलांग मार कर कुएँ ऊपर पहुँच गया। ऊपर जाकर उसने गम्भीरता के साथ बकरे से कहा



जितनी लम्बी दाढ़ी है, उसकी आधी भी यदि तुममें बुद्धि होती तो तुम कुएँ में से पहले अवश्य ही कुछ विचार कर लेते।

अन्त में पश्चात्ताप करने की अपेक्षा पहले ही सोच विचार कर लेना अच्

४६. चूहा और बवाल ❀ ❀

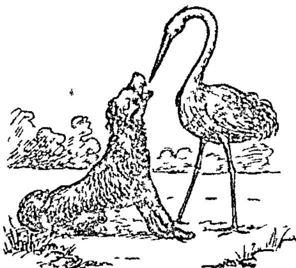
बहुत समय तक आग्रह और उत्कण्ठा के साथ नाद जाहिल २६ ...
एक बिल से एक छोटा सा चूहा निकल पड़ा। वे लोग इतने बड़े पहा
एक छोटा सा चूहा पैदा करते देख बड़े हताश हुए और अपने अपने घर लौट ग

इतनी बड़ी धूमधाम का यह फल! "बह्वारम्भे लघुक्रिया"।

८

१०

मिन्नत और प्रार्थना पर बड़ी दया आई। वह पुरस्कार पाने की आशा से उसके गले की हड्डी निकाल देने पर राजी होगया। भेड़िये ने अपना मुँह खोल दिया। तब बगले ने



उसमें अपनी लम्बी गर्दन डाल कर चोंच से हड्डी निकाल ली। इसके अनन्तर बगले ने भेड़िये से नम्रता के साथ कहा कि आपने जो इनाम देने का वादा किया था उसे पूरा कीजिए। भेड़िये ने दाँत कड़कड़ा कर गुस्से के साथ कहा—अरे अकृतज्ञ, मेरे मुँह के भीतर अपनी पूरी गर्दन डालकर भी तूने उसे बाहर निकाल लिया। यही पुरस्कार क्या तेरे लिए कम है। इसे अनुग्रह न मान कर तू और किस पुरस्कार की आशा रखता है! यदि अपना भला चाहे तो अब शीघ्र ही मेरे सामने से दूर हो, नहीं तो अभी तेरी गर्दन को दबा कर पुरस्कार पाने की प्रार्थना बन्द कर दूँगा। यह सुनकर बगला चुपचाप वहाँ से चला गया।

इतो भ्रष्टस्ततो भ्रष्ट

एक बकरी का बच्चा किसी गृहस्थ के घर के अन्दर बँधा हुआ था। उसने सिर उठाया और लोहे का सीकचा लगी हुई घर की खिड़की से देखा, एक भेड़िया उसी घर के समीप से चला जा रहा है। वह बकरी का बच्चा उस सुरक्षित स्थान में बिलकुल निडर था। इसलिए भेड़िये को देखते ही वह बड़े निडर

भी उसे डर लगा, किन्तु उस डर को उसने अपने मन में ही छिपा लिया। तीसरी

साहस किया। यह गाली गलौज तेरी नहीं, बल्कि उस स्थान की है जहाँ
बँधा है।

स्थान प्रधान न दम्भ धनम् ।

स्थान और समय की सुविधा से दुर्बल भी बलवान हो जाता है।

गिद्ध और शृगाली — कहानी ;

एक गिद्ध और एक सियाली बहुत समय से एक साथ बड़ी मित्रता से
थे। गिद्ध एक वृक्ष पर रहता था और सियाली उसी के नीचे, एक
में। एक दिन सियाली वन में चरने चली गई। गिद्ध ने देखा कि उसका एक छोटा सा
बच्चा घुसाली के बाहर खेल रहा है। गिद्ध से अपना लोभ न रोका जा सका।
चोंच मार कर सियाली के बच्चे को अपने घोंसले में उठा ले गया। वृक्ष के
सियाली कुछ न कर सकेगा, यह सोच कर वह निश्चिन्त होगया। सियाली ने घर
कर चारों तरफ बहुतेरा ढूँढा पर बच्चे का कुछ पता न चला। वह ताड़ गई कि
काम उसी गिद्ध का है। तब उसने उसकी विश्वास-घातकता का सूर

पहाड़ की प्रसव-वेदना — कहानी ९

एक बार एक पहाड़ से बादलों के गर्जन जैसा शब्द होने लगा। असह
शोषित हो उठा और
गृहस्थ के घर में घुस गई और चूल्हे में से एक जलता हुआ चैला मुँह में दाब कर
उठा लाई। अब वह उस वृक्ष में आग लगाने का उपाय करने लगी जिस पर कि
गाव रहता था। धुँआ और आग की लपटें देख कर गिद्ध अपने बच्चों के मर जाने
की आशङ्का से भयभीत होगया। वह शीघ्र ही सियाली को उसका बच्चा
लौटाकर उससे क्षमा माँगने लगा। क्षमा माँग कर उसने उससे फिर मैत्री कर ली।
एक छोटा सा चूहा पैदा करते देख वह हताश हुए और अपने अपने घर चले गए।

इतनी बड़ी धूमधाम का यह फल! "[illegible]

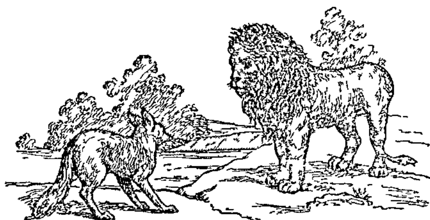
रिण का बच्चा और हरिणी ✢ ✢ ✢ कहानी १३

एक हरिण के बच्चे ने अपनी मा से एक दिन पूछा—मा, तुम कुत्ते से इतना क्यों डरती हो ? आकार में तुम कुत्ते से बड़ी हो, तुम्हारे पैने सींग हारे शरीर की रक्षा के लिए एक प्रकार के अद्भुत अस्त्र हैं और तुम बड़ी तेज़ी दौड़ती भी हो, इतने पर भी तुम कुत्ते से इतना क्यों डरती हो ? हरिणी हँसकर ही—बेटा, यह सब मैं जानती हूँ। किन्तु कुत्ते का भोंकना सुनते ही मेरा चित्त ाकुल हो उठता है और तब मेरे पैर दौड़े बिना एक जगह रुक नहीं सकते।

युक्ति और तर्क से डरनेवाला साहसी नहीं हो सकता।

ादड़ और सिंह ✢ ✢ ✢ कहानी १४

एक गीदड़ ने कभी शेर न देखा था। पहले पहल वह शेर को देख कर डर के मारे मुर्दा सा हो गया। जब दूसरा बार उसने शेर को देखा तब



ं उसे डर लगा, किन्तु उस डर को उसने अपने मन में ही छिपा लिया। तीसरी

यार के साक्षात् से उसे साहस हो आया। वह शेर के सामने जाकर बोला—राम राम सरकार, आप अच्छे तो हैं ?

बहुत परिचय होने से श्रद्धा कम हो जाती है।

बुढ़िया और उसकी मुरगी कहानी १८

एक बुढ़िया के एक मुरगा थी। वह रोज सवेरे एक अंडा दिया करती थी बुढ़िया ने सोचा—यदि मैं इसकी खूराक बढ़ा दूँ तो यह दिन में दो चार अंडे देने लगेगी। यह सोच कर वह मुरगी को खूब खिलाने पिलाने लगी। मुरगा खा पी कर खूब मस्त होगई और उसने अंडे देना एक दम बन्द कर दिया।



बहुत लाभ अच्छा नहीं।

एक बूढ़ा और कुत्ता कहानी १६

एक शिकारी के पास एक कुत्ता था। वह कुत्ता अपनी जवानी में खूब मजबूत था और शिकार के वक्त अपने मालिक की पूरी सहायता किया करता था। किन्तु इस समय बुढ़ापे के कारण वह निर्बल और बेकाम होगया था। एक रोज शिकार करने के लिए वन में जाकर कुत्ते ने एक हरिण को देखा। वह फौरन उस पर टूट पड़ा और पकड़ कर उसका गला धर दबाया। पर, अपने दाँतों की शिथिलता और शरीर के बल की कमी के कारण वह उस मजबूत हरिण को रोक न सका कुत्ते को छुड़ा कर हरिण भागा। यह देख शिकारी को कुत्ते पर बड़ा गुस्सा आया वह उसे खूब मारने और धिक्कारने लगा। तब कुत्ता बड़ी नरमी के साथ मालिक से बोला—प्रभो, अपने पुराने नौकर को कुछ क्षमा भी करो। इच्छा और उद्योग करने

में मैंने कुछ गलती नहीं की, शक्ति मेरी घट गई है, इसके लिए मैं क्या करूँ ? मेरी पुरानी दशा को याद करके इस नई दशा को क्षमा कर दीजिए।

घोड़ा और साईस ❊ ❊ ❊ कहानी १७

एक साईस अपने घोडे का दाना चुरा कर बेच देता था। पर रात दिन वह उसकी पीठ इसलिए मला करता था जिससे लोग समझें कि वह घोडे की खूब सेवा करता है। कम दाना मिलने से घोडा दिन दिन दुबला होता जाता



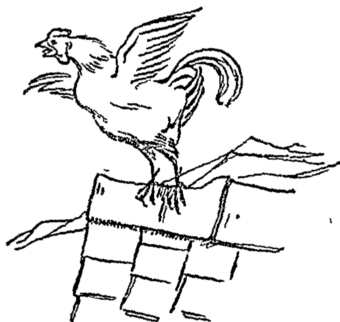
था। ऊपर से अधिक पीठ मली जाने के कारण दुःखी होकर वह एक दिन साईस से कहने लगा—भाई, 'यदि तुम सचमुच मेरी सेवा शुश्रूषा पर अधिक ध्यान रखते हो तो पीठ का मलना कम करके दाने का खूराक कुछ बढा दो।

रगा और शिकरा ❀ ❀ ❀ कहानी १८

कूड़ा करकट के एक धुस्स पर अधिकार रखने के लिए दो मुरगों में खूब युद्ध होता रहा। बहुत देर तक लड़ते रहने के बाद एक मुरगा घायल



होकर हार कर भागा और अपने घर के कोने में जा छिपा। जीतनेवाला मुरगा



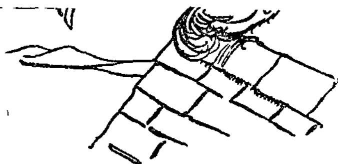
आनन्द और अहङ्कार में चूर होकर घर की छत पर जा बैठा और वहाँ से चिल्ला चिल्ला

कर अपनी जीत का डङ्का पीटने लगा। एक शिकरा उधर से आकाश में उड़ता जा





। चूहा अपने नये मित्र से बड़ा प्रसन्न हुआ।



रहा था। वह मुरगे की चिल्लाहट सुनकर उस पर टूट पड़ा और चोंच मार कर

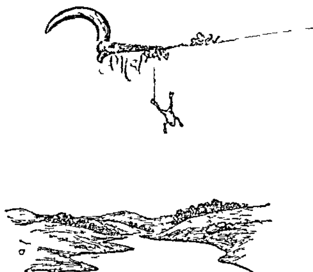
उसके जाल में आकर न फँसी। इस पर उसे बडा क्रोध आया। उसने अपना जाल लगाया और जाल भर मछलियाँ पकड लीं। मछलियाँ बाहर आकर तडफडाने लगीं। यह देखकर वह मल्लाह बोला—मेरी बाँसुरी की तान से जब तुम नहीं नाचीं, तब अब मैं तुम्हारा यह बेढगा नाच नहीं देखना चाहता।

ताल के अनुसार काम करना बुद्धिमानी है।

चूहा और मेढक   कहानी २१

विपत्ति में पड कर एक चूहे ने एक मेढक से दोस्ती की। दोनों दोस्त मिल कर जीविका के लिए विदेश को रवाना हुए। मेढक बोला—भाई, लाओ

ठक्कर कुत्ते ने जल में अपनी परछाईं देखी। उसने सोचा।



एक साथ रह सकेंगे और मैं तुम्हारी हर तरह रक्षा कर सकूँगा। चूहा अपने नये मित्र के प्रेम से बडा प्रसन्न हुआ। वह मेढक की बात पर एकदम राजी हो गया। इस तरह एक में कमर बाँधे हुए दोनों जब चले जाते थे तब रास्ते में एक जगह पानी देख पडा। चूहा डर कर मेढक से बोला—भैया, पानी को कैसे पार कर सकेंगे? इतने ही में मेढक चूहे को खींचता हुआ एक छलाँग में पानी के भीतर जा पडा। वह चूहे से कहने लगा—भाई,

रना मत, हाथ-पैर फैलाकर तैरने लगो। तैरना न जानते हो तो मेरी पीठ पर चढ़ जाओ, मैं तुमको अच्छी तरह पार कर दूँगा। बीच में जाकर मेढक टप से पानी के भीतर चला गया और चूहे को भी अन्दर खींचने लगा। मेढक समझता था कि मैं अपने दोस्त के साथ खूब तमाशा कर रहा हूँ पर, इधर चूहे के प्राण ओठों तक पहुँच गये थे। वह छटपटाने लगा। उसकी कमर मेढक की कमर के साथ बँधी थी, दोनों में खूब खींचा-तानी होने लगी। खींचा-तानी होते समय वहाँ का जल उछलने लगा। एक चील्ह की नजर फौरन उन पर जा पड़ी वह चोंच मार कर चूहे को ऊपर उठा ले गई, कमर से बँधे मेढकराम भी साथ ही साथ चले गये।

गने स साप जा उठा। अपना फन निकाल कर उसने किसान के बच्चों को डसना चाहा। इस पर किसान न कुल्हाडो स उसके दो टुकडे कर उसे मार डाला।

उसने कहा—मैंने जैसे

मनुष्य और [illegible]

कहानी २२

एक तरह के माने हुए जीवों का नाम किन्नर है। उनका मुँह घोड़े की तरह और धड़ आदमी जैसा होता है। ये लोग पहाड़ में रहते हैं और गाने बजाने में बड़े उस्ताद होते हैं। पुराणों में इनका वर्णन ऐसा ही पाया जाता है।

एक बार एक मनुष्य के साथ एक किन्नर की दोस्ती होगई। मनुष्य ने एक रोज किन्नर को अपने घर भोजन के लिए बुलाया। किन्नर आया। एक तो पहाड़ी देश, दूसरे सरदी का मौसम, ठण्ढ से मनुष्य का हाथ जकड़ गया था। मनुष्य अपने हाथ में फूँक मारने लगा। किन्नर ने पूछा—भाई, यह क्या करते हो? मनुष्य ने जवाब दिया—जरा हाथ को गरम किये लेते हैं। इसके बाद खाना परोसा गया। खाना बहुत गरमागरम था। खाने की थाली मुँह के पास ले जा कर मनुष्य उसमें फूँक देने लगा। किन्नर फिर पूछने लगा—भाई, अब फिर यह

क्या कर रहे हो ? मनुष्य बोला, खाना बहुत गरम है, इसे जरा ठण्डा किये लेता हूँ। यह सुनते ही कि र भोजन छोड़ कर उठ खड़ा हुआ और कहने लगा—जो लोग एक मुँह दो बात कहते हैं उनके साथ मेरी दोस्ती का कोई काम नहीं।

कुत्ता श्रौ

छुड़ा दिया। तब शेर समझ गया कि किया हुआ उपकार कभी व्यर्थ

एक कुत्ता मांस की दूकान से मांस का एक टुकड़ा लिये जा रहा था। घर जाते समय रास्ते में उसे छोटी सी नदी मिली। नदी के किनारे खड़े होकर कुत्ते ने जल में अपनी परछाईं देखी। उसने सोचा कि एक और कुत्ता जल



में मांस का टुकड़ा लिये चला जा रहा है। वह उस टुकड़े को छुड़ा लेने के लिए ज्योंही मुँह खोल कर अपनी छाया की ओर दौड़ा त्योंही उसके मुँह से मांस

साहस किया। यह गाली गलौज तेरी नहीं, बल्कि उस स्थान की है जहाँ तू
बैंधा है।

स्थान प्रधान न बलप्रधानम्।

स्थान और समय की सुविधा से दुर्बल भी बलवान हो जाता है।

गिद्ध और शृगाली — कहानी १२

एक गिद्ध और एक सियाली बहुत समय से एक साथ बड़ी मित्रता से रहते थे। गिद्ध एक वृक्ष पर रहता था और सियाली उसी के नीचे, एक खोह में। एक दिन सियाली वन में चरने चली गई। गिद्ध ने देखा कि उसका एक छोटा सा बच्चा घुमाली के बाहर खेल रहा है। गिद्ध से अपना लोभ न रोका जा सका। वह चोंच मार कर सियाली के बच्चे को अपने घोंसले में उठा ले गया। वृक्ष के ऊपर सियाली कुछ न कर सकेगी, यह सोच कर वह निश्चिन्त होगया। सियाली ने घर लौट कर चारों तरफ बहुतेरा ढूँढा पर बच्चे का कुछ पता न चला। वह ताड़ गई कि यह काम उसी गिद्ध का है। तब उसने उसकी विश्वासघातकता का खूब तिरस्कार

पहाड की प्रसव वेदना — कहानी ९

एक बार एक पहाड से बादलों के गर्जने जैसा शब्द होने लगा। असल

गृहस्थ के घर में घुस गई और चूल्हे में से एक जलता हुआ चैला मुँह में दाब कर उठा लाई। अब वह उस वृक्ष में आग लगाने का उपाय करने लगी जिस पर वि... बाँध रक्खा था। धुँआ और आग की लपटें देख कर गिद्ध अपने बच्चों के मर जा... से भयभीत होगया। वह शीघ्र ही सियाली को उसका बच्चा... उससे क्षमा माँगने लगा। क्षमा माँग कर उसने उससे फिर मैत्री कर ली
... पैदा करते देख बड़े हताश हुए और अपने अपने घर लौट गये।

इतनी बड़ी धूमधाम का यह फल! "बह्वारम्भे लघुक्रिया"।

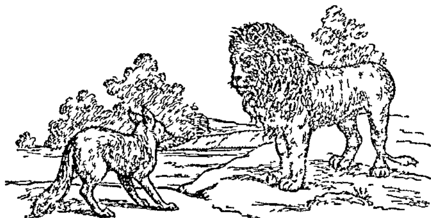
हरिण का बच्चा और हरिणी    कहानी १३

एक हरिण के बच्चे ने अपनी मा से एक दिन पूछा—मा, तुम कुत्ते से इतना क्यों डरती हो ? आकार में तुम कुत्ते से बड़ी हो, तुम्हारे पैने सींग तुम्हारे शरीर की रक्षा के लिए एक प्रकार के अद्भुत अस्त्र हैं और तुम बड़ी तेजी से दौड़ती भी हो, इतने पर भी तुम कुत्ते से इतना क्यो डरती हो ? हरिणी हँसकर बोली—बेटा, यह सब मैं जानती हूँ। किन्तु कुत्ते का भोंकना सुनते ही मेरा चित्त व्याकुल हो उठता है और तब मेरे पैर दौड़े बिना एक जगह रुक नहीं सकते।

युक्ति और तर्क से डरनेवाला साहसी नहीं हो सकता।

गीदड़ और सिंह    कहानी १४

एक गीदड़ ने कभी शेर न देखा था। पहले पहल वह शेर को देख कर डर के मारे मुर्दा सा हो गया। जब दूसरा बार उसने शेर को देखा तब



भी उसे डर लगा, किन्तु  उसने अपने मन में ही छिपा लिया। तीसरी

र के साक्षात् से उसे साहस हो आया। वह शेर के सामने आकर बोला—राम :
राम सरकार, आप अच्छे तो हैं ?

बहुत परिचय होने से श्रद्धा कम हो जाती है।

बुढ़िया और उसकी मुरगी — — — कहानी १५

एक बुढ़िया के एक मुरगी थी। वह रोज सबेरे एक अंडा दिया करती थी। बुढ़िया ने सोचा—यदि मैं इसकी खुराक बढ़ा दूँ तो यह दिन में दो चार अंडे देने लगे। यह सोच कर वह मुरगी को खूब खिलाने पिलाने लगी। मुरगी खा-पी कर खूब मस्त होगई और उसने अंडे देना एक दम बन्द कर दिया।



बहुत लोभ अच्छा नहीं।

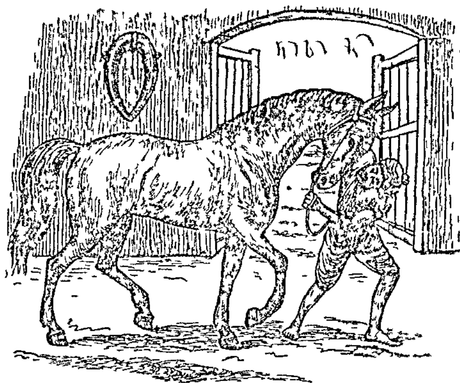
एक बूढ़ा और कुत्ता — — — कहानी १६

एक शिकारी के पास एक कुत्ता था। वह कुत्ता अपनी जवानी में खूब मजबूत था और शिकार के वक्त अपने मालिक की पूरी सहायता किया करता था। किन्तु इस समय बुढ़ापे के कारण वह निर्बल और बेकाम होगया था। एक रोज शिकार करने के लिए वन में जाकर कुत्ते ने एक हरिण को देखा। वह फौरन उस पर टूट पड़ा और पकड़ कर उसका गला धर दबाया। पर, अपने दाँतों की शिथिलता और शरीर के बल की कमी के कारण वह उस मजबूत हरिण को रोक न सका। कुत्ते को छुड़ा कर हरिण भागा। यह देख शिकारी को कुत्ते पर बड़ा गुस्सा आया। वह उसे खूब मारने और धिक्कारने लगा। तब कुत्ता बड़ा नरमी के साथ मालिक से बोला—प्रभो, अपने पुराने नौकर को कुछ क्षमा भी करो। इच्छा और उद्योग करने

में मैंने कुछ गलती नहीं की, शक्ति मेरी घट गई है, इसके लिए मैं क्या करूँ ? मेरी पुरानी दशा को याद करके इस नई दशा को क्षमा कर दीजिए।

घोड़ा और साईस ❋ ❋ ❋ कहानी १७

एक साईस अपने घोड़े का दाना चुरा कर बेच देता था। पर रात दिन वह उसकी पीठ इसलिए मला करता था जिससे लोग समझें कि वह घोड़े की खूब सेवा करता है। कम दाना मिलने से घोड़ा दिन दिन दुबला होता जाता



था। ऊपर से अधिक पीठ मली जाने के कारण दुःखी होकर वह एक दिन साईस से कहने लगा—भाई,'यदि तुम सचमुच मेरी सेवा शुश्रूषा पर अधिक ध्यान रखते हो तो पीठ का मलना कम ... की खूराक कुछ बढ़ा दो।

रगा और शिकरा    कहानी १८

कूड़ा करकट के एक धुस्स पर अधिकार रखने के लिए दो मुरगों में खूब युद्ध होता रहा। बहुत देर तक लड़ते रहने के बाद एक मुरगा घायल





होकर हार कर भागा और अपने घर के कोने में जा छिपा। जीतनेवाला मुरगा

आनन्द और अहङ्कार में चूर होकर घर की छत पर जा बैठा और वह

डरना मत, हाथ-पैर फैलाकर तैरने लगो। तैरना न जानते हो तो मेरी पीठ पर चढ़ आओ, मैं तुमको अच्छी तरह पार कर दूँगा। बीच में जाकर मेढक टप से पानी के भीतर चला गया और चूहे को भी अन्दर खींचने लगा। मेढक समझता था कि मैं अपने दोस्त के साथ खूब तमाशा कर रहा हूँ पर, इधर चूहे के प्राण ओठों तक पहुँच गये थे। वह छटपटाने लगा। उसकी कमर मेढक की कमर के साथ बँधी थी, दोनों में खूब खींचा-तानी होने लगी। खींचा-तानी होने के लिए वहाँ का जल उछलने लगा। एक चील्ह की नजर फौरन उन पर।

चन्द्रमा और उसकी माता

कहानी १

एक रोज चन्द्रमा अपनी माता से बोला—मैया, मेरे शरीर के पूरे ब्योंत का मुझे एक जामा बनवा दे। उसकी माँ हँसकर बोली—बेटा, तुम्हारे शरीर के ब्योंत का जामा कैसे सिलवा सकूँगा? तुम रोज बदलते रहते हो, कभी पूर्ण चन्द्र, कभी आधे और कभी बिलकुल ही नजर नहीं आते। रोज ही तुम्हारी घटती बढ़ती लगी रहती है। तुम्हारे शरीर का ब्योंत कैसे ठीक कर सकूँगा!

जो लोग अपनी बुद्धि को स्थिर नहीं रखते उनको पहचान लेना बड़ा कठिन काम है।

बाघ और भेड़ का बच्चा

कहानी

एक बाघ एक दिन झरने में पानी पी रहा था। झरने के नीचे की ओर जाकर एक भेड़ का बच्चा भी पानी पीने लगा। उसको देख बाघ ने निश्चय कर लिया कि इसे मार कर खा जाऊँ। पर, बिना किसी अपराध किसी को भी मारना ठीक नहीं। अतएव एक अपराध लगाकर बाघ ने अपने व्यवहार को न्याय-सङ्गत दिखलाना चाहा। वह मेमने के पास गया और गुस्से से लाल आँखें करके डपट कर बोला—बदमाश कहीं का! तू मेरे पानी को किस पर गँदला कर रहा है? भेड़ का बच्चा डर कर बड़ी नरमी के साथ कहने लगा हुजूर, मैंने आपका जल कैसे गँदला किया। जल का धार आपकी तरफ से

चाहा। उसने कहा—पतली पतली लकड़ियों की एक छोटी सी गड्डी उठा लाओ। वे जब गड्डा ले आये तब उसने चारों बारी बारी से प्रत्येक लड़के से कहा कि इस गड्डे को तोड़ डालो। उन सबने एक एक करके उस गड्डे को तोड़ने के लिए बहुतेरा जोर लगाया पर कोई तोड़ न सका। तब उनके पिता ने, गड्डा खोल डाला और



उसमें से एक एक लकड़ी सबके हाथ में अलग अलग दे दी। लकड़ियाँ देकर उसने उन्हें तोड़ने को कहा। तब उन्होंने सहज में ही अपनी अपनी लकड़ी तोड़ डाली। इस पर गृहस्थ अपने लड़कों से बोला—देखो बेटा, जब तक तुम लोग आपस में प्रीतिपूर्वक रह कर एक दूसरे की सहायता करोगे तब तक शत्रु तुम्हारा

कुछ भी न कर सकेगा। और ज्योंही तुम अलग अलग हुए कि शत्रु सहज में ही तुम्हारा नाश कर डालेगा।

एकता ही बल है।

अल्पानामपि वस्तूनां संहति कार्य्यसाधिका।
तृणैर्गुणत्वमापन्नैर्बध्यन्ते मत्तदन्तिन ॥

29

छोटी छोटी वस्तुओं में एकता होने से बड़ा बल आ जाता है। घास को इकट्ठा कर रस्सी बनाने से उसके द्वारा हाथी भी बाधा जा सकता है।

देहाती चूहा और शहरी चूहा   कहानी ४१

देहाती चूहे का एक पुराना मित्र गाँव छोडकर शहर में रहने लगा था। गाँव के चूहे ने अपनी पुरानी मित्रता का स्मरण करके उसे अपने घर भोजन के लिए बुलाया। गाँव मे आने के कारण शहरवाले को कुछ कष्ट न हो, इस विचार स गांव का चूहा शहर के चूह के आदर-सम्मान का पूरी तैयारी करने लगा। खेत से पके हुए अन्न के दाने, कच्चे जौ की बालियाँ, चने का हाला, बडे बडे मटर, कुछ शाक-पात और कुछ गुड लाकर वह अपने मित्र को भोजन कराने लगा। पर, शहरी चूहे का मन किसी प्रकार भी तृप्त न हुआ। अन्त म शहरी चूहा अपने ग्रामीण मित्र से बोला— भाई, तुम ये बुरी बुरी चीजें खाकर कैसे जीवन बिताते हो? तुम्हारा यह दु ख-पूर्ण जीवन देख कर मुझे बडा खेद होता है। शास्त्रों में भी कहा है—यावज्जीवेत् सुख जीवेत्। जब तक जिये, सुख से रहे। जीवन कुछ सदा थोडे रहेगा। इस थोडे से समय के जीवन को तुम इस बुरे छोटे से गाँव मे पडे हुए दुख के साथ क्यों बिता रहे हो? नहीं भैया, अब मैं तुमको यहाँ और न रहने दूँगा। तुम मेरे साथ शहर चलो, शहर के सुख शान्ति में तुम्हें बडा आनन्द मिलेगा। ग्रामीण चूहा शहरी मित्र के आग्रह और शहर के सुख के लोभ से शहर जाने को तैयार हो गया। जब वे शहर मे पहुँचे तब घोडों की टापों की आवाज, गाडियों की दडघडाहट और मनुष्यों की चिल्लाहट से गाँव का चूहा एक दम डर गया। शहरी चूहा उसको समझा-बुझा

कर और ढाढस बँधा कर बड़े यत्न के साथ ले जाने लगा। गलियाँ, कूचे मोरियाँ आदि पार करके वे एक मकान में होते हुए एक बड़ी भारी अट्टालिका में पहुँचे। शहरी चूहा बड़े घमण्ड से बोला—भाई, यही मेरा घर है। अब स तुम्हारा भी घर हुआ। इसमें तुम अब जहाँ चाहो घूमो, फिरो और रहो। ग्रामीण चूहा एक गुदगुदे कोच पर कूदने लगा। उसके कूदते ही कोच में हुई गद्दी नीचे दब गई। बेचारे ने समझा, कोच टूट गया। अब उसके प्राण में नहीं। घर में एक बड़ा भारी आईना लगा हुआ था। उसी में उसने घर की देखी। छाया देख कर वह उस ओर दौड़ा। दौड़ते ही बेचारे का आईने से टकरा गया। इन बातों से ग्रामीण चूहा बड़ा दुखी होने लगा। इ बाद शहराती चूहा उसे भण्डार के भीतर ले गया। वहाँ ले जाकर वह उसे बरफ़ी, मोहनभोग आदि तरह तरह की मिठाइयाँ और बादाम, किसमिस, पि आदि तरह तरह के मेवे खिलाने लगा। वह बेचारा अभी खा ही रहा था, कि एक आ वहाँ आ पहुँचा। उसको देख कर शहरवाला चूहा बोला—भाई, शीघ्र ही दौड़ इस बिल में घुस आओ। बेचारा दौड़ कर बिल में जा घुसा। दूसरी बार आकर जब वह खाने लगा तब भी उसकी छाती धड़क रही थी। इसी समय ब से फिर किसी के बोलने की आवाज सुन पड़ी और शहर के चूहे की आज्ञा से उसे बिल में छिपना पड़ा। कोठार के भीतर ही चूहेदानी रक्खी थी, गाँववाला उसी में जाकर छिपने लगा। तब शहर के चूहे ने उसे सावधान करके कहा— इस पिंजड़े के आस-पास कभी न फटकना। यह हम लोगों के फँसाने ही के लिए रक्खा गया है। तब देहाती चूहा बोला—तुम इतना डरते डरते यहाँ कैसे हो? मेरे तो इस थोड़े ही समय में प्राण धुकुड़-पुकुड़ होने लगे। शहर के चू कहा—सच है, यहाँ कुछ डरते डरते रहना पड़ता है किन्तु यहाँ सुख कितना ग्रामीण चूहा बोला—भाई, इस सुख को तुम्हीं भोगो। मैं अपने ग्रा स्थान पर ही जाकर सुख शान्ति से रह सकूँगा। चिन्ता और भय के

बोला—हाँ, दिन के वक्त में बँधा रहता हूँ, पर इससे क्या ? रात को तो मुझे सब तरह स्वाधीनता है, और दिन को भी मुझे नौकर-चाकर, मेरी साँकल पकड़ कर, इधर-उधर घुमाने फिराने ले जाते हैं। मैं कभी कभी मालिक के साथ भी घूमने फिरने जाता हूँ। सभी मेरा आदर-सम्मान करते हैं। यह क्या ? तुम किधर चल पड़े ! भेड़िया बोला—भाई, तुम्हारा आदर सम्मान तुम्हें ही रहे। साँकल से बँधे रह कर राजभोग करने की अपेक्षा स्वाधीनता पूर्वक रह कर भोजन का क्लेश उठाना अच्छा है। मैं अपने जङ्गल को लौट चला—राम राम।

बाघ और कुत्ता

कहानी ४१

एक बाघ ने एक कुत्ते को साँकल में बँधा देखकर उससे पूछा—भाई, तुम्हारी ऐसी दुर्गति क्यों हो रही है ? कुत्ता बोला—हुजूर, वे मुझे खूब खाने को भी देते हैं। बाघ ने कहा—तुम्हारी जैसी दशा शत्रु की भी न हो। बँधे रहने पर भूख-प्यास तो पहले ही भाग जाती है—तब खाना मिला तो क्या, और न मिला तो क्या। एक ही बात है।

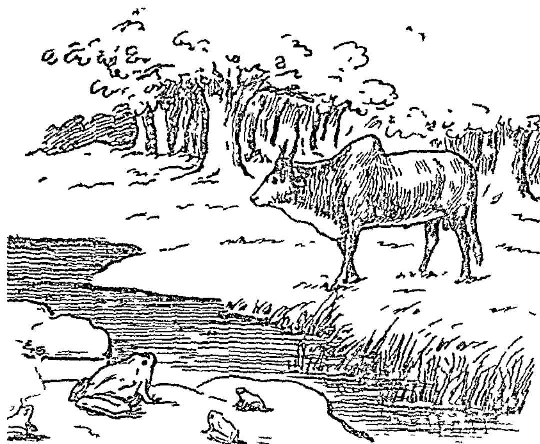
मेढक और साँड

कहानी ४२

एक साँड जल की धारा में पानी पीने गया। वहाँ मेढक के बच्चों के झुण्ड पर उसका पैर पड़ने से प्राय सबके सब कुचल गये। एक बच्चा उनमें से किसी तरह बच गया। वह दौड़कर अपनी मा के पास गया और यह बुरा समाचार सुना कर उससे बोला—मा ए मा, वह एक बड़ा भारी चौपाया जानवर है। उसका पैर पड़ते ही सबके सब मर गये। आह, कितना भारी जानवर है। मेढकी बोली—बड़ा भारी जानवर। कितना बड़ा ? इतना बड़ा। यह कह कर उसने अपनी देह फैलाई। बच्चे ने कहा—नहीं मा, नहीं, वह तुमसे बहुत बड़ा है। बच्चे की मा अपना सारा

ारीर बड़ी ताकत से फैला कर फिर बोली—क्यों, इतना बड़ा ? बच्चा मेंढक बोला—
ा, तुम फूलती फूलती फट भी जाओ तो भी तुम उसके आधे शरीर के बराबर भी



नहीं हो सकतीं। इस बात से गुस्से में आकर मेंढकी ने ज्यों ही अपना शरीर और फैलाया त्यों ही उसका पेट फट गया।

असम्भव के करने की चेष्टा करने से मर मिटना पड़ता है।

जिसका जो काम है उसी को वह अच्छा लगता है। दूसरे को उससे हानि के सिवा लाभ नहीं।

खच्चर

कहानी ४७

एक खच्चर बँधा बँधा खूब दाना घास खाया करता था। उससे कुछ काम न लिया जाता था। इस कारण वह मोटा ताजा हो गया था। अधिक फुर्ती आ जाने से वह खूब उछल कूद करता और दौड़ता था। आनन्द से एक रोज वह सिर उठा कर बोला—मेरी माता घुड़दौड़ की घोड़ी थी। मैं भी अपनी मा का बच्चा हूँ। क्यों न ऐसा होऊँ। पर, थोड़ा देर के बाद ही थक कर और न चल पाया। तब उसके मन में आया—मेरी माता घुड़दौड़ की घोड़ी थी, इससे क्या हुआ, बाप तो एक मामूली गदहा था।

प्रत्येक सत्य के दो छोर होते हैं। दोनो छोरों की ओर विचार किये बिना एक को ओर झुक पड़ना मूर्खता है।

केंकड़ी और उसका बच्चा

कहानी ४८

एक केंकड़ा ने अपने बच्चे से कहा—ऐसा टेढ़ा होकर क्या चलता है? सीधे होकर चलना सीखो। बच्चा बोला—मा, तुम पहले चल कर दिखला दो, मैं तुम्हें देख कर सीख जाऊँगा।

उपदेश देने से नमूना दिखला देना अच्छा है।

कछुआ और उकाब

कहानी ४९

एक कछुआ प्रतिदिन पक्षियों को आकाश में उड़ते देखकर अपनी असमर्थता पर बड़ा दुःखी और लज्जित हुआ करता था। वह सोचता था कि एक बार यदि मैं आकाश में चढ़ जाऊँ तो फिर पक्षियों की तरह हमेशा उड़ने लगूँ। जल में तैर सकता हूँ तो हवा में क्या न तैर सकूँगा। यह निश्चय कर एक दिन वह एक उकाब से

बीमार हरिण · · · कहानी ५४

एक हरिण बीमार पड़ा। उसके अच्छे बर्ताव के कारण जङ्गल के और और सभी जानवर उस पर बहुत प्रसन्न थे। इस कारण वे सब हरिण को रोज देखने आते और उसके खाने की घास में एक एक मुँह लगा जाते। हरिण, बीमारी से अच्छा होकर भी, कुछ खाना न मिलने के कारण मर गया।

अबोध मित्र भले काम की अपेक्षा बुरा ही अधिक करते हैं।

मुरगी और बिल्ली · · · कहानी ५५

मुरगी के बीमार होने की खबर पाकर बिल्ली उसे देखने गई। वह बोली—अब कैसी हो बहिन? तुझे जो कुछ चाहिए, मुझसे कह, मैं दुनिया भर से वह चीज खोज कर तेरे लिए ला दूँगी। मेरे रहते तू कोई चिन्ता मत कर। मुरगी बोली—बहिन, तेरे रहने ही से मुझे चिन्ता है। तू मेरे पास न आवे, तभी मैं सुख से रह सकती हूँ।

बिना बुलाया अतिथि चला जाय, तभी अच्छा है।

लड़ाई झगड़ा और बीच बचाव · · · कहानी ५६

छोटी छोटी दो मछलियों में घोर युद्ध होने लगा। यह देख कर एक बड़ी मछली उनमें बीच-बचाव करने की चेष्टा करने लगी। तब छोटी मछली में से एक मछली बड़ी मछली से बोली—दूर हट, तेरे बीच-बचाव करने से शान्त होने की अपेक्षा हमारा परस्पर लड़ते लड़ते मर जाना अच्छा है।

गीदड़ और बनावटी सिर · · · कहानी ५७

एक गीदड़ एक नट के घर में जा घुसा। वह नट के सारे माल-असबाब को इधर उधर करने लगा। इतने ही में उसे एक सुन्दर बनावटी सिर

मिल गया। सिर को देख कर वह बोला—वाह, कैसा उमदा सिर है। यदि इसमें मगज होता तो क्या कहना था।

बाहर की चटक मटक की अपेक्षा भीतर का सारयुक्त होना अच्छा है।

गीदड़ और लकड़हारा

कहानी १८

शिकारी के कुत्ते की झपट में डर कर एक गीदड़ बहुत दूर से दौड़ता दौड़ता एक लकड़हारे के पास जा पहुँचा। उसने लकड़हारे से अपने छिपने लायक स्थान पूछा। लकड़हारे ने उसे अपना घर दिखला दिया। उस घर में जाकर गीदड़ एक कोने में छिप रहा। इतने ही में शिकारी अपने कुत्ते के साथ वहाँ आ पहुँचा और लकड़हारे से पूछने लगा—तूने इस ओर गीदड़ को आते देखा है? लकड़हारा मुँह से तो कहने लगा—नहीं। पर उँगली के



इशारे से वह बार बार गीदड के छिपने का स्थान दिखाने लगा। शिकारी ने उसका इशारा न समझ कर उसकी बात पर विश्वास कर लिया और वहाँ से चला गया। जब गीदड ने देखा, शिकारी नजर की ओट हो गया तब वह अपने छिपने की जगह से बाहर निकला। बाहर निकल कर वह निर्भय हो गया और वहाँ से जाने लगा। यह देख कर लकडहारा तिरस्कार के साथ उससे कहने लगा—यह कैसा कृतघ्न जीव है! जिसने इसके प्राणों की रक्षा की उसे जरा सा धन्यवाद भी न दिया। गीदड ने जाते जाते मुँह फिरा कर कहा, तुमने मेरे बचाने की पूरी चेष्टा की, इसमें सन्देह नहीं। तुम्हारी उँगली भी यदि तुम्हारे मुँह जैसा ही सरल व्यवहार करती तो मैं विदा माँगे बिना तुम्हारे पास से न जाता।

बात चीत और काम-काज में समता होनी चाहिए। एक बात से जितना बुरा हो सकता है, उतना ही इशारे से भी हो सकता है।

कौआ और घड़ा ✢ ✢ ✢ कहानी ५८

एक प्यासा कौआ इधर-उधर उडकर एक घडे के पास पहुँचा। जल मिल जाने की आशा से वह बडी खुशी के साथ घडे के मुँह पर जा बैठा। घडे के मुँह पर बैठ कर उसने देखा कि पानी है तो परन्तु घडे की तली में है। तब वह उतावला होकर घडे के उलटाने और फोडने की अनेक चेष्टायें करता रहा पर एक में भी सफल न हुआ। अन्त में उसे एक हिकमत सूझ पडी। उसी स्थान पर कितने ही कंकड पडे थे। वह उन्हें चोंच से उठा उठाकर लगातार घडे में डालने लगा।



घड़े में कंकड़ पहुँचने से उसका जल ऊपर आ गया। तब कौए ने सहज ही अपनी प्यास बुझा ली और अपना प्राण बचाया।

जोर लगाने की अपेक्षा उपाय करना बढ़कर है।
अभाव ही नये आविष्कार का पैदा करनेवाला है।
कार्य के रुकने पर बुद्धि काम देती है।

दो बटोही और भालू

कहानी ६९

दो मित्र एक साथ राह में जा रहे थे। जाते जाते एक भालू उनके सामने आया। भालू को देखते ही उनमें से एक तो बिना कुछ इधर-उधर



किये, उचक कर दरख्त पर चढ़ गया। उसने यह जरा भी न सोचा कि मेरे मित्र का क्या दशा होगा। दूसरा डर के मारे कुछ भी सोच विचार न कर मुर्दे की तरह जमीन पर लेट रहा। उसने सुन रक्खा था कि भालू मुर्दे को नहीं छूता। उसके

मीन पर इस तरह लेट रहने पर भालू वहा आया। और उसके मुँह, नाक, कान ार छाती मे मुँह लगा कर परीक्षा करने लगा। वह आदमी साँस रोक कर लिकुल चुपचाप पडा था। इसलिए भालू उसे मुर्दा समझ कर वहाँ से चला गया। लू के दूर चले जाने पर वृक्ष पर चढा हुआ आदमी नीचे उतरा और अपने बुरे यवहार को हँसी मे उडा देने के लिए अपने मित्र से कहने लगा—भाई, भालू न म्हारे कान के पास मुँह लगा कर धीरे धीरे क्या कहा था? दूसरे ने उत्तर दिया—ाई, वह मुझे उपदेश दे गया है कि जो मित्र विपत्ति के समय मित्र को छोड कर ाग जाय उसके साथ भविष्यत् में बडा होशियारी से बात-चीत और व्यवहार रना।

ाना हरिण    कहानी ६१

एक काना हरिण समुद्र के तीर के सिवा और कहीं चरने न जाता था। वह सोचता था कि मैदान में बडा भय है, शिकारी कुत्ते और कितनी



ही विपत्तियाँ मेरे प्राणों की गाहक हैं। पर, जल के किनारे किसी प्रकार की

विपत्ति नहीं आ सकती। इसी से वह राज समुद्र के किनारे चरने जाया करता और जल की ओर फूटी आंख करके अच्छी आंख को स्थल की ओर किये रहता था। इसका कारण यह था कि स्थल की ओर से यदि कोई विपत्ति आती होगी तो वह देख कर मैं सचेत हो जाऊँगा। एक दिन नाव पर कुछ मल्लाह जा रहे थे। उन्होंने हरिण को देख कर उस पर गोली चलाई। गोली लगने से जब वह मरने लगा तब यह कहता गया—मैं बड़ा अभागा हूँ। जिस ओर से मैंने विपत्ति की आशङ्का की थी, उस ओर से तो कुछ न हुआ किन्तु जिस ओर से मुझे किसी प्रकार की चिन्ता न थी उसी ओर से यह विपत्ति आई और मेरे प्राण गये।

विपत्ति अज्ञात रूप में ही आती है।

पेट और शरीर के दूसरे अङ्ग

कहानी ६९

एक बार मनुष्य के पेट और शरीर के अन्यान्य अङ्गों में खूब वाद विवाद होने लगा। अङ्गों के असन्तुष्ट होने का कारण यह था कि वे रात दिन परिश्रम करके थक जाते हैं और पेट चुप-चाप बैठा बैठा मजे में उनके परिश्रम का फल भोगता है। सब अङ्गों ने निश्चय कर लिया कि वे अब आलसी पेट को यों ही पालन-पोषण न करेंगे। यह निश्चय करके उन्होंने हड़ताल कर दी। हाथ अब मुँह में खाना नहीं पहुँचाता, मुँह भोजन नहीं ग्रहण करता, जीभ और दाँत भोजन को गले से नीचे उतारने में सहायता नहीं देते। पर पेट को इस प्रकार तङ्ग करने पर वे खुद ही थोड़े दिनों में सूख-साख कर शक्तिहीन बन गये। अब उन्हें मालूम हुआ कि पेट बाहर से जैसा आलसी और बोझ की तरह मालूम होता है वैसा वह भीतर से नहीं, वह बहुत कुछ करता है। जैसे अन्यान्य अङ्गों के न होने से पेट का काम नहीं चल सकता उसी तरह पेट के न होने से अन्यान्य अङ्गों का भी काम नहीं चल सकता। उन सबको परस्पर की सहायता की जरूरत है। सा

शरीर को बलवान् और नीरोग बनाये रखने के लिए सभी को अपना अपना व करना चाहिए। सारे शरीर का जिससे कल्याण होता है उसी से हर एक अङ्ग भी कल्याण हो सकता है।

धोबी और कोयलेवाला    कहानी

एक कोयलेवाले के घर मे एक कमरा खाली हुआ। उसने कमरे को किर पर उठाने के इरादे से एक धोबी को उसमे रहने के लिए कहा। धो बोला—नहीं भाई तुम्हारी बात मानना मेरे लिए असम्भव है। मैं जो सफेद करूँग उसे तुम कोयले की फटकार से एक-दम काला कर दोगे।

बराबरीवाले म ही प्रेम होता है।

शेर, गदहा और गीदड का शिकार    कहानी ६८

शेर, गदहा और गीदड, तीनों एक दूसरे की सहायता देने का वादा करके वन मे शिकार खेलने चले। शिकार जब खेल चुके तब शिकार मे पाये हुए मांस का बटवारा होने लगा। शेर ने बाँटने का काम गदहे को सौंपा। गदहे ने बराबर बराबर तीन भाग कर दिये। फिर वह पूछने लगा कि कौन सा भाग किसके हिस्से में आया। इस पर शेर ने गुस्से मे आकर गदहे के टुकडे टुकडे कर डाले। अब उसने गीदड से मांस का हिस्सा करने को कहा। इस पर गीदड ने शेर के हिस्से में सब मांस रख दिया और अपने लिए बहुत ही थोड़ा सा लिया। यह देख शेर बोला—वाह भाई, तुमने ऐसा वाजिब हिस्सा करना कहाँ से

गीदड बोला—सीखने के लिए मुझे दूर नहीं जाना पडा। अपनी आँखों गदहे का हालत देखकर मुझे पूरी शिक्षा मिल गई।

> बुद्धिमान् दूसरे पर पडी हुई विपत्ति से ही शिक्षा ग्रहण कर सकता है।
> ठगा कर सीखने की अपेक्षा देख कर सीखना अच्छा है।

आदमी और शेर

कहानी ६५

एक आदमी और एक शेर दोनों में जान-पहचान हो गई। वे दोनों रास्ते में जा रहे थे, अनेक प्रकार की बात चीत के बाद उनमें एक बात पर बहस होने लगा—शेर और मनुष्य दोनों जातियों में कौन अधिक बलवान् है? मनुष्य बोला—मैं शेर बोला—मैं। जब विवाद बहुत बढ गया तब चलते चलते उन्हें एक मूर्ति देख पडी। मूर्ति में शेर को एक मनुष्य मार रहा था। मनुष्य बोला—देख शेर, मनुष्य की वीरता का यह प्रत्यक्ष प्रमाण तेरे सामने है। शेर बोला—देखता हूँ पर यह मूर्ति मनुष्य ही की बनाई हुई है। यदि कोई शेर इस मूर्ति को गढ कर तैयार करता तो वह शेर को मनुष्य के पैर तले रखने के बजाय शेर के पैरों के नीचे मनुष्य को बनाता।

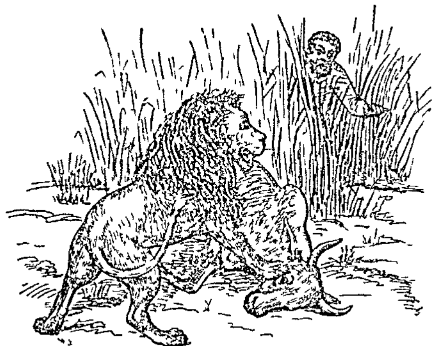
> अपनी जाति का पक्षपात सबको होता है। यही कारण है कि एक जातिवाले दूसरी जातिवालों के साथ उचित न्याय नहीं कर सकते।

गृहस्थ और उसका खोया हुआ बैल

कहानी ६६

किसी गृहस्थ का बैल खो गया था। वह उसे वन में इधर-उधर खोजता फिरता था और देवता से प्रार्थना करता था कि हे महाराज, मुझे एक बार मेरे बैल का चुरानेवाला मिल जाय तो मैं तुम्हें सिन्नी चढाऊँगा। थोडी देर बाद उसने एक टीले पर चढ कर देखा कि टीले के नीचे ही एक बडा भारी शेर

उसके बैल को मार कर खा रहा है। यह देख कर वह डर गया और मन ही मन कहने लगा—हे महाराज, अब मैं बैल के चुरानेवाले को नहीं देखना चाहता।



उसके पञ्जे से मुझे बचा लो, मैं तुम्हें एक बकरा चढ़ाऊँगा।

यदि परमेश्वर हम लोगों की सारी प्रार्थनाये पूरी कर दे तो हम लोग इसी तरह अपनी इच्छाओं से ही नष्ट हो जायँ। इसलिए अपने आप किसी बात के लिए ईश्वर से प्रार्थना न करके उस मङ्गलमय रूप की कल्याणकारी व्यवस्थाओं पर अवलम्बित रहना ही ठीक है।

हमारे उपनिषद्‌कार महर्षियों ने जो प्रार्थना की है, वही बहुत ठीक है—यत् भद्रं, तन्न आसुव—जो कल्याणकारी हो, वही हमको देना, जो हम चाहें वह न देना।

गदहा, गीदड़ और शेर ✻ ✻ ✻ कहानी ६७

एक गदहे ने एक गीदड़ के साथ वादा कर लिया था कि परस्पर एक दूसरे की रक्षा और सहायता करेंगे। एक रोज वन में जाते जाते वे एक

शेर के सामने पड़ गये। बचने का और कोई उपाय न देख कर चालाक गीदड़ ... से शेर के पास जा पहुँचा और उससे कहने लगा—हुज़ूर, यदि मुझे माफ़ी दें ... मैं इस गदहे को आपके हाथ सौंप दूँ। शेर के माफ़ी देने पर गीदड़ ने गदहे को धोखा देकर ऐसे रास्ते पर चलाया कि वह एक गड्ढे में गिर पड़ा। शेर ने ... देखा कि गदहा गड्ढे में पड़ा है, उसके वहाँ से निकल भागने का कोई अंदेशा नहीं, तब उसने पहले गीदड़ को ही मारा और गदहे को दूसरे दिन के भोजन के लिए रहने दिया।

कौआ और राजहंस

कहानी ६८

एक कौए को राजहंसों के पङ्खों का उज्ज्वल रङ्ग देख कर बड़ा ईर्ष्या हुई। उसने सोचा कि राजहंसों ने अपने पङ्खों को पानी में धो धोकर इतना सफ़ेद कर लिया है। यह विचार कर वह गाँव से बाहर चला गया और एक तालाब पर रहने लगा। वहाँ उसने बड़ी मिहनत और बड़ी खूबी के साथ अपने पङ्खों को धोना शुरू किया। पर सब निष्फल गया। उसे आहार न मिला और पानी में रहने के कारण खूब सर्दी लग गई। इस कारण दुर्बल होकर वह बहुत जल्द मर गया।

कितनी ही कोशिश क्यों न करो आदत कभी नहीं बदल सकती। इसी प्रकार बुराई ... कभी छिपाये नहीं छिपती।

अङ्गार शतधौतेन मलिनत्वं न मुञ्चति।

किसान और बगला

कहानी ६९

एक किसान के खेत में बहुत से पक्षी आकर उसकी फसल खाते और उसे बड़ा नुकसान पहुँचाते थे। इससे किसान ने नाराज़ होकर पक्षियों को फँसाने के लिए वहाँ एक जाल फैलाया। उस जाल में बहुत से पक्षियों के साथ

साथ एक बगला भी फँस गया। बगले ने बड़ा मिन्नत के साथ किसान से कहा—"भाई, मेरा तो कोई अपराध नहीं है, मुझे कृपा कर छोड़ दो। मैंने कभी तुम्हारी खेती में नुकसान नहीं पहुँचाया। मैं पक्षियों में सबसे अधिक धर्मात्मा माना जाता हूँ, मैं अपने माता-पिता की भी सेवा-शुश्रूषा करता हूँ।" यह सुनकर किसान बोला—यह सब ठीक है, पर मैंने तुम्हें चोरों के बीच पाया है, इसलिए मैं तुम्हें छोड़ नहीं सकता।

सङ्ग-दोष से ही सत्यानाश होता है।

गोशाला में हरिण — कहानी ७०

शिकारी के डर से भागा हुआ एक हरिण गोशाला में जा छिपा। यह देख एक बैल ने उससे कहा—अरे अभागे, गड्ढे से बचकर चूल्हे में आ पड़ने से तुझे क्या लाभ हुआ? आदमी के ही डर से भाग कर आदमी के ही आश्रय में क्यों आगया? आज तेरी अवश्य ही मृत्यु है। हरिण बोला—भाई, तुम मिहरबानी करना, मुझे पकड़वा न देना, मौका पाते ही मैं यहाँ से भाग निकलूँगा। शाम हुई। चरवाहा आकर जानवरों को भूसा डाल गया। बाँधनेवाले ने जानवरों को बाँध दिया, नौकरनी गोशाला में दिया जला गई, पर किसी ने भी हरिण को न देखा। अब हरिण अपने आपको विपत्ति से छूटा हुआ जान कर बैलों को धन्यवाद देने लगा। इस पर एक बैल ने उससे कहा—ठहर भाई, अभी तक तू विपत्ति से बचा नहीं है। अब एक आदमी आता है उसके एक नहीं सौ आँखें हैं। उसकी नजर से बच जाय तभी कहा जाय कि तू बच गया। इतने ही में घर का मालिक वहाँ आ पहुँचा। वह घर के आदमियों से कहने लगा—बैलों को भूसा ठीक नहीं पड़ा, और भूसा दो, अरे, यहाँ गोबर पड़ा है, वह साफ नहीं हुआ, जानवर सब कैसे बैठेंगे, दिया की बत्ती बढ़ रही है, देखो, गोशाला में आग न लग जाय।

यहाँ यह घास फूस कैसे पड़ा है ? यह कहते कहते उसने घास में छिपे हुए हरिण के सींग देख लिये। फौरन उसने आदमियों को बुलाया और हरिण को पकड़वा लिया। शीघ्र ही हरिण के मांस, चमड़े और सींगों की व्यवस्था हो गई।

मालिक की नजर बड़ी तेज होती है।

खरगोश और कुत्ता

कहानी ७।

एक कुत्ते ने एक खरगोश को झाड़ी में छिपा देख कर पकड़ना चाहा। कुत्ते को दूर से ही अपनी ओर आते देख खरगोश जी छोड़ कर एक दम भागा। कुत्ता खरगोश के पीछे पीछे बहुत दूर तक दौड़ता चला गया, पर खरगोश को



तेज दौड़ते देखकर वह लौट आया। यह देखकर एक शिकारी आदमी कुत्ते से कहने लगा—अभागा, इतना बड़ा होकर तू इस छोटे से जानवर की दौड़ में बराबरी न

कर सका। यह सुनकर कुत्ता बोला—इन दोनों में जो भेद है, उसे तुम नहीं जान सके। भोजन की इच्छा से दौड़ने और प्राण बचाने की इच्छा से दौड़ने में बहुत बड़ा अन्तर है।

पवन और सूर्य

कहानी ७२

एक बार पवन और सूर्य में इस पर विवाद हो गया कि दोनों में कौन अधिक बलवान् है ? वे इस विवाद का कोई परिणाम न निकाल सके। इस कारण अन्त में निश्चय हुआ कि जो आसानी के साथ शीघ्र ही रास्ते में चलते



हुए बटोही के शरीर के कपड़े उतरवा दे, वही अधिक बलवान् है। तब पहले पवन बड़े जोर से चलकर बटोही के कपड़े उड़ा लेने की चेष्टा करने लगा, परन्तु उसका वेग

जितना ही बढ़ता गया, बटोही अपने शरीर पर उतना ही कपड़ा लपेटता गया। पवन को थका हुआ देख कर सूर्य ने अपना प्रकाश बढ़ाया, सूर्य की किरणों से सारा संसार तप उठा। थकावट और धूप से घबड़ा कर बटोही ने शरीर पर से कपड़े उतार डाले। उन्हें दूर फेंक कर वह एक दरख्त की छाँह में जा बैठा। इससे सूर्य की जीत सिद्ध हो गई।

एकदम जोर और जबरदस्ती के साथ काम लेने के बजाय धीरे धीरे समझा-बुझा कर काम लेना अच्छा है।

कठोर शक्ति का उग्र निमंत्रण की अपेक्षा कृपा के साथ बर्ताव करने से हृदय शीघ्र शान्त हो जाता है।

शेर का प्रेम

कहानी ७३

एक बार एक शेर का प्रेम एक लकड़हार की लड़की पर हो गया। उसने गर्व कर लकड़हार से कहा—तू अपनी लड़की का ब्याह मेरे साथ कर दे। यह बात सुनकर लकड़हारा एक दम अवाक् रह गया। वह सिंह के भय से न तो इस बात को अस्वीकार कर सकता था और न बेटी ब्याह कर शेर को अपना दामाद बनाना चाहता था। अन्त में वह सोच समझ कर बोला—हे पशुओं के स्वामी, आपकी इस आज्ञा से मैं अपना अहोभाग्य समझता हूँ। पर हुजूर, मेरी कन्या बड़ी डरपोक है। वह आपके नाखूनों और दाँतों की यह भयानकता न देख सकेगी। इसलिए आप यदि मिहरबानी कर मुझे आज्ञा दे दें तो मैं आपके दाँत और नाखून काट कर अलग कर दूँ। ब्याह कराने की प्रबल इच्छा से शेर ने ऐसा कराना मंजूर कर लिया। तब लकड़हार ने कुल्हाड़ी से उसके दाँत तोड़े और कैंची से नाखून काट कर अलग कर दिये। इसके बाद, दाँत और नाखून न रह जाने से शेर असमर्थ हो गया। तब उसे एक मोटे लट्ठ से पीट कर उसने घर से निकाल दिया।

अन्धा और पशुओं के बच्चे   कहानी ७४

एक अन्धा आदमी हाथ से छूकर बतला देता था कि यह फलाँ जानवर का बच्चा है। एक रोज उसके पास एक भेड़िये का बच्चा लाकर लोगों ने पूछा—यह कौन जानवर है? वह बच्चे के सारे शरीर पर हाथ फेर कर भी कुछ निश्चय न कर सका। अन्त मे वह बोला—मैं ठीक ठीक नहीं बतला सकता, इसका पिता गीदड़ है या भेड़िया। जो हो, पर मैं इतना जानता हूँ कि इसे भेड़ और बकरियों के बच्चों के साथ कभी विश्वास करके न रखना।

नीच स्वभाव का परिचय बचपन ही से मिल जाता है।

किसान और उसके लड़के   कहानी ७५

एक किसान जब मरने लगा तब उसने अपने लड़कों को खेती के काम में सफल होने का मुख्य उपाय बतलाने के लिए अपने पास बुलाया। वह उनसे कहने लगा— बेटो, मैं तो अब मरता हूँ, पर अपना सारा धन तुम लोगों के लिए अपने अङ्गूर के खेत मे रक्खे जाता हूँ। लड़कों ने सोचा, उनका पिता किसी गड़े हुए धन के बारे में कह रहा है। इसलिए किसान के मरने के बाद ही वे कुदाल और रम्भा ले लेकर खेत मे जा पहुँचे। खेत को खोद खोद कर उन्होंने उसकी मिट्टी खूब उलट पलट कर दी, पर गड़ा हुआ धन उनके हाथ न लगा। गड़ा हुआ धन तो न मिला, पर इस साल खेत के खूब अच्छी तरह खोदे जाने और उसकी मिट्टी उलट पलट हो जाने से उसमें अङ्गूर की खूब पैदावार हुई। अङ्गूर बेचकर किसान के लड़कों ने बहुत धन पाया। उन्होंने अपनी मिहनत इसी में सफल समझी।

मिहनत ही सबसे बड़ा धन है।

वृक्ष और कुल्हाडी

कहानी ७६

एक लकडहार न वन म जाकर वृक्षों स, अपनी कुल्हाडी का डाँडा बनाने के लिए, एक डाली दन का प्रार्थना का। उसकी इस प्रार्थना को बहुत छोटी सी समझकर वृक्षा न उसे नीम क वृक्ष का एक डाली काट कर द दी। तब लकडहार न अपनी कुल्हाडी म डाँडा लगा कर शाल, देवदारु, शीशम और आम आदि को—जो सामने आया सब पर दोहत्थी कुल्हाडी चला कर—काटना और जमीन पर गिराना शुरू कर दिया। यह देख कर शाल बडे दु ख के साथ देवदारु से बोला—पहले ही बुरे काम न हम लोगों का सत्यानाश किया, हम यदि अपने गरीब पडोसी नीम के साथ बुराई न करते तो हम बहुत समय तक वायु और प्रकाश ग्रहण करके सुख से अपना जीवन व्यतीत करते।

धनी जब बुराई करके गरीब का अधिकार छीन लेता है तब वह अपने अधिकार के भी छिन जाने का मार्ग साफ कर देता है।

कबूतर और कौआ

कहानी ७७

एक कबूतर पिंजडे म बन्द था। उसके कितने ही बच्चे थे। इससे वह बडे आनन्द में रहा करता था। यह देख एक कौए ने उससे कहा—अर मूर्ख, सन्तान की बढती म आनन्द और अहङ्कार मत कर। अन्त में तुझे इन पराधीन कैदियों के दुर्भाग्य के लिए हाय हाय करनी पडेगी।

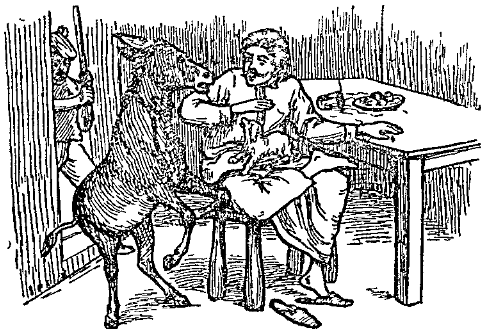
स्वाधीनता म जो सुख रूप है, पराधीनता में वही दु ख रूप हो सकता है।

गदहा और पिल्ला

कहानी ७८

एक गृहस्थ के पास एक गदहा और एक पिल्ला था। गदहा घुडसाल में बँधा रहता और खूब दाना घास खाता था। मालिक और नौकर-चाकर

ही उसकी खूब हिफाजत करते थे। पिल्ला कभी अपने मालिक के चारों ओर घूमता फेरता और कभी कभी उसकी गोद मे जा बैठता था। गदहे को काम करना पडता था। दिन भर तो वह बोझ ढोता और रात को भी उससे कुछ न कुछ काम लिया जाता था। पिल्ले को कोई काम न था, वह जब तब इधर-उधर फिरा करता और अन्त में अपने मालिक की गोद मे आराम से जाकर सो रहता था। कुत्ते का सौभाग्य देख देख कर गदहा उससे बडी ईर्ष्या करने लगा। उसने सोचा कि मैं भी



यदि कुत्ते की तरह आचरण करने लगूँ तो शायद अपने मालिक का वैसा ही प्यारा हो जाऊँ। इस प्रकार निश्चय कर वह एक दिन अपनी बाँधने की रस्सी तुडा कर मालिक की बैठक मे जा घुसा। वहाँ घुस कर वह विचित्र रूप से अपने अङ्गों को हिलाने डुलाने और अद्‌भुत उछल कूद करने लगा। उसके पैरों की ठोकर से वह मेज उलट गई जिस पर मालिक खाना खा रहे थे। मेज पर रक्खे हुए काँच के प्याले और तशतरी वगैरह सब बर्तन चूर चूर हो गये। इतन

पर भी गदहा शान्त न हुआ। अन्त में अपना सिर ऊँचा करके वह बड़े ज़ोर से रेंकने लगा। उसकी चिल्लाहट से सारा घर फटा जाने लगा। चिल्लाकर वह मालिक की गोद में जाने की कोशिश करने लगा। उसके टापों की ठोकर लगने से मालिक के शरीर में कई जगह घाव हो गये। नौकरों ने जब यह तमाशा देखा तब वे सब वहाँ दौड़ आये और लट्ठ ले लेकर गदहे को ऐसा पीटा कि वह फिर जीता न बचा। मरते मरते गदहा यह कहता गया—हाय, मैं अपनी स्वाभाविक दशा में सन्तुष्ट न रह कर दूसरे के अस्वाभाविक आचरण की नकल करने गया था, अब वैसा ही उचित फल भी मुझे मिल गया।

जिसका जो काम है, वह उसी को अच्छा लगता है, दूसरे को उससे लाभ के बदले हानि ही होती है।

भेड़िया और भेड़े

कहानी ७८

एक बार भेड़िया ने मिल कर भेड़ों से कहला भेजा—हम लोगों में बहुत दिनों से परस्पर जो घोर शत्रुता चली आ रही है, वह अब ठीक नहीं। हम लोगों की अन्तिम इच्छा है कि हम तुम सब मिल कर सन्धि कर लें और भविष्यत् में मिल जुल कर, बिना किसी का कुछ नुकसान किये, एक साथ रहें। पर, तुम्हारे बाड़े के चारों तरफ पहरा देनेवाले कुत्ते इस काम में बड़े बाधक हैं। वे हम लोगों को देखते ही भूँक कर दौड़ पड़ते हैं, इसी से हम भी हिंसा करने पर उतारू हो जाते हैं। तुम यदि कुत्तों को वहाँ से हटा दो तो फिर हम सब एक साथ बड़ी मित्रता से रह सकें। अभाग भेड़ों ने भेड़ियों की बात पर विश्वास करके अपनी रक्षा करनेवाले कुत्तों को वहाँ से हटा दिया। यह दल भेड़ियों ने सहज ही में सब भेड़ों को मार कर खा डाला।

शत्रु की बात पर विश्वास करके हित करनेवाले मित्रों को अलग कर देने से अवश्य ही विपत्ति का सामना करना पड़ता है।

भेड़िये और भेड़ों के रखवाले कुत्ते
कहानी ८०

भेड़ियों ने भेड़ों की रखवाली करनेवाले कुत्तों से कहा—भाई, तुम लोगों के साथ हमारी बहुत कुछ सदृशता है। ऐसी दशा में हम तुम आपस में क्या लड़ते-झगड़ते हैं। हम तुममें केवल इतना ही भेद है कि हम स्वाधीन हैं और तुम मनुष्यों के अधीन हो। मनुष्य तुमको मारते हैं, तुम्हारा गला बाँध रखते हैं, और मनुष्य तुमसे भेड़ों का पहरा दिलवाते हैं, पर भेड़ों का मांस वे खुद खाते हैं और तुम्हारे भाग्य में उनकी हड्डी भी नहीं बदी। तुम यदि हमारा कहना मानो तो आओ, दोनों दल मिलकर पेट भर भेड़ खायें। कुत्तों ने भेड़ियों की चालाकी नहीं समझी। वे जाकर फौरन उनके दल में मिल गये। तब भेड़िये एक साथ उन पर टूट पड़े और उन्हें मार कर चट कर गये।

शेर और गीदड़
कहानी ८१

एक गीदड़ एक शेर का नौकर हुआ। वह कोई शिकार देखता तो फौरन आकर शेर को खबर देता। शेर जाकर शिकार मार लाता। कुछ दिनों बाद गीदड़ को खयाल हुआ कि मैं भी शेर के बराबर ही हूँ। तब उसने शेर से प्रार्थना की कि मैं खुद शिकार करने जाऊँगा। शेर इस पर राजी हो गया। एक दिन मैदान में एक बैल को चरता देख गीदड़ उसकी तरफ शिकार करने को झपटा। इतने ही में कुछ चरवाहों ने उसे वहाँ देख लिया। वे एक-दम उस पर टूट पड़े और मारे लाठियों के उसको वहीं समाप्त कर डाला।

अपनी शक्ति से अधिक बढ़ना विपत्ति को पुकार कर अपने पास बुलाना है।

बंदर और ऊँट
कहानी ८२

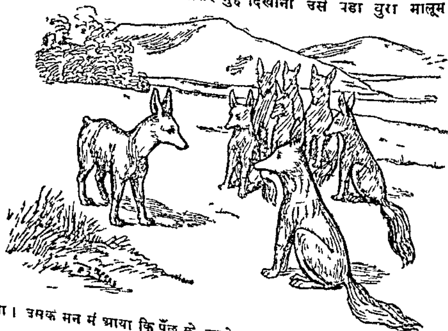
पशुओं के समाज में एक बड़ा भारी जलसा हो रहा था। उसमें एक भारी भोज हो चुकने पर बन्दर का नाच प्रारम्भ हुआ। [illegible]

देखकर सब लाग बहुत खुश हुए। चारों तरफ की वाह-वाही के साथ बन्दर का नाच समाप्त हुआ। बन्दर का यह तारीफ सुनकर ऊँट से न रहा गया। वह अपनी तारीफ कराने का इच्छा से उठ खड़ा हुआ और सभा के बीच अपना अद्भुत नाच करने लगा। ऊँट के लम्बे लम्बे पैर, बड़े लम्बे चौड़े शरीर और टेढ़ी गर्दन से नाच में एक विकराल दृश्य दीखने लगा। इससे बिगड़ कर पशुओं ने उसे खूब पीटा और अपनी सभा से निकाल बाहर कर दिया।

पुँछकटा गीदड़

कहानी ८१

एक समय एक गीदड़ किसी शिकारी के फन्दे में फँस गया। उसने प्राण के बदले अपनी पूँछ गँवा कर किसी तरह उससे छुटकारा पाया पर, पूँछ बिना अपने समाज में जाकर मुँह दिखाना उसे बड़ा बुरा मालूम होने



लगा। उसके मन में आया कि पूँछ के बदले प्राण ही चले जाते तो अच्छा था।

गी हो गया सो तो हो गया, अब पुँछकट गीदड़ ने सोचा कि यदि मेरी जातिवाले अन्यान्य गीदड़ों के भी पूँछ न रहे तो अच्छा हो। ऐसा होने पर मैं सबों से किसी बात में कम न रहूँगा। अतएव यह सोच कर उसने सब गीदड़ों को एक जगह इकट्ठा किया। उन्हें इकट्ठा कर वह लम्बा चौड़ा व्याख्यान देने लगा कि दुम कट जाने से बड़ा आराम मिलता है। वह बोला—भाइयो, पुँछकटा होना कितना सुखदायक है, यह तुम नहीं जानते। पूँछ केवल एक तरह का बोझ है, उसे पीछे पीछे लटकाये फिरना बहुत बुरा है। भाग्यवश पूँछ के बिना रहने का सुख मुझे मालूम होगया है। इसी कारण मैं अपने अनुभव की बात तुमको बतला रहा हूँ। तुम भी अपनी अपनी खराब पूँछें काट कर सुन्दर और हलके बन जाओ। इतने में एक बूढ़ा गीदड़ उसके व्याख्यान को रोक कर बीच में ही बोल उठा—भाई, तुम यदि अपनी कटी हुई पूँछ फिर से अपने शरीर में जोड़ सकते तो हमें ऐसा उपदेश देने न आते।

बुढिया और वैद्य — कहानी ८४

एक बुढिया की नजर कम हो गई, इसलिए वह एक वैद्य के पास गई। वैद्य को अपनी आँखें दिखा कर बुढिया ने उससे यह शर्त की कि आराम होने पर तुम्हें पूरा पुरस्कार मिलेगा और जो फायदा न हुआ तो फूटी कौड़ी भी न दूँगी। वैद्य इस शर्त पर राजी होकर बुढिया की आँखों की दवा करने लगा और जब तब उसके घर भी जाने आने लगा। बुढ़िया के घर से लौटते समय वैद्य उसकी कोई न कोई चीज-वस्तु चुरा लाता था। जब बुढिया की सभी कीमती कीमती चीजें वह चुरा ले गया तब उसने उसकी आँखें अच्छी कर दीं। आँखें अच्छी हो जाने पर उसने बुढिया से अपना पुरस्कार माँगा। बुढिया की आँखें जब अच्छी हुई तब उसने देखा कि मेरी सारी चीजों की चोरी हो गई। यह देख कर उसने वैद्य को इनाम देने से इनकार कर दिया। विनती, प्रार्थना और समझाने बुझाने से

जब कुछ न हुआ तब वैद्य ने बुढ़िया पर कचहरी में नालिश की। बुढ़िया हाकिम के सामने बोली—हुजूर इस वैद्य ने पुरस्कार का जो दावा किया है, वह ठीक है। मैं ने इसे सचमुच पुरस्कार देने को कहा था। पर, यह जो कह रहा है कि "मैं अपनी नजर फिर से पागई" वह ठीक नहीं। क्योंकि जब, मैं अन्धी नहीं हुई थी तब मुझे मेरा घर तरह तरह की चीजों से भरा पूरा दिखलाई देता था, और अब वह मुझे ऐसा नहीं देख पड़ता।

शठता का सच्चा पुरस्कार प्रतारणा ही है।

खरगोश और मेढक

    कहानी दो

जानवरों में खरगोश की जाति बड़ी ही डरपोक और कम हिम्मती होती है। बड़े बड़े जीव जन्तु उसे देखते ही मार कर खा जाते हैं। इसी कारण एक रोज सब खरगोशों ने मिलकर अपने असमर्थ जीवन से हताश हो निश्चय किया— हमारे जीवन के चारों ओर डर ही डर है, इसलिए हम लोग अपनी आत्महत्या करलें तो अच्छा हो। भय के साथ दुःखपूर्ण जीवन बिताने से तो मर जाना कहीं अच्छा है। यह निश्चय कर वे सब पानी में डूब कर मर जाने की इच्छा से एक तालाब की ओर चले। तालाब के किनारे किनारे बहुत से मेढक बैठे हुए थे। वे खरगोशों के आने की आहट पाते ही कूद कूद कर पानी में कूदने लगे। यह देख कर एक खरगोश अन्य खरगोशों से कहने लगा—भाइयो, हम लोगों का अपने जीवन से एकदम हताश हो जाना ठीक नहीं। संसार में जब कि हम लोगों से भी अधिक दुर्बल और डरपोक प्राणी मौजूद हैं तब यहाँ हमारे रहने में भी कोई हर्ज नहीं। इस कारण अब हम लोगों को आत्महत्या करने का विचार छोड़ देना चाहिए।

दूसरे की दुर्दशा देख कर धीरज और शान्ति मिल सकती है। किसी की कैसी ही बुरी अवस्था क्यों न हो, किन्तु उससे भी अधिक बुरी हालतवाले दूसरे प्राणी संसार में मौजूद हैं। उनकी दशा के साथ अपनी दशा का मिलान करने से वह बहुत कुछ अच्छी मालूम होगी।

मछुआ और मछली + * * + कहानी ८६

एक मछुआ मछलियाँ मारने गया। दिन भर व्यर्थ इधर-उधर प्रतीक्षा करने के बाद अन्त म उसे एक छोटी सी मछली मिली। मछली उससे बोली—मिहरबानी करके मुझे छोड दो, मैं बहुत ही छोटी हूँ मुझसे आपका जरा भी पेट न भर सकेगा। कृपा कर आज आप मुझे छोड दें, फिर जब मैं बहुत बड़ी हो जाऊँ तब आप मुझे पकड लें। मछुआ बोला—नहीं, नहीं, यह मतलब की बात चीत नहीं है। जो मैं अभी तुम्हें छोड दूँ तो पानी में पडते ही तुम इस शर्त को भूल जाओगी। तब तो तुम कहने लगोगी—यदि पकड सके तो पकड लो।



प्राप्त नैव परित्यजेत्।
हाथ आई वस्तु को न छोड़ना चाहिए।

साँप और रेती * * * कहानी ८७

एक साँप भूख के मारे फिरता फिरता एक लोहार की दूकान के भीतर जा पहुँचा। वह खाना खोज रहा था कि उसे एक रेती देख पडी। उसको पकड कर वह दाँतो से काटने लगा, तब रेती उससे बोली —मुझे छोडकर तुम

कहीं दूसरी जगह जाकर अपनी खुराक ढूँढो, मेरे पास तुम्हारी पेट भरने की इच्छा पूर्ण न होगी। दूसरे को रेतना ही मेरा काम है, मुझे काट खाने से तुम्हारा काम कैसे चल सकेगा?

घोड़ा और हरिण

कहानी ८

एक घोड़ा बड़े भारी जङ्गल में अकेला ही चरता-फिरता था। कुछ दिन बाद एक हिरण भी उसी जङ्गल में आकर रहने लगा। यह देख कर घोड़े को बड़ा गुस्सा आया। उसने हरिण का अपमान करने का पक्का इरादा कर लिया। इसी इरादे से वह एक मनुष्य से जा मिला और इस काम में उसकी मदद चाही। मनुष्य घोड़े से कहने लगा—अच्छा पहले लगाम लगा कर तुम मुझे अपने ऊपर चढ़ने दो। ऐसा हो चुकने पर मैं हरिण को पूरी सजा दूँगा। घोड़ा

राजी हो गया और उसने लगाम पहन ली। तब उसी क्षण उसे मालूम हो गया कि हरिण को अपमानित करने के बदले में खुद अपमानित होगया। घोड़े को उसी दिन से अपनी स्वतन्त्रता छोड़कर मनुष्य का आज्ञाकारी वाहन होना पड़ा।

माता और बाघ

कहानी ८९

एक बाघ शिकार की खोज में इधर-उधर फिरता हुआ एक गृहस्थ के घर के पास से जा निकला। जाते जाते उसने सुना, एक लड़का चिल्ला चिल्ला कर रो रहा है और उसकी माता उसे धमका रही है। बाघ ने सुना माता कह रही है—कहती हूँ, चुप हो जा, नहीं तो बाघ के मुँह में डाल दूँगी। माता अपनी प्रतिज्ञा का पालन अवश्य करेगी,—यह निश्चय कर अच्छा सा आहार पाने की आशा से बाघ घर के दरवाजे के पास बैठा रहा। पर, धीरे धीरे बालक का रोना कम हुआ। वह अब शान्त होकर चुप हो गया। अब बाघ ने माता को फिर से कहते सुना—नहीं बेटा, मेरे प्राणाधार! बाघ के आने पर हम दोनों लाठियों से पीट कर उसे मार डालेंगे। तब बाघ भूख से घबड़ा कर हताश होता हुआ वहाँ से चल दिया। चलते चलते वह कहने लगा—जिन लोगों के मन का भाव कुछ और है, और मुँह से कुछ और बोलते हैं, उनका विश्वास करने से यही दुर्दशा होती है।

भेड़िया और भेड़

कहानी ९०

एक बाघ बीमार पड़ कर चलने फिरने लायक न रहा। वह एक भेड़ को अपने पास से जाती देख कर उससे कहने लगा—देखो, मैं भूख और प्यास से मर रहा हूँ। तुम दया करके नजदीक के उस झरने से थोड़ा सा जल मुझे ला दो। जल मिलने पर मैं खुद ही किसी तरह अपना भोजन ढूँढ़ लूँगा। इस पर भेड़ हँस कर बोली—मैं जल लाकर जब तुम्हारे पास पहुँचूँगी तब तुम मुझ ही से एक कर अपने भोजन का इन्तिजाम कर लोगे।

विधवा और उसका बकरा    कहानी ४१

एक विधवा स्त्री के पास उसका आधार केवल एक बकरा था। उसी से कुछ मिल जाने की आशा से वह उसके बाल काटने लगी। काटते समय वह उसके शरीर पर बालों की जड़ तक न रहने देना चाहती थी। इससे बकरे के शरीर का चमड़ा जगह जगह पर कट गया और उससे लोहू निकलने लगा। बकरा इस पर बड़ा दुःखी होकर अपनी मालकिन से बोला—भली आदमिन, मुझे इस तरह क्यों दुःख दे रही हो? क्या मेरे लोहू से मेरे बालों की कीमत बढ़ जायगी? अगर मेरे मांस की जरूरत है तो कसाई को बुलाओ, वह मेरे सारे दुःख-दर्द को एक-दम दूर कर दे। और अगर तुम्हें सिर्फ मेरे बालों की ही जरूरत है तो बाल काटनेवाले को बुलाओ, वह बिना लोहू बहाये मेरे बाल काट देगा। चाहे इस पार करो, चाहे उस पार—बीच में रख कर अधिक कष्ट न दो।

हंस और बगला    कहानी ४

कितने ही हंस और बगले एक साथ एक जलाशय में चर रहे थे। एक राज शिकारियों को आया हुआ देख बगले झट से पर फैलाकर उड़ गये। पर, हंसों का शरीर भारी होने से वे चटपट न उड़ सके। शिकारियों ने जाकर उन्हें फौरन पकड़ लिया।

जिसका भार जितना कम है, वह उतना ही विपत्ति से दूर है।

बदमाश कुत्ता    कहानी

एक कुत्ता बड़ा बदमाश था। वह भौंक कर लोगों को काटने दौड़ता था। इसी कारण उसके मालिक ने उसके गले में एक बड़ा भारी घंटा पहना दिया था। इससे वह जल्दी से दौड़ न सकता था और कुत्ता जिसे काटने दौड़ता वह घंटे की आवाज सुनकर सचेत हो जाता था। अपने गले में घंटा बँधा देख

कुत्ता घमण्ड करने लगा। वह अपने जाति-भाइयों के सामने जोर जोर से घटा बजाता फिरता था। यह देखकर उसकी जाति का एक कुत्ता एक दिन उससे कहने लगा—देख, बड़े घमण्ड के साथ जो तू घटा बजाता फिरता है, सो यह तेरी मूर्खता ही जाहिर करता है। तेरे गले का घटा बज बज कर लोगों को तेरे बुरे स्वभाव की इत्तिला दे रहा है, यह तेरी बड़ाई नहीं जाहिर करता।

मूर्ख लोग अप्रसिद्धि को प्रसिद्धि मान कर बड़ी भूल करते हैं। बहुत से लोग अप्रसिद्ध होने के बजाय बुरे तौर से प्रसिद्ध होना अच्छा समझते हैं।

भूसे की नाँद में कुत्ता    कहानी ६४

एक कुत्ता भूसे की नाँद में सोया करता और भूसा खाने को नाँद की ओर किसी पशु के आते ही भों भों कर उसे भगा देता। इससे एक

पशु बहुत दुखित होकर दूसरे से बोला यह कुत्ता कैसा हिंसक जीव है। स्वद तो भूसा खाता नहीं और जो खाते हैं उन्हें भी भगा देता है।

कुत्ते का काटा हुआ मनुष्य    कहानी ६५

एक आदमी को किसी कुत्ते ने काट खाया। कुत्ते के काटने से वह ऐसा डरा कि जिसको सामने देखता उसी से अच्छे होने का उपाय पूछता था। एक आदमी ने उससे कहा—कुत्ते के काटने से जो घाव हुआ है, उस के लोहू में रोटी भिगो कर कुत्ते को खिलाने से तुम बिलकुल अच्छे हो जाओगे। यह उपाय सुनकर वह आदमी थोड़ा सा हँस पड़ा और उपाय बतलानेवाले से कहने लगा—बहुत ठीक कहा। मैं जो तुम्हारे उपदेश का पालन करूँ तो लोहू से भीगी हुई रोटी दिखला कर सैकड़ों कुत्तों को शहर से अपने कटवाने के लिए फिर बुलाऊँ। क्यों यही न?

दुष्ट के साथ मिहरबानी करना अपने हाथों अपना अपकार करना है।

जो लोग घूस देकर शत्रु को वश करना चाहते हैं, उनके लिए शत्रुओं की कमी नहीं।

वट का वृक्ष और बेत का पौदा    कहानी ६६

एक बरगद का पेड़ नदी के वेग से उखड़ कर उसकी ... में बहने लगा। बहते बहते उसने देखा न... मझधार ... बेत के पौदे खड़े हैं। वट का वृक्ष, इन निर्बल ... के पत्तों ... र में हुआ देखकर, बड़ा अचरज करने ... लगा ... होने पर भी यहाँ खड़े रह ... और

धार मे बहा जा
ले—आश्चर्य करने
म उखाड़े गये। हम ल
पर से चला जाने दिया।

मुसाफिर और देवदारु का वृ

दो मुसाफिर राह मे चलते
देवदारु का वृक्ष देख कर
ठ गये। ठण्डी छाया में बैठने से
सरे से कहने लगा—देखो, यह कैसा खरा किसी तरह
का कोई फल नहीं देता। यह सुनकर देवदार रखो, मेरी ही छाया
बैठे बैठे मुझे बुरा बतला कर गाली दे रहे हो। इससे लज्जा नहीं मालूम
होती।

कृतघ्न मनुष्य जैसा अन्धा होता है वैसा ही नीच भी होता है। ऐसे मनुष्य के साथ कोई उपकार भी किया जाय तो वह उसे नहीं मानता।

शेर और दूसरे दूसरे जानवर — कहानी ८८

दूसरे दूसरे कई एक वन के पशुओं के साथ शेर शिकार खेलने गया। शिकार मे उसने एक बड़े भारी बारहसिंहे को मारा। अब बँटवारे का समय आया और शेर खुद बाँटनेवाला बना। उसने शिकार के तीन हिस्से किये और सबसे कहा—पहला हिस्सा राज अंश होने के कारण मेरा है, वह मैं लूँगा।

पशु बहुत दु खित होकर दूसरे से बोला यह, इसलिए दूसरा हिस्सा भी मुझे
ता भूमा खाता नहीं और जो खाते हैं उन्हें

कुत्ते का काटा हुआ म

ए क



मिलना चाहिए। रह गया तीसरा, सो उसे जिसकी शक्ति हो, वह मुझसे छीन
ले। यह सुन कर दूसरे सब जानवर हताश होकर चले गये।

जोर जिसका है, उसी का सारा मुल्क है।

बलवान् व्यक्ति स्वार्थी और विवेकशून्य हो जाय तो निर्बलों पर अत्याचार होना अनिवार्य है।

बाज और तीर

कहानी ६६

एक तीरन्दाज ने एक बाज के तीर मारा। तीर के लगने से बाज (शिकरा) व्याकुल होकर जमीन पर गिर पड़ा। उसने मुँह फिरा कर तीर की तरफ ज्यों ही देखा त्यों ही तीर के ऊपर शिकरे का पर लगा हुआ उसे दिखाई दिया। तब, मरने के पहले, वह इतना कहता गया—मृत्यु का वह घाव अधिक दु खदायी होता है जिसका सम्बन्ध अपने निज से होता है।

मनुष्य अपने किये हुए अपकर्म के बदले जो दु ख पाते हैं, उसकी पीड़ा बहुत अधिक होती है।

लकडहारा और जलदेवता

कहानी १००

एक लकडहारा नदी की धार के पास एक दरख्त पर चढा हुआ लकडी काट रहा था। उसके हाथ से अचानक उसका कुल्हाडा गिर पडा और नदी की धार में डूब गया। लकडहारा बेचारा निरुपाय होकर नदी की धार



के पास बैठा बैठा खेद करता रहा। ... तब उस नदी के देवता उस पर ...

हो गयीं। वे नदी से बाहर निकल आये और उसके रोने का कारण पूछने लगे। कारण पूछ कर व झट से गोता मार कर एक सोने का कुल्हाडा बाहर निकाल लाये और लकडहार को दिखला कर पूछने लगे—क्या यह तुम्हारा है ? लकड़हारे ने कहा—नहीं। तब वे फिर पानी में डूब गये और एक चाँदी का कुल्हाडा लाकर पूछने लगे—क्या यह तुम्हारा है ? लकडहारे ने सिर हिला कर कहा—नहीं, यह भी मेरा नहीं। यह सुनकर जलदेवता ने फिर तीसरी बार गोता लगाया। अब की बार लकडहार का कुल्हाडा लाकर उन्होंने उसके सामने रख दिया। यह देख कर लकडहारा बड़े आनन्द के साथ बोल उठा—यही मेरा कुल्हाड़ा है। लकड़हारा सत्यवादी था, इस कारण जलदेवता उस पर प्रसन्न हो गये। उन्होंने उसे उसके कुल्हाड के साथ सोने और चाँदी के कुल्हाडे भी पुरस्कार में दे दिये।

लकडहारे ने अपने गाँव में जाकर गाँववालों को यह कथा कह सुनाई। गाँववालों में से एक के मन में आई कि मैं भी जाकर ऐसा लाभ उठाऊँ। वह नदी की धार के पास लकडी काटने लगा और काटते काटते अपना कुल्हाडा नीचे नदी के पानी में हाथ से गिरा दिया। कुल्हाड के गिर जाने पर वह नदी की धार के पास बैठा बैठा खूब जोर जोर से रोने और चिल्लाने लगा। तब जलदेवता उसका रोना सुनकर जल के बाहर आये और उसके दु:ख का कारण पूछा। कारण जान कर उन्होंने गोता लगाया और एक सोने का कुल्हाड़ा लाकर उससे पूछा—क्या यही तुम्हारा है ? यह सुनकर वह लोभी—हाँ, हाँ, यही मेरा है, कहता हुआ कुल्हाडा लेने दौड़ा, पर जलदेवता उसकी झूँठी बात और धृष्टता पर नाराज हो गये। वे फौरन ही कुल्हाड समेत जल के भीतर डूब गये। वह गाँववाला अपना कुल्हाडा गँवा कर हाय, हाय, करता हुआ अपने घर लौटा।

सत्य बोलना ही उत्तम मार्ग है।

एक और साँड    कहानी १०१

एक मशक बहुत समय तक भुनभुनाता हुआ उडते उडते एक बैल के सींग पर जा बैठा। सींग पर बैठ कर वह बैल से कहने लगा—भाई, तुम्हारे ग पर बैठ गया हूँ, क्षमा करना। पर, यदि तुम्हें कुछ अधिक बोझ मालूम होता तो कहो, मैं अभी उड जाऊँ। बैल बोला—अजी, तुम इन बातों की कोई फिक्र न ो, तुम्हारा उड जाना और बैठा रहना, मेरे लिए एक-सा है। सच तो यह है कि मेरे सींग पर बैठे हो, यह मुझे मालूम भी नहीं हुआ।

कोई कोई अपने को जितना बड़ा मान बैठते हैं, उन्हें उतना बड़ा दूसरे नहीं मानते। मन जितना छोटा होता है, उतनी ही अधिक अपने मुँह अपनी बड़ाइ की जाती है।

र्य का विवाह    कहानी १०२

एक बार बड़ी सख्त गरमी पडने लगी। देश भर में चारों तरफ हल्ला मच गया कि सूर्य भगवान् विवाह करेंगे। सारे पशु-पक्षी यह खबर पाकर ई आनन्दित हुए। मेंढक बहुत दिनों तक के लिए छुट्टी पा जाने की आशा से जोर-ार के साथ टर्र टर्र करने लगे। पर, उनमें से एक बूढे मेंढक ने सबसे कहा—इस माचार को सुन कर आनन्दित होने के बजाय दु:खी होना चाहिए। क्योंकि जब केला सूरज हम लोगों की चमडी तपा कर हमें मिट्टी में मिला देता है तब यदि एक ार छोटा सूरज पैदा हो गया तो हम लोगों की क्या हालत होगी।

शु और कसाई    कहानी १०३

एक रोज सारे पशु कसाइयों के अत्याचार से क्रोधित होकर उन्हें मार डालने के लिए तैयार हुए। वे एक जगह इकट्ठे होकर अपने सींगों ो तेज करने लगे। उनमें एक बैल बहुत बूढा था और उसने अनेक खेतों को जोत

कर बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त किया था। वह उन सबसे बोला—तुम जिस काम क
का उद्योग कर रहे हो, वह उचित है या अनुचित ?—यह पहले सोच लो। कसाई ह
लोगों को मारते हैं, पर वे यह उपाय जानते हैं जिससे हम लोग थोड़ी सी तक्ल
पाकर जल्द मर जायँ, अगर हम लोग उन्हें मार डालेंगे तो हमें अनाड़ियों के ह
पड़ कर बहुत कष्ट भोगना पड़ेगा। क्योंकि जब तक मनुष्य हैं तब तक उन्हें मा
की ज़रूरत तो पड़ेगी ही। और मांस के लिए हम लोगों को चाहे कसाई का
चाहे कोई और अनाड़ी। अतएव अनाड़ी के हाथ से मारे जाने की अपेक्षा, इ
करने में होशियार कसाई के ही हाथ प्राण देना अच्छा है।

विपत्ति यदि आन ही वाली हो तो हल्के दरजे की विपत्ति को ही सहन करना चाहि
जानी हुई विपत्ति को हटा कर अनजानी विपत्ति को अपने पास बुलाना ठीक नहीं।

चोर और उसकी माता

कहानी १‹

स्कूल का एक विद्यार्थी अपने किसी साथी की एक किताब चुरा ले गया
उसने वह किताब ले जाकर अपनी माता को सौंप दी। इस पर मा
ने उसे ज़रा भी न धमकाया। उसने उलटा उसे चोरी करने का उत्साह दिया। दुबा
फिर वह दूसरा चीज़ चुरा ले गया। तब भी उसकी माता कुछ न बोली। धीरे धी
वह बालक ज्यों ज्यों बड़ा होता गया त्यों त्यों उसका चोरी करने का उत्साह बढ़
गया। वह अब बड़ी बड़ी क़ीमती चीज़ें चुराने लग गया। अन्त में एक दिन व
चोरी करते पकड़ा गया। उसे फाँसी की सज़ा मिली। वह जब फाँसी घर की ओ
ले जाया जा रहा था तब आदमियों की भीड़ के साथ उसकी माता भी, छाती पीटती
उसके पीछे पीछे जा रही थी। चोर ने ले जानेवाले सिपाहियों से कहा—मैं अपन
माता के कान में कुछ कहना चाहता हूँ। सिपाहियों के मञ्ज़ूर करने पर उसक
माता झट से उसके पास आई और अपना कान उसके मुँह के पास ले गई। त
चोर ने बड़े ज़ोर के साथ उसका एक कान काट खाया। इससे दुःखी माता रो

ार उसे कुपूत कह कह कर गालियाँ देने लगी । उसकी इस करतूत पर दूस
ादमी भी बड़े गुस्सा हुए और उसे गाली देने लगे । इस पर चोर बोला "
ाता ही मेरे सत्यानाश का कारण है। बचपन में जब मैंने पहले पहल



ही ध
दाम मिले

ुस्तक चुरा कर इ‍वह सोच-
ी मेरी यह ट‍नी डूबी हुई
यों ही उसने 'नहीं' कहने को जोर से अपना सिर हिलाया त्यों ही दूध व
नीचे गिर कर चूर चूर हो गया और दूध बह गया। इस प्रकार मिनट भर में ह
ा सपने का सारा सुख धूल में मिल गया।

जड़ पर कुल्हाड़ी मारना और फुनगी पर पानी सींचना ठीक नहीं।

उसकी दिल्लगी करने आये थे। पहले नट बोला। इसके बाद वह दर्शक एक बिल्ली के बच्चे को कपड़ों के भीतर छिपाये हुए चबूतरे पर आ खड़ा हुआ। वह बिल्ली के बच्चे को चुटकी काट काट कर जोर जोर से बुलवाने लगा। नट के पक्षपाती श्रोतागण एक स्वर से बोल उठे—नट की ही आवाज अधिक स्वाभाविक सी मालूम होती है। दर्शक की आवाज स्वाभाविक आवाज जैसी नहीं हुई। यह कह कर सब उसे धिक्कारने लगे। तब वह आदमी अपने कपड़ों के भीतर से बिल्ली के बच्चे को बाहर निकाल कर सबों से कहने लगा—महाशयो, आप बहुत ही अच्छे न्यायकारी हैं।

जो मन पहले से ही किसी का पक्षपाती होगया है उसे समझाना मुश्किल है।

न्यौता हुआ कुत्ता    कहानी ११२

एक धनी आदमी ने एक रोज अपने यहाँ एक भोज किया। उसमें उसके बहुत से भाई बन्धु और सगे सम्बन्धी शामिल हुए। उस धनी आदमी के एक कुत्ता था। वह भी अपने एक मित्र कुत्ते को न्यौता देकर खिड़की की राह, गुप्त रूप से, घर के भीतर ले आया। न्यौता हुआ कुत्ता भोज की इतनी बड़ी तैयारी देख कर बड़ा प्रसन्न हुआ और मन ही मन कहने लगा—अहा, आज कैसे शुभ मुहूर्त में रात बीत कर सबेरा हुआ है! इस प्रकार का भोज मिलना मेरे जीवन की एक अद्भुत घटना है! मैं इतना खाऊँगा कि दो दिन तक फिर मुझे कुछ खाने की जरूरत न पड़े। वह बड़े आनन्द के साथ अपनी दुम हिलाता हुआ इस घर से उस घर में आने-जाने लगा। घर के एक नौकर ने देखा कि एक बाहरी कुत्ता घर में इधर उधर फिर रहा है। तब उसने फौरन उसके चारों पाँव पकड़ कर घर की छत से नीचे पटक दिया। जमीन पर गिरते ही कुत्ता बड़े जोर जोर से चिल्लाने लगा और लँगड़ाता लँगड़ाता वहाँ से भागा। उसकी चिल्लाहट सुनकर उसके पड़ोसी कुत्ते उसके पास आगये और पूछने लगे—कहो, कैसा न्यौता खाया? इस पर वह बोला—ऐसा

खाया कि यह भी खबर न रही कि किस प्रकार और किस राह से, मैं घर के बाहर निकला।

> खिड़की की राह भीतर जाने से छत की राह ही बाहर आना पड़ता है।
> बिना बुलाये अभ्यागत का शायद ही कभी स्वागत होता है।

चरवाहा और भेड़ के बच्चे    कहानी ११३

सन्ध्या के समय खूब आँधी और पानी आजाने के कारण एक चरवाह ने अपनी बकरियों को लेकर एक गुफा में आश्रय लेना चाहा। उसने गुफा के पास जाकर देखा कि उसमें पहले ही से कुछ जङ्गली भेड़ों के बच्चे और भेड़ें मौजूद हैं। यह देख कर वह नई भेड़ों और उनके बच्चों को पाने की आशा से बहुत खुश हुआ। उसने दिन भर में अपने पालतू बच्चों के लिए जो घास-फूस इकट्ठा किया था वह उन जङ्गली भेड़ों और बच्चों को देने लगा। अपनी भेड़ों के बच्चों को बाहर ही छोड़ कर उसने उन्हें हवा और पानी से बचाने का कोई उपाय न सोचा। सवेरा होते ही उसने देखा कि उसके पालतू बच्चे आँधी-पानी और बर्फ पड़ने से ठिठुर कर एक-दम मर गये हैं। जङ्गली भेड़ें और उनके बच्चे भी एक एक करके दुर्गम मार्ग से पहाड़ पर चले गये। तब वह चरवाहा पुकार कर उन जङ्गली भेड़ों और बच्चों से कहने लगा—तुम लोग तो बड़े अकृतज्ञ मालूम होते हो। कल रात को मैंने अपनी भेड़ों के बच्चों की सारी खूराक तुम्हें खिला दी, अपने मेमनों को मैंने बाहर ठण्ड में ही पड़ा रहने दिया और तुम्हें इस तरह यत्न-पूर्वक रक्खा। आज तुम मुझे इतनी जल्दी और आसानी से छोड़ कर चल दिये। जाते जाते एक जङ्गली भेड़ उसे उसके इस प्रश्न का उत्तर देती गई—इसी लिए तो हम होशियार होकर तुम्हें छोड़ कर जाती हैं। तुमने आज हमें नई देख कर अपने पुराने बच्चों का कुछ भी खयाल न किया, कल और किसी को देख कर हम लोगों का भी कुछ खयाल

करोगे या न करोग इसका क्या सबूत। अन्त में वह मूर्ख चरवाहा अपना धन खोकर अपने घर खाली हाथ लौटा। गाँववालों न उसकी खूब हँसी का।

नये के प्रेम से अपन पुराने मित्र का छोड़ दना बुरी बात है।

यो ध्रुवाणि परित्यज्य अध्रुवाणि निषेवते।
ध्रुवाणि तस्य नश्यन्ति अध्रुवं नष्टमेव हि॥

घोड़ा और गदहा

कहानी ११

एक घोड़ा अपने सामने बहुत सा चारा रख कर खा रहा था। यह देख एक भूखा गदहा उसके पास आया और कुछ चारा माँगने लगा। घोड़े कहा—ठहरो, मैं पहले खा लूँ। यदि कुछ बच रहेगा तो अपनी उदारता के कारण तु घोड़ा बहुत दे दूँगा। यदि तुम मेरे अस्तबल में चलो, तो तुम्हें थैला भर दाना दे सकता हूँ इस पर गदहा बोला—तुम्हारी दया धन्य है। इस समय तुम मुझे जरा सा घास द म इतनी टाल मटाल कर रहे हो तो पीछे तुम मुझे अधिक दोगे, इसका क्या विश्वास

सोने का अंडा देनेवाली हंसिनी

कहानी ११

एक मनुष्य का भाग्य से एक हंसिनी मिल गई। वह रोज उसे एक सोने का अंडा दिया करती था। पर, वह केवल एक सोने का अंडा पाकर सन्तुष्ट न रह सका। एक एक सोने के अंडे के लिए रोज रोज प्रतीक्षा करना उसे अच्छा न लगा। उसने निश्चय किया कि हंसिनी का पेट फाड़ कर सब अंडे एक साथ बाहर निकाल लूँ तो भला हो जाय। अपने



...परिचय के अनुसार उसने हंसिनी का पेट चीर डाला। पेट चीर कर देखा तो ...उसमें एक भी अंडा नहीं। हंसिनी भी मर गई और कुछ हाथ भी न लगा। अन्त ... उस लोभी को अपने किये का बड़ा पश्चात्ताप हुआ।

सन्तोष सच्चा धन है, अत्यन्त लोभ दुःख का कारण होता है।

...जा के लिए मेढकों की ईश्वर से प्रार्थना ※ ※ ※ कहानी ११६

एक समय एक तालाब के बहुत से मेढकों ने स्वाधीन रहते रहते ऊब कर ईश्वर से प्रार्थना की कि किसी को हमारा राजा बना दीजिए। ईश्वर ने ...ी कठोर आवाज से गुस्से में आकर एक बड़ी भारी लकड़ी उनके यहाँ पानी में ...ी। लकड़ी के धम से गिरने की आवाज सुनकर वे डर गये और झट से पानी ...कर इधर उधर—जो जहाँ जा सके—भग गये। कुछ देर तक छिपे रहने के



...ने अपने नये राजा की कोई आहट न पाई, तब अपना ... ...को ... कोई कुछ ... ...ड़ा और ...

कोई कोई उस लकड़ा के पास पहुँच। वहाँ जाकर उन्होंने जब देखा कि उनका राजा स्थिर और अचल होकर एक जगह पड़ा है तब वे उसके ऊपर चढ़कर बैठ गये। कोई कोई वहीं नाचने भी लगा। इस निर्जीव राजा को पाकर मेढ़क सन्तुष्ट न हुए। व एक सजीव राजा को प्राप्त करने के लिए ईश्वर से प्रार्थना करने लगे। तब ईश्वर ने उनके बीच एक बड़ा लम्बी मछली फेंक दी। मेढक पहले तो साँप समझ कर मछली से बहुत डर, अन्त में धीरे धीरे जब उन्हें अपने राजा का ज्ञान हुआ तब उन्होंने समझा कि उनका राजा बड़ा निर्दयी है। फिर भी अपने लिए राजा माँगने की धुन उन पर सवार बनी ही रही। एक शासन करने वाला सुयोग्य राजा भेज देने की उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना की। ईश्वर ने उनका असन्तोष देख कर एक सारस को उनके यहाँ भेज दिया। सारस ने तालाब में मेढकों के पास आते ही उन्हें भक्षण करना शुरू कर दिया। तब तो मेढक बहुत घबड़ाये। एक सत्यानाशकारी राजा से अपना पीछा छुड़ा देने के लिए उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना की। पर, अब की बार ईश्वर ने उनकी प्रार्थना पर ध्यान न देकर उनसे कहा—अपनी अवस्था पर असन्तुष्ट रहने का फल भोग लो।

मछुआ

कहानी ११७

एक मछुआ नदी में मछलियाँ पकड़ रहा था। उसने नदी के इस किनारे से उस किनारे तक जाल फैला दिया और मछलियों को जाल में लाने के लिए रस्सी से एक मोटा पत्थर बाँध कर, पानी को खूब जोर से इधर-उधर पीटने लगा। मछुआ पानी को गँदला कर रहा है, यह देख कर एक स्नान करने वाले ने उसे खूब धमकाया और डाँटा भी। इस पर मछुआ बोला—महाशय, मेरा काम आपको अच्छा नहीं लगता, यह जान कर मुझे बड़ा दुःख हुआ। पर करूँ क्या, इसी काम पर मेरा और मेरे कुटुम्ब का निर्वाह अवलम्बित है।

एक के लिए जो काम लाभदायक है, वही दूसरे के लिए हानिकर है।

शेर और उसके तीन मुसाहिब   कहानी ११८

एक शेर के तीन मुसाहिब थे। एक गदहा, एक बाघ और एक गीदड़। एक दिन शेर ने पूछा—क्यों गदहे, मेरे शरीर से कैसी बुरी गन्द आ रही है? गदहा बोला—हाँ हुजर, बड़ी बुरी गन्ध आती है। गदहे की बेवकूफी पर नाराज होकर फौरन शेर ने उसका सिर धड़ से अलग कर दिया। इसके बाद वह बाघ से कहने लगा—तुम बतलाओ, कैसी बुरी गन्ध है? बाघ बोला—नहीं हुजर, कोई गन्ध आपके शरीर से नहीं आती। बाघ की झूठी खुशामद से गुस्सा होकर शेर ने उसे भी मार कर टुकड़े टुकड़े कर डाला। अन्त में शेर ने इसी विषय पर गीदड़ से पूछा। उसने फौरन उत्तर दिया—हुजर, मुझे सर्दी लग गई है, मेरी नाक बन्द है। मैं नहीं कह सकता कि गन्ध आती है या नहीं।

जिस कार्य में विपत्ति आने की सम्भावना रहती है, उसके सम्बन्ध में बुद्धिमान् व्यक्ति अपना मतामत नहीं प्रकट करते।

चोर और कुत्ता    कहानी ११९

एक चोर एक गृहस्थ के घर में चोरी करने गया। उसी घर के चारों तरफ एक कुत्ता रात भर चौकसी करता था। चोर को देखते ही वह बड़े जोर जोर से भूँकने लगा। यह देखकर चोर ने सोचा, पहले इसका मुँह बन्द कर देना चाहिए, नहीं तो यह हल्ला करके घरवालों को जगा देगा। यह सोच कर वह कुत्ते के सामने मांस का टुकड़ा डालने लगा। कुत्ते ने चोर से कहा—तुमको देखते ही तुम पर मुझे सन्देह होगया था। अब तुम मेरा बड़ा आदर-सत्कार कर रहे हो, इससे मेरा सन्देह तुम पर और भी पक्का होता जाता है। मैं समझता हूँ, तुम भले आदमी नहीं हो। फौरन यहाँ से भग जाओ, नहीं तो तुम्हारे हक में अच्छा न होगा।

बहुत श्रद्धा भक्ति करना चोर का लक्षण है।
जो घूस देता है, वह भलामानस नहीं।

गदहा और उसका मालिक ❀ ❀ ❀ कहानी १२०

एक गदहा एक माली के घर में था। माली बाजार से खाद और कुछ मिट्टी गदहे पर लाद कर अपने बागीचे में लाता था और उसे बागीचे की घास खोदकर चराता था। गदहे ने अपनी इस अवस्था पर असन्तुष्ट होकर ईश्वर से प्रार्थना की कि मुझे दूसरे मालिक के पास भेज दे। तब ईश्वर ने उसे एक कुम्हार के अधीन कर दिया। कुम्हार मैदान से मिट्टी और गारा उस पर लादकर घर लाता और घर से मिट्टी के बर्तन लाद कर वह उसे बाजार ले जाता था। मैदान और बाजार जाकर वह गदहे को उसके अगले पैर बाँधकर चरने के लिए छोड़ देता। वह इधर-उधर घूम फिर कर जो कुछ पास खा सकता था, उसके सिवा उसे और कुछ न मिलता था। इसी कारण थोड़े दिनों के बाद उसने फिर ईश्वर से दूसरे मालिक के यहाँ भेजने की प्रार्थना की। अब ईश्वर ने उसे एक चमार के अधीन कर दिया। किन्तु गदहे को यहाँ और भी अधिक परिश्रम करना पड़ता था। चमार उस पर मरे हुए जानवरों का चमड़ा लाद लाद कर अपने घर लाता और घर से उन्हें सुखा सुखा कर बाजार में बेचने ले जाता था। इससे दुःखी होकर गदहा बोला—हाय, मैं कैसा अभागी हूँ, मुझे अपने पहले मालिकों के पास ही सन्तुष्ट रहना चाहिए था। अब मैं ऐसे मालिक के हाथ पड़ा हूँ, जो जिन्दा भी न छोड़ेगा और मरने पर भी पीछा न छोड़ेगा।

जो अपनी एक अवस्था में असन्तुष्ट रहता है उसको चारों ओर दुःख ही दुःख मिलता है।

मधुमक्खी का डङ्क ❀ ❀ ❀ कहानी १२१

मधुमक्खी सृष्टि के आदि से है। पहले-पहल जब उसने अपना शहद का छत्ता बनाना सीखा तब एक छत्ता बना कर उसे मधु से खूब भर दिया। फिर वह अपनी सफलता दिखलाने के लिए उड़कर स्वर्ग में पहुँची और ब्रह्मा को

अपना बनाया हुआ मधु समर्पण किया। उस पर सन्तुष्ट होकर ब्रह्मा बोले—वर माँग। मधुमक्खी बोली—प्रभो, यदि आप सन्तुष्ट हैं और वर देना चाहते हैं तो यह वर दीजिए कि मेरे एक डङ्क हो जाय। कोई मेरे मधु को लेने आवे तो मैं उसे अपने डङ्क से मार डालूँ। उसकी यह दुष्टता की बात सुनकर ब्रह्मा ने कहा—जा, तेरी इच्छा पूर्ण होगी। पर, तेरा डङ्क किसी का एक-दम प्राण न ले सकेगा, वह तेरे ही नाश का कारण होगा।

दुष्टों से देवता भी अप्रसन्न रहते है।
दूसरे का बुरा चाहना अपने ही लिए बुरा होता है।

शिकारी और मछुआ कहानी १२२

एक शिकारी ने शिकार से लौटते समय देखा कि एक मछुआ मछलियाँ पकड़ रहा है। शिकारी को मछली खाने का शौक हुआ और मछुए को मांस खाने का। दोनों ने अपना अपना शिकार अदल बदल लिया। अब वे रोज इसी तरह अदला-बदली करने लगे। यह देखकर एक आदमी ने उनसे कहा—तुम दोनों रोज रोज इसी तरह करोगे तो शीघ्र ही यह अदला-बदली का शिकार तुम्हें बेमजा मालूम होगा, तब तुम्हें अपने ही शिकार की रुचि फिर होगी।

संयम से ही आनन्द होता है।

एक मादा सारस और उसके बच्चे कहानी १२३

एक सारसी एक खेत में रहती था और वहाँ अपने बच्चों का पालन-पोषण किया करती थी। जब खेत की फसल पक गई तब सारसी को ख़याल हुआ कि अब किसान खेत में कटाई शुरू करेंगे। अब बच्चों को लेकर खेत में रहना अच्छा नहीं। पर बच्चों ने अभी तक उड़ना न सीखा था, इस कारण उन्हें दूसरे स्थान पर ले जाने के लिए और कुछ दिनों तक ठहर जाने की जरूरत थी। इसलिए

अपने घासल से बाहर जाते समय सारसी अपने बच्चों से कह जाती परिस्थिति के समय किसान लोगों की जो कुछ बात चीत सुन पड़े, वह म पर मुझे सुना दिया करो। सुन कर मैं तुम्हारे लिए सब ठीक-ठाक करूँगा

एक दिन जब सारसी बाहर चरने गई थी तब खेत का मालिक खे वह देखने लगा कि अन्न के काटने का समय हुआ कि नहीं। देख भाल कहा—अन्न तो अब पक गया है, उसे अब शीघ्र ही कटवा लेना चाहि मैं अपने पड़ोसियों से जाकर कह दूँ। वे लोग आकर काट-कूट लेंगे। बाहर से चर कर घोंसले में आई तब बच्चों ने जो कुछ सुना था, वह उस कह सुनाया। बच्चों ने सारसी से कहा कि अब हमें किसी दूसरे चलना। सारसी बोली—अभी चिन्तित होने का कोई कारण नहीं। खेत यदि अपने पड़ोसियों का आसरा ताकता है तो खेत कटने में अभी बहुत दे

एक दिन खेत के मालिक ने फिर आकर देखा—अन्न बहुत पक गया उसके पड़ोसियों ने अभी तक कटनी का कुछ भी बन्दोबस्त नहीं किया वह बोला—पड़ोसियों के भरोसे रहने से काम न चलेगा। कल अपने को भेज कर नाज कटा लूँगा। सारसी के घोंसले में आने पर बच्चों ने उसे कह सुनाई और बहुत डर कर वे स्थान बदलने का उससे बार बार अनुरो लगे। सारसी बोली—यदि खेत का मालिक सिर्फ इतना ही कह गया है भी चिन्ता करने का कोई जरूरत नहीं। उसके भाई-बन्धुओं के निजी अपना काम छोड़ कर वे इसका काम करने कब आने लगे। इसर जो कुछ सुना मुझसे कहना। मैं तभी सब बन्दोबस्त करूँगा।

दूसरे दिन सारसी के बाहर जाने पर खेत का मालिक आया। उस कि खेत का नाज पक पक कर नीचे झर रहा है। कोई उसे काटने क अब तक नहीं आया। यह देख कर उसने अपने लड़कों से कहा—अब देर करना ठीक नहीं, दूसरे का भरोसा करने से काम नहीं चलता, आ

भ्रो और गाँव में जितने मजदूर मिलें सबको ठेके पर ले आया। फल सबेरे से र सब मिलकर खेत काटना शुरू करें। बच्चों के मुँह से यह बात सुनकर मालवा ली—अब यहाँ से चलने का समय आगया। जब कोई आदमी दूसरे का सहारा ड़ कर अपने आप ही किसी काम के करने पर उतारू हो जाता है तब यह श्चय है कि वह उस काम को पूरा करने के लिए अवश्य दृढ़ता के साथ लेता है।

र और ह्वेल मच्छ    कहानी १२४

एक शेर ने समुद्र के किनारे फिरते फिरते देखा—पानी के ऊपर एक ह्वेल मच्छ धूप ले रहा है। शेर ने उसे पुकार कर कहा—भाओ जी, हम म दोस्ती कर लें। मैं पशुओं का राजा शेर हूँ और तुम भी मछलियों के राजा ा। मेरी और तुम्हारी दोस्ती खूब निभेगी। ह्वेल मच्छ ने शेर की यह बात बड़े र्ष के साथ स्वीकार की। थोड़े ही दिनों के बाद एक जंगली बैल के साथ शेर की ड़ाई शुरू हुई। शेर ने सहायता लेने के लिए अपने मित्र ह्वेल मच्छ को बुलाया। केन्तु वह, इच्छा होने पर भी, पानी से बाहर मैदान में न आया और न अपने मित्र ी उसने कोई सहायता की। यह देखकर शेर बहुत बिगड़ा। वह ह्वेल मच्छ की मित्रता तोड़ने के लिए खूब धिक्कारने लगा। इस पर ह्वेल ने शेर से कहा—भाई, मुझे धिक्कार न देकर मेरी दशा को धिक्कार दो। मैं जल के भीतर असीम शक्तिमान होने पर भी स्थल पर किसी काम का नहीं।

इच्छा के साथ शक्ति न होने पर कुछ नहीं होता।

कैद में पड़ा हुआ बिगुलची कहानी १२

एक बिगुलची युद्ध के समय शत्रु के हाथ पकड़ा गया। मारनेवालों से विनती करके कहा—महाशयगण, मेरी हत्या न कीजिए, मेरे पास कुछ हथियार नहीं है। मैंने कभी किया और न कभी किसी की हत्या की। कृपा कर आप लोग

न लें। मैं लड़ाई के समय सिर्फ यह बिगुल बजाया करता हूँ। यह सुनकर मारने वालों ने उससे कहा—इसी कारण तो हम लोग तेरी हत्या करते हैं, जो खुद तो अस्त्र धारण नहीं कर सकता किन्तु दूसरों को लड़ाई करने के लिए उत्तेजित करता है, उसका मर जाना ही अच्छा है।

जो लोग लड़ाई झगड़ा करते हैं उनकी अपेक्षा अधिक दुष्ट वही है जो लड़ाई को बढ़ाता है।

पीड़ित कौआ

कहानी १

एक कौआ ऐसा बीमार पड़ा कि उसके जीने की आशा न रही। यह देखकर उसकी माता रोने लगी। माता को रोती हुई देखकर वह बोला—मा, तू रो मत, देवता के पास जाकर मिन्नत कर जिससे मैं अच्छा हो जाऊँ। कौए की मा बोली—हाय बेटा, मैं किस देवता से मिन्नत करूँ, मेरी सुनेगा? हम तो सभी देवी देवताओं का नैवेद्य चुरा कर खा जाते हैं। इसी कारण सब देवता हम पर अप्रसन्न हैं। हमारा नाम ही बलिभुक् रख दिया गया है।

मृत्यु के समय का विलाप जीवन के सारे पाप-कर्मों का यथेष्ट प्रायश्चित्त नहीं है।

शेर और गदहे का शिकार

कहानी १२७

गदहे को लेकर एक शेर शिकार करने चला। पहाड़ की एक गुफा में बहुत से जङ्गली बकरे रहते थे, उसी गुफा के पास दोनों जा पहुँचे। शेर तो गुफा के द्वार पर खड़ा रहा और गदहा उसके भीतर जाकर उछल-कूद मचाकर और छलाँगें मार मार कर रेंकने लगा। बहुत बड़ा उपद्रव होने के कारण बकरे मारे डर के बाहर निकल पड़े। उनके निकलते ही शेर ने उन सबको मार डाला। अब गदहा गुफा से बाहर निकल कर शेर से पूछने लगा—कहो भाई, मैंने

युद्ध में पराक्रम दिखला कर बकरी का मरवा डाला न ? यह सुन कर शेर बोला—सचमुच, यदि मुझे मालूम न रहता कि तू एक गदहा है तो मैं भी डर जाता।

कादर व्यक्ति पीठ के बल से अपना विक्रम दिखलाते हैं।

बलवान् लोग कादर को आगे करके अपना काम निकाल लेते हैं और मन ही मन उसकी हँसी करते हैं।

चमगादड़ — कहानी १२८

एक बार पृथ्वी पर चलनेवाले पशुओं और आकाश के पक्षियों में कुछ वाद-विवाद हो जाने से बड़ी भारी लड़ाई शुरू हो गई। एक बार पक्षी जीतते और दूसरी बार पशु। परन्तु जीत किसी के पक्ष में स्थिर न रहती थी। चमगादड़ न तो पशु है, न पक्षी, उसके पक्षियों जैसा डैना है, और वह उड़ता फिरता है, पर अण्डा नहीं देता। पशुओं की तरह बच्चे जनता है। चमगादड़ अपनी इस विचित्र स्थिति के कारण दोनों दलों से मिला हुआ था। जब जो दल जीतता तब वह उसी में जा मिलता और कहता कि भाई मैं तो तुम्हारे दल का हूँ। अन्त में दोनों दलों में सन्धि हो गई और लड़ाई मिट गई, पर, चमगादड़ की चालाकी देख कर दोनों दलों में से किसी ने उसे अपने में न मिलाया। सबने उसे दुरदुरा कर अपने यहाँ से निकाल दिया। तभी से चमगादड़ अँधेरे में छिपा रहता है। वह दिन को अपना मुँह नहीं दिखाता।

सीसों और लताएँ  कहानी १२९

एक सीसों का दरख्त अहङ्कार के मारे लताओं से कह रहा था—तुम किसी काम के नहीं, पर मेरी बात ही अलग है। यदि मैं न रहूँ तो आदमियों का घर-द्वार बनना भी बन्द हो जाय। यह सुन कर लता (बेल) बड़ी नम्रता के साथ बोली—महाशय, जब लकड़हारे कुल्हाड़ा और आरा लेकर आपके पास आते हैं तब क्या आपको मन ही मन बेल होने की साध नहीं होती ?

नामवरी के अहङ्कार से विपत्ति में पड़ने की अपेक्षा सुरक्षित अवस्था में रह कर अप्रसिद्ध रहना अच्छा है।

प्यासा कबूतर

कहानी ११

एक कबूतर प्यास के मारे उडता उडता इधर-उधर जल ढूँढ रहा था। उसने एक शरबतवाले की दूकान मे साइनबोर्ड के ऊपर एक उब भरे गिलास की तसवीर देखी। गिलास को सचा समझ कर वह जोर से उडक



उस पर बैठने को दौडा, पर लकडी के तख्ते का धक्का खाकर शाम ही नीचे गिर पडा। उसको गिरते देख कर एक मुसाफिर ने पकड लिया।

हठ और शीघ्रता एक चीज नहीं है। आग्रह के वश मे होकर विचार शक्ति से हाथ धो बैठना उचित नहीं।

गीदड और साही का काँटा    कहानी १३१

एक गीदड एक दिन नदी पार कर रहा था। इतने ही मे वह नदी की धारा के जोर से एक खड्ढे में जा फँसा। वह मुर्दे की तरह वहाँ पडा रहा। कोशिश करने पर भी निकल न सका। वहाँ बडे बडे डाँस आकर उसके शरीर पर बैठ गये और अपना डङ्क मार कर उसका लोहू पीने लगे। उसी समय उसी रास्ते से एक साही निकली। वह गीदड की यह हालत देख उस पर दया करके बोली—भाई, तुम्हे ये डाँस काट रहे हैं। मैं इन्हे उडा दूँ? इस पर गीदड घबडा कर बोला—दुहाई तुम्हारी, उन्हें उडाना मत। साही बोली—यह क्या भाई, तुम उनको हटाना नहीं चाहते? उनको रक्त पिलाना तुम्हे पसन्द है? तुम्हारे 'नाहीं' करने का कारण क्या है? गीदड ने कहा—पहला कारण यह है कि इन डाँसों ने बहुत

दर से बैठ कर अपना शक्ति भर लाहू मरे शरीर से चूस लिया है। पेट भर जाने से इस समय ये बहुत कम काटते हैं। तुम यदि इन्हें उडा देगी तो डाँसों का नया झुण्ड आ पहुँचेगा। वह मेरे शरीर का बचा-खुचा लोहू भी पी डालेगा। दूसरा कारण यह है कि डाँसों को उडाने के लिए तुम जो अपने काँटे चलाओगी तो उनके दो एक घाव शरीर पर लगते ही रोग की अपेक्षा आप और अधिक दु:खदायी हो जायगी।

तब हम अपने पुराने शासक या पुराने आश्रित को दूर कर देते हैं तब हमारा दुःख तो होता ही नहीं, हाँ अपने को चूस डालने के लिए नवीन शासक या आश्रित को एक मार्ग खोल देते हैं।

उपकार करने का उद्देश्य रखने पर भी अनेक बार उपकार नहीं किया जा सकता।

भेड़िया और गड़रिया

कहानी १

एक भेड़िया एक रेवड़ के पीछे पीछे बहुत दिनों से फिरा करता। पर, वह किसी प्रकार का कोई शत्रुभाव न दिखलाता था। गड़रिया उसे स्वाभाविक दुष्ट समझ कर पहले ही से सन्देह की दृष्टि से देखा करता। पर, उसने देखा कि भेड़िया इतने समय से उसकी रेवड़ के साथ ही साथ रहता और जानवरों का कोई हानि नहीं पहुँचाता तब वह धीरे धीरे उसे बहुत मित्रभाव से देखने लगा। यहाँ तक कि उसे विश्वास होगया कि मेरी हाजिरी में भी भेड़िया रेवड़ को कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकता। एक गड़रिये को किसी काम के लिए बाहर जाना पड़ा। वह विश्वास करके अपनी भेड़ों की रक्षा का भार भेड़िये को ही सौंप गया। इतने दिनों तक धीरज धारण करने के बाद अब अच्छा मौका हाथ लगते देख कर भेड़िया अपनी इच्छा के अनुसार भेड़ों को मार कर खाने लगा। अन्त में जब उसने जाना कि गड़रिया आज अपने घर से लौटेगा तब वह उसके पहले ही वहाँ से रफूचक्कर हो जङ्गल को चला गया। गड़रिया लौट कर अपनी भेड़ों का हालत देखकर बोला—मैं

· जिस प्रकार मूर्खों की तरह अपनी भेड़ों को भेड़िये के भरोसे छोड़ गया था उसी प्रकार उसका यथोचित दण्ड मुझे मिल गया।

जो शत्रु के कपट को उनके अच्छे व्यवहार के कारण भूल जाते हैं, वे निरे निर्बुद्धि हैं। कपटी मित्र की अपेक्षा खुले लड़नेवाला शत्रु अच्छा है।

साफिर और कुल्हाड़ी

कहानी १३३

दो मुसाफिर एक साथ राह में जा रहे थे। चलते चलते उनमें से एक को राह में पड़ी एक कुल्हाड़ी मिली। वह दूसरे से बोला—देखो दोस्त, मुझे मिला है। यह सुन कर दूसरा बोला—मुझे मिला है, यह न कहो बल्कि यह कहो हमें मिला है। दोनों एक साथ चल रहे हैं जो कुछ मिले वह दोनों ही का है। र पहला मुसाफिर कहने लगा— यह क्यों, मुझे जो कुछ मिला है, वह तुम्हें कैसे यह तो तुम्हारी बड़ी अन्याय की बात है। यह सुनकर दूसरा आदमी चुप रह गया। कुछ दूर आगे चलने पर उसी कुल्हाड़ी का मालिक आ पहुँचा। जिसके हाथ में कुल्हाड़ी थी उसे चोर कह कर उसने पकड़ लिया। पकड़े जाने पर वह आदमी बोला—हाय, अब की बार हम कैसी विपत्ति में पड़े। इस पर उसके साथी ने कहा—हम विपत्ति में पड़े, यह मत कहो, मैं विपत्ति में पड़ा हूँ—यह कहो। जो मित्र को सम्पत्ति का भाग देते मुँह मोड़ता है, उसे विपत्ति का भाग देने का साहस वह कैसे कर सकता है?

ालक और बिच्छू पौदा

कहानी १३४

खेलते खेलते एक बालक का हाथ एक बिच्छू पौदे से लग गया। उसको छूते ही जलन से पीड़ित होकर वह अपनी माँ के पास

गया। माँ से वह कहने लगा—देख माँ, मैंने और कुछ नहीं किया, केवल पौधे को छूते ही उसने मुझे काट खाया। यह सुनकर उसकी माँ बोली—तुमने सिर्फ उसे छू भर लिया, इसी लिए उसने तुम्हें काट खाया। यदि तुम दबा कर उसे वहीं मार डालते तो वह तुम्हें कभी न काट खाता।

शत्रु को कभी थोड़ा न दबाओ, ऐसा होने पर वह अपनी बदला लेने की इच्छा को अच्छी तरह बढ़ा सकेगा। शत्रु को इस तरह दबाना चाहिए जिससे फिर वह अपना सिर न उठा सके और न तुम्हें कोई हानि पहुँचा सके।

चूहे और नेवले

कहानी १३५

चूहों और नेवलों में बहुत दिनों से लड़ाई चल रही थी। हर बार लड़ाई में चूहों की हार होती थी। अन्त में चूहों ने एक बड़ी सभा की और उसमें निश्चय किया कि हमारा कोई उपयुक्त नेता न होने के कारण ही हम बार बार लड़ाई में हार रहे हैं। लड़ाई में फौज को नियमानुसार चलाने के लिए अच्छे अच्छे वीर और साहसी नेता उन्होंने अपने में से चुन लिये। नये निर्वाचित नेताओं ने अपने आपको साधारण चूहों से अलग रखने के लिए अपने अपने सिरों पर फूस के बड़े बड़े झाल पहने। चूहों ने इस बार अवश्य जीतने का निश्चय कर लड़ाई प्रारम्भ कर दी। पर, लड़ाई के शुरू होते न होते ही चूहों की हार हुई। अब जिसे जिधर देख पड़ा वह उधर ही भागा। नवलों ने भी उन्हें रगेदा। चूहे अपने अपने बिलों में घुस कर प्राण बचाने लगे। पर, नेताओं के सिरों पर बड़े बड़े झाल होने से वे बिलों में न पैठ सके। उन्हें पकड़ पकड़ कर नेवले खा गये।

किसी प्रकार की प्रसिद्धि द्वारा भी आनेवाली विपत्ति का पीछा नहीं छुड़ाया जा सकता।

शिकरा और कौआ    कहानी १३६

एक शिकरे ने पहाड़ के शिखर पर बैठकर देखा कि नीचे छोटे छोटे भेड़ के बच्चे चर रहे हैं। तब वह चोंच मार कर उनमें से एक बच्चे को उठा ले गया और पहाड़ के शिखर पर बैठा बैठा उसे खाने लगा। यह देख कर एक कौए को बड़ी ईर्ष्या हुई। उसने मन में सोचा—शिकरा भी पक्षी है और मैं भी पक्षी हूँ। वह ऐसा कर सका तो मैं क्यों न कर सकूँगा? इसी प्रकार सोचकर वह जोर से उड़ा और जाकर उसने एक बड़ी सी भेड़ पर अपनी चोंच मारी। चोंच मारते ही भेड़ के रोमों में उसका पञ्जा फँस गया। उसने प्राणपन से चेष्टा की और पंखों को खूब फड़फड़ाया, पर किसी प्रकार अपने आपको वहाँ से न छुड़ा सका। एक गड़रिया दूर से यह तमाशा देख रहा था। वह हँसता हुआ दौड़ा और कौए को पकड़ कर उसने उसके पंख काट दिये। रात के समय गड़रिया जब अपने घर गया तब कौए को ले जाकर उसने अपने लड़कों को दिया। उसके लड़कों ने पूछा—दादा, यह कौन सी चिड़िया तुम लाये हो? गड़रिया हँसकर बोला—मैं तो इसे कौआ जानता हूँ, किन्तु इससे पूछो तो यह अपने को शिकरा बतलायेगा।

गदहा और कुम्हार    कहानी १३७

एक आदमी सड़क पर अपने गदहे को लिये जा रहा था। गदहा सीधा रास्ता छोड़ कर एकाएक एक खड्ड की तरफ दौड़ा। कुम्हार ने उसके लौटाने की बड़ी चेष्टा की पर वह किसी तरह न मुड़ा। गदहा खड्ड में गिरने ही पर था कि कुम्हार ने उसकी गर्दन पकड़ कर उसे खींचना शुरू किया। उसे मौत से बचाने के लिए वह जमीन की [illegible] लगा पर गदहे ने अपना हठ किसी तरह न छोड़ा। अन्त में कुम्हार जब [illegible] थक गया तब उसने गदहे का गला छोड़ दिया।

गदहा एक दम खड्ड में गिर कर चकनाचूर हो गया। उसको लक्ष्य कर कुम्हार



बोला—जा, जो अपनी जिद नहीं छोड़ता तो खड्ड ही मे जा, मैं और कुछ न करूँगा। एक गदहे के भाग्य में अध पात ही लिखा है।

छोटे और बड़े    कहानी १३८

एक मछुआ जाल डाल कर समुद्र में मछलियाँ मार रहा था। जाल में छोटी बड़ी कई प्रकार की मछलियाँ आ फँसती थीं। पर छोटी मछलियाँ तो जाल के छेदों से निकल कर भाग जाती थीं और बड़ी मछलियाँ जाल में फँसा रह जाती थीं।

छोटी अवस्था में रहना अनेक अवसरों पर बड़ा लाभकारी होता है।

लकड़हारा और यम

एक गरीब बूढा जङ्गल से लकडी काट कर शहर में बेचता और निर्वाह करता था। एक दिन एक बड़ा भारी बोझा सिर पर रख बहुत दूर से रास्ते में चलता चलता वह थक गया। थक कर उसने बोझा नीचे



दिया और रास्ते में एक ... । दु खी होकर वह कहने लगा—यमराज, तुम

मुझे क्यों भूल गये हो ? कृपा कर शीघ्र आओ और मेरा दु ख-दर्द एक बार मिटा दो। बुड्ढे की यह बात समाप्त भी न हो पाई थी कि यमराज साक्षात् उस सामने आकर खड़े हो गये। बुड्ढा यम की प्रकाशमान मूर्ति देखकर डर गया और उनसे डर के मारे पूछने लगा—महाशय, आप कौन हैं ? यमराज बोले—मैं यम तुम मुझे बुला रहे थे, इसी से मैं तुम्हारे पास आया हूँ। कहो, मैं क्या करूँ ? बु बोला—महाशय, यदि आप आये हैं तो कृपा कर मेरा यह बोझा मेरे सिर पर उ दें, यही मुझ पर आपका उपकार होगा। यह सुनकर यमराज मुसकराये औ वहीं अन्तर्धान हो गये।

मौत मांगना सहज है, पर प्रसन्नता के साथ उसका आलिङ्गन करना कठिन है।

शिकारी और तीतर

कहानी १४०

एक शिकारी के जाल में एक तीतर आ फँसा। प्राण जाने के भय से कातर होकर वह शिकारी से कहने लगा—भाई शिकारी, तुम मुझे दया करके छोड़ दो, मैं सौगन्द खाकर प्रतिज्ञा करता हूँ कि जो तुम मुझे छोड़ दोगे तो मैं सैकड़ों तीतरों को धोखा देकर तुम्हारे जाल में फँसवा दूँगा। ऐसा होने पर तुम एक चिड़िया के बदले कितनी ही चिड़ियाँ पा जाओगे। शिकारी बोला—मैं तुमको बिना कहे ही छोड़ देता, पर अब तुम्हारी बात सुनकर तुम्हें छोड़ना मैं ठीक नहीं समझता। जो अपनी जातिवालों को विपत्ति में डालकर अपना बचाव करना चाहता है उसका मरना ही अच्छा है।

हरिण और अङ्गूर का बागीचा

कहानी १४१

शिकारी के पीछा करने पर एक हरिण एक अङ्गूर के बागीचे में जा छिपा। बागीचे के पास होकर शिकारी निकला, पर पत्तों की गहरी आड़ म वह हरिण को न देख सका। हरिण ने अब अपने आपको विपत्ति से बच गया समझ

लिया। इसी लिए वह भूख के मारे बागीचे के अगूर की लताओं के पत्ते चबाने लगा। पत्तों के चबाने की खचमच आवाज सुनकर शिकारी लौट पड़ा और उसने अगूर के बागीचे में हरिण को देख कर गोली से मार डाला। मरते समय हरिण कहने लगा—मुझे उपयुक्त दण्ड मिल गया। मैं जिस प्रकार अकृतज्ञ होकर बागीचे की लताओं के पत्ते खा रहा था, उसी प्रकार मुझे उसकी पूरी सजा मिली।

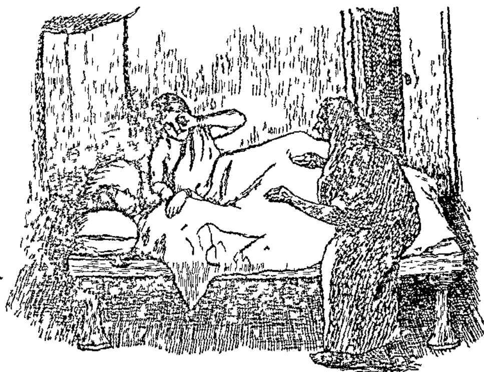
कञ्जूस    **कहानी १४२**

एक कञ्जूस के कुछ धन था। उसे हमेशा डर लगा रहता था कि ससार भर के सारे चोर और डाकू मेरे ही धन पर नजर लगाये हैं, न मालूम कब आकर वे लूट लेंगे। उसने अपने धन को विपत्ति से बचाने के लिए सोने की एक ईंट खरीदी। अपना सब कुछ बेचबाँच कर उस ईंट को उसने घर के एक गुप्त स्थान में गाड़ रक्खा। परन्तु इतने पर भी सन्तुष्ट न होकर वह रोज उस स्थान पर जाकर देखता कि कोई सोने की ईंट को चुरा तो नहीं ले गया। उसको इस प्रकार रोज रोज एक निर्दिष्ट स्थान पर जाते देखकर उसके एक नौकर को कुछ सन्देह हुआ। वह अवसर पाकर एक रात उसी स्थान पर गया और खोदकर सोने की ईंट निकाल ले गया। कञ्जूस अपने नियमित समय पर जब उस स्थान पर पहुँचा जहाँ ईंट छिपी हुई थी तो देखा कि ईंट को कोई चुरा ले गया है। तब रञ्ज के मारे पागल-सा होकर वह बड़े जोर जोर से रोने चिल्लाने लगा। उसका यह रोना चिल्लाना सुन कर एक पड़ोसी उसके पास आया और उसके दुःख का कारण पूछने लगा। अन्त में उसने कञ्जूस को पत्थर का एक टुकड़ा देकर कहा—भाई अब और रोओ चिल्लाओ मत, यह पत्थर का टुकड़ा इसी जगह गाड़ दो और मन में समझ लो कि वह तुम्हारी सोने की ईंट ही गड़ी है। क्योंकि जब तुमने निश्चय कर लिया है कि उससे कोई लाभ न उठाओगे तब तुम्हारे लिए जैसी सोने की ईंट है वैसा ही पत्थर का टुकड़ा। धन का उपयोग न करने से धन का होना और न होना एक-सा है।

बुढिया और उसकी दासियाँ

कहानी १४२

एक कमखर्च बुढिया के दो दासियाँ थीं। वह उन्हें बडे तडके, मुरगे की आवाज होते ही, जगा कर काम में लगा देती थी। दासियाँ बडे तडके जागना बुरा समझ कर सब बुराइयों की जड मुरगे को समझ उस पर बहुत बिगडीं। उन्होंने एक दिन मौक़ा पाकर मुरगे का गला घोंट डाला और समझा कि



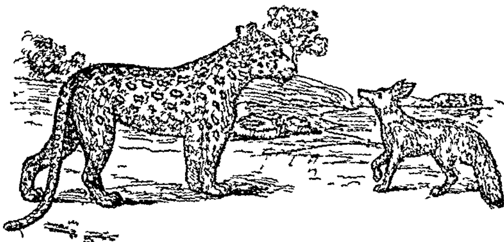
अब विपत्ति टली, न मुरगा बाँग देगा और न मालकिन इतने तडके जागेगी। पर, मालकिन बडे तडके जाग जाने की इच्छा से हमेशा बडा फ़िक्र के साथ रात को सोती थी। वह मन में सोचे रहती कि कहीं उठने का समय न हो जाय, इसी से

रात का कोई परिमाण न समझ कर वह आधी रात को ही जाग कर दासियों को जगाने लगी।

बुद्धि की अत्यन्त अधिकता भी नाश का कारण होती है।

चीता और गीदड़ ✢ ✢ ✢ कहानी १४४

एक चीते और गीदड़ के बीच यह विवाद पैदा हुआ कि दोनों में कौन अधिक सुन्दर है। चीता अपना पक्ष समर्थन करने के लिए अपने



शरीर की रङ्ग बिरङ्गी चित्तियाँ दिखला कर घमण्ड करने लगा। इस पर गीदड़ बोला—किन्तु देह की विचित्रता से मन की विचित्रता अधिक कल्याणकारी है।

कुत्ता और खरगोश ✢ ✢ ✢ कहानी १४५

एक खरगोश को पकड़ने की एक कुत्ता कोशिश कर रहा था। देर तक उसके पीछे दौड़ते दौड़ते अन्त में उसने उसका गला पकड़ कर धर दबाया। कुत्ते के नुकीले दाँत लगते ही खरगोश के कोमल शरीर से लोहू बह निकला। जहाँ

से लोहू बह रहा था, वहीं, घाव को कुत्ता चाटने लगा। खरगोश ने कुत्ते का यह व्यवहार देख आश्चर्य के साथ उससे कहा—तुम मेरे दोस्त हो या दुश्मन? अगर दोस्त हो तो मुझे दबोच क्यों रहे हो? और जो दुश्मन हो तो मेरा शरीर चाट कर इतना सम्मान करने की ही क्या आवश्यकता है? जो हो, एक तरह का व्यवहार करो, मुझे दुविधा में न डाल रक्खो।

यथार्थ में मित्र है कि नहीं? इस प्रकार के सन्देहयुक्त मित्र की अपेक्षा पक्का शत्रु ही अच्छा है। किसी मनुष्य का ठीक परिचय पाकर उसके साथ उसी प्रकार का व्यवहार किया जा सकता है।

शेर, रीछ और गीदड़ — कहानी १४६

एक हरिण के बच्चे की लाश पर अपना अधिकार जमाने के लिए एक शेर और एक रीछ दोनों झगड़ने लगे। अन्त में दोनों बड़े जोर शोर से परस्पर भिड़ गये। दोनों एक-से बलवान् थे, लड़ाई में कोई किसी को नहीं हरा



सका। पर, लड़ते लड़ते थक जाने के कारण दोनों जमीन पर गिर पड़े और हाँपने लगे। जिस हरिण के बच्चे की लाश के पीछे इतनी लड़ाई हुई थी, उसे उनमें से कोई न छू पाया। एक गीदड़ दूर से यह सब तमाशा देख रहा था। उसने अब

देखा कि शेर और रीछ दोनों लोहू-लुहान होकर मुर्दे की तरह जमीन पर पड़े हैं अतएव दोनों के मुँह का कौर उठा कर वह वहाँ से भाग चला। इस पर शेर और रीछ दोनों पछता कर कहने लगे—हाय, हम लोग कैसे अभागे हैं, इतनी देर तक हम आपस में लड़े और मर मिटे तो क्या इसी बदमाश के लिए खूराक खोजने को ?

कहानी १४७

किसान और बगला   

कितने ही बगले एक खेत मे चुगने जाते थे, उस खेत म अभी अभी नया अन्न बोया गया था। बगलों को डर दिखाने के लिए किसान जोर जोर से गोफन तो फिराता था, पर उसमे पत्थर रख कर न फेंकता था। बगले पहले-पहल डरा करते, पर जब उन्होंने देखा कि किसान खाली गोफिया घुमाता है तब वे बिलकुल निडर हो गये। अन्त में किसान ने गोफन-द्वारा पत्थर फेंक फेंक कर कितने ही बगलों को मार डाला। बचे हुए बगले अब परस्पर कहने लगे—चलो भाई, अब कहीं अन्यत्र चलें, अब यह आदमी हम लोगों को सिर्फ डरवा कर ही शान्त नहीं होता, इसका व्यवहार देखने से मालूम होता है कि अब यह हम लोगों को सचमुच ही मारना चाहता है।

जब बात नहीं मानी जाती तब बल का परिचय देना ही पड़ता है।

कहानी १४८

पीड़ित सिंह   

एक सिंह बुढ़ापे के कारण बलपूर्वक शिकार करने में असमर्थ हो गया। उसने सोचा कि अब चालाकी से काम लेकर अपनी गुजर करनी चाहिए। इसलिए वह एक गुफा मे जाकर पड़ रहा और जङ्गल के जानवरों को खबर करा दी कि सिंह बहुत बीमार है। सिंह की इस कठोर बीमारी से दुःखी होकर एक एक करके सभी पशु कुशल-समाचार पूछने के लिए उसके

लगे। सिंह उन्हें आसानी से मार कर खा जाता। इस प्रकार सरलता से बच भोजन करते करते शेर खूब मोटा ताजा हो गया। इस पर एक गीदड को कुछ सन्देह हुआ कि हो न हो, सिंह कोई चालाकी करता है। वह सच झूठ का भेद लेने के लिए एक दिन वहाँ जा पहुँचा। गुफा के सामने पहुँच कर गीदड दूर से ही पूछने लगा—महाराज, आज आप कैसे हैं? सिंह ने धीमी आवाज से रुक रुक कर कहा—भाई, आज तो मरने के करीब पहुँच चुका हूँ। तुम तो मेरे प्यारे भाई गीदड हो, तुम इस प्रकार गैर के मुआफिक बाहर खडे खडे क्या पूछ रहे हो? गुफा के भीतर आओ। तुम लोगों को देखते ही मुझे बहुत कुछ आराम हो जाता है। गीदड बोला—जी हाँ हुजूर, ईश्वर आपको आराम करे। पर क्षमा कीजिएगा, मैं गुफा के भीतर नहीं आ सकता। सच बात तो यह है कि गुफा के द्वार पर पशुओं के पञ्जों के चिह्न भीतर ही की ओर गये हैं, बाहर लौटे हुए एक भी पशु के पञ्जों के चिह्न नहीं दिखाई देते। यही देख कर भीतर आने को मेरा जी नहीं चाहता। हुजूर सलाम, मैं चला।

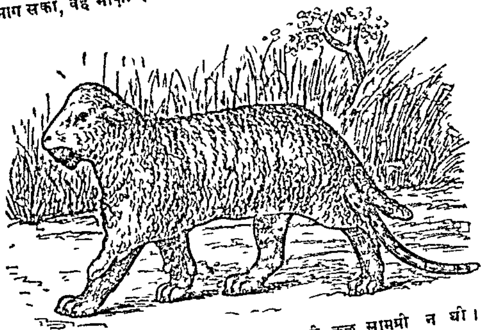
किसी कार्य में लग जाने की अपेक्षा उसको समाप्त करके उससे अलग होना बहुत कठिन है। इसी लिए किसी कार्य में हाथ लगाने के पहले उससे छुटकारा पा जाने का मार्ग देख रखना बुद्धिमान् का काम है।

भेड का चमडा धारण करनेवाला बाघ

  कहानी १४६

बाघ का स्वभाव बहुत ही दुष्ट और हत्यारा होता है। इस कारण कोई उस पर विश्वास नहीं करता, उसे देखते ही सब दूर दूर कर मार भगाते हैं। इससे उसे अपना पेट पालना भी बड़ा मुश्किल हो जाता है। सरलता-पूर्वक आहार मिल सके इसके लिए एक बाघ ने पोशाक के नीचे अपने स्वभाव को छिपा लेना चाहा। वह कहीं से एक भेड का चमडा ढूँढ लाया और उसी से अपना सारा शरीर ढक कर भेडों के रेवड में जा घुसा। उसने भेड के चमडे से इस प्रकार

शरीर छिपाया था कि गडरिया भी उसे न पहचान सका। शाम के वक्त
भेडों को चरा कर घर लौटा और उन्हें बाडे के अन्दर कर दिया। भेडों के
साथ बाघ भी बाडे में चला गया। बाडे का फाटक बन्द होने के कारण बाघ
न भाग सका, वह मौक़ा देखता रहा कि फाटक खुलते ही एक भेड लेकर भाग



जाऊँ। उस रात का गडरिये के घर में भोजन की कुछ सामग्री न थी। इससे
उसने एक भेड को हलाल करना चाहा। बाडे में जाकर उसने बाघ को ही भेड
समझ कर पकडा और उसको किसी प्रकार की बाधा पहुँचाने के पहले ही, गडरिये
ने उसका गला काट कर जमीन पर डाल दिया।

कहानी १५०

लडका और बादाम

काँच की चै ~वाली एक बोतल में कुछ बादाम थे। एक लडके ने
समें से मुट्ठी भर बादाम निकालना चा ... पर,

बादाम मुट्ठी में अधिक होने से लड़के का हाथ शीशी के भीतर ही अटक रहा। बहुत खींचा तानी की, पर कुछ न हुआ। मुट्ठी खोल कर बादाम भी नहीं छोड़ना चाहता और इस कारण हाथ भी बाहर नहीं निकलता। इससे खीझ कर लड़का जोर जोर से रोने लगा। एक आदमी खड़ा खड़ा लड़के का यह तमाशा देख रहा था। वह हँस कर बोला—मुट्ठी के आधे बादाम छोड़ कर आधे ही पर तुम यदि सन्तुष्ट हो जाओ तो अभी तुम्हारा हाथ बोतल से निकाल दूँ।



एक बार में ही बहुत अधिक पा जाने की इच्छा रखना ठीक नहीं।
सर्वनाशे समुत्पन्ने अर्द्धं त्यजति पण्डितः।

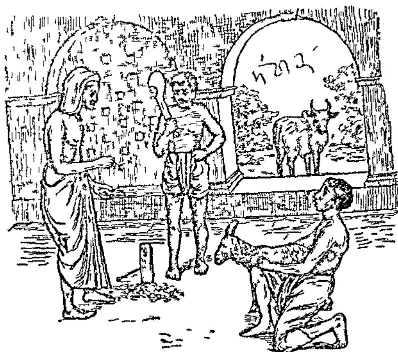
बाघ और घोड़ा

कहानी १५१

एक बाघ ने फिरते फिरते चने का एक खेत देखा। खेत खूब पका था। पर, चने तो बाघ खाता नहीं, इससे वह बड़ा दुःखी हुआ। दुःखित होकर खेत से लौटते समय बाघ ने देखा—एक घोड़ा आ रहा है। वह दौड़ कर घोड़े के पास गया और उससे कहने लगा—आओ भाई, आओ, मैं तुम्हें ही ढूँढ़ रहा था। चलो तुम्हें खूब फले हुए चने के खेत में ले चलें। मैं तुम्हारी ही बाट जोहता रहा, मैंने एक भी दाना मुँह में नहीं दिया। भाई, देखो मैं तुम्हें कितना चाहता हूँ। मैं देखता ही रहूँगा और तुम चने खाओगे तो मुझे कितना सुख होगा। चने खाते समय तुम्हारे दाँतों का मस मस शब्द मेरे कानों को बाँसुरी के सुर की तरह मनोहर और मीठा लगेगा। इस पर घोड़ा बोला—भाई, हैं तो आप भले मानुस। पर, यदि बाघ चना खा सकता तो मैं समझता हूँ कि आप क्षुधा को शान्त करने के बजाय कानों ही को शान्त करके न रह जाते।—

जो अपनी बेजरूरी चीज दूसरे को देते हैं, वे थोड़े ही धन्यवाद के पात्र हैं।

हो मैं कैसा स्वतन्त्र हूँ और बिना किसी काम काज के रहता हूँ। तुम सबेर से शाम तक गर्दन पर जुआँ रक्खे मरे मिटते हो, तुम्हें इसमें शर्म नहीं मालूम होती। बकरे का ये अपमानजनक बातें सुन कर बैल कुछ न बोला। शीघ्र ही एक पर्व का दिवस आ पहुँचा। पर्व के उपलक्ष्य में बैल को तो काम से छुट्टी मिली, और बकरे को



बलि देने के लिए लोग ढूँढकर पकड़ ले गये। यह देख कर बैल बोला—बिना किसी काम-काज के और स्वतन्त्र रहने का यदि यही परिणाम है तो उससे, सुबह से शाम तक खेत में काम करके मर मिटना ही अच्छा है। गले पर छुरी फेरे जाने के बजाय जुएँ का रक्खा जाना बहुत कुछ अच्छा।

एक दम जड़ जाने की अपेक्षा थोड़ा-सा दाग लग जाना बहुत अच्छा है।

बाड़ और दाख का खेत    कहानी १६१

एक नासमझ नौजवान को अपने पिता की सारी जायदाद का अधिकार मिल गया। अधिकार मिलने पर उसने एक रोज देखा कि एक दाख के खेत के चारों तरफ काँटों की बाड़ रोपी हुई है। काँटों की बाड़ में कोई फल नहीं लगता। यह सोचकर उसने उन्हें खेत से उखाड़ कर बाहर फेंक देने की आज्ञा दे दी। बाड़ न रह जाने से मनुष्य और पशु सब इच्छानुसार खेत में जा जाकर दाख के फलों और बेलों को बरबाद करने लगे। अब इस नासमझ को सूझा कि दाखें प्राप्त करने की इच्छा रखने पर उसके खेत की रक्षा करना भी बहुत जरूरी है। साथ ही जिसका जितना काम है, उसका उतना ही पूरा कर देना बहुत ठीक है, उससे और अधिक की आशा करने पर धोखा खाना पड़ेगा।

कुत्ते और गीदड़    कहानी १६२

कितने ही कुत्ते एक व्याघ्रचर्म को एक जगह पड़ा देख कर उसे अपने अपने दाँतों से इधर उधर नोचने-चींथने और खींचने तानने लगे। एक गीदड़ ने यह देखकर उनसे कहा—यह बाघ यदि जीवित होता तो तुम्हें अच्छी तरह दिखला देता कि तुम्हारे दाँतों की अपेक्षा उसके पञ्जे की एक थपेड़ ही कितनी मजबूत है।

विपत्ति में पड़े हुए बलवान् की भी अवहेला करना सहज है।

घोड़े की छाया    कहानी १६३

एक आदमी ने बहुत गरमी पड़ने के समय एक जगह से दूसरी जगह जाने के लिए एक किराये का घोड़ा किया। दोपह[illegible] की गरमी तेज हो जाने पर उस आदमी ने घोड़े से उतर कर उ[illegible] । क्योंकि उस

न में छाया के लिए पेड आदि कुछ न था। उस घोडे का मालिक भी घोडे के साथ



पैदल आ रहा था। वह घोडे के किरायेदार को घोड की छाया में बैठा देख उसे रोक कर बोला—तुम घोडे की छाया मे न बैठने पाओग, वहाँ मैं बैठूँगा, क्योंकि



घोडा मेरा है। इस पर किरायेदार ने कहा—वाह र वाह, जब मैंने घोडा भाड पर लिया है, तब वह नियत समय तक मेरे ही काम आवेगा, बस पर तुम्हारा कोई

अधिकार नहीं। घोड़े के मालिक ने कहा—मैंने तुम्हें घोड़ा ही किराये पर दिया है, घोड़े की छाया नहीं। इस प्रकार दोनों में जब परस्पर वाद-विवाद बढ़ा तब दोनों घोड़े की छाया पर अपना अपना अधिकार जमाने के लिए खींचा-तानी और मार पीट करने लगे। इस ओर मौक़ा पाकर घोड़ा छूट कर एक-दम तेज़ी से भागा और फिर उसका पता न चला।

काया छोड़ कर छाया के लिए वाद विवाद करने पर छाया तो मिलेगी ही नहीं, काया भी हाथ से निकल जायगी।

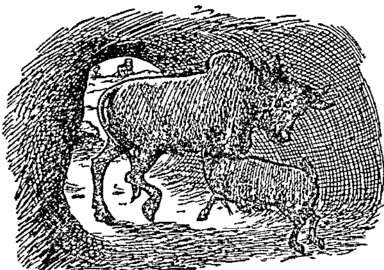
बिल्ली और मुरगा    कहानी १६४

बिल्ली ने एक मुरगे को पकड़ा। बिना दोष लगाये किसी को मारना ठीक नहीं। अतएव कुछ दोष लगा कर मुरगे को मारना न्यायसङ्गत समझ कर बिल्ली चालाकी के साथ मुरगे से कहने लगी—तू मनुष्यों के लिए कण्टक-रूप है, रात को तेरी चिल्लाहट से दुःखी होकर वे सुख की नींद भी नहीं सो सकते। अपना पक्ष सिद्ध करने के लिए मुरगा कहने लगा—मनुष्यों के फायदे के लिए ही मैं रात रहते ही चिल्लाने लगता हूँ। मेरी आवाज सुनकर ठीक समय पर वे अपने कामों पर लगने के लिए जाग पड़ते हैं। यह सुन कर बिल्ली बोली—तेरी बात ठीक है, पर इससे तो मैं भूखी नहीं बैठी रह सकती। यह कह कर फौरन वह मुरगे का गला मरोड़ कर उसे चट कर गई।

साँड और बकरा    कहानी १६५

एक साँड, सिंह के डर से भाग कर, एक गुफा में जा छिपा। उसी गुफा में एक बकरा भी रहता था। उसने साँड को गुफा में आते देख अपने सींगों से मार मार कर उसे हैरान कर दिया, साँड इस पर भी कुछ न बोला। यह

रा कर बकरा उसे और भी अधिक मारने लगा। इस पर साँड बोला—मैं तुम्हारा तना अत्याचार जो सह रहा हूँ उससे यह मत समझ लेना कि मैं तुम्हारे ही डर



स चुपचाप हूँ। जरा सिंह को चला जाने दो, तब मैं तुम्हें बतलाऊँगा कि साँड और बकरे के बल में क्या फर्क है।

छोटे आदमी अपने बड़े पड़ोसी को, उसकी विपत्ति के समय, दुःख देते हैं। पर, जब फिर बड़े का समय आता है तब उन्हें अपने किये का फल मालूम हो जाता है।

कहानी १६६

शेर, चूहा और गीदड़

एक शेर एक स्थान पर पड़ा हुआ सो रहा था। इतने ही में एक चूहा उसके ऊपर होकर निकल गया। इससे शेर बहुत नाराज हुआ। वह अपनी लम्बी लम्बी मूँछें खड़ी करके चूहे को इधर-उधर ढूँढ़ने लगा। एक गीदड़ दूर बैठा बैठा यह हाल देख रहा था। वह शेर को इस प्रकार घबड़ाया हुआ देख कर बोला—

तुम तो पशुओं के राजा हो । एक साधारण चूहे की देख कर तुम्हे इतना डर क्यां है ? यह सुन कर शेर बोला—मुझे डर नहीं लगा, मैं तो चूहे की ढिठाई देख कर गुस्सा हुआ हूँ ।

घोडा और गदहा    कहानी १६७

एक आदमी के यहाँ एक घोडा और एक गदहा था । वह उन पर बोझा लाद कर एक शहर से दूसरे शहर में व्यापार किया करता था । एक दिन वह एक शहर से कुछ माल खरीद कर दूसरे शहर को जाते समय एक पहाडी रास्ते पर पहुँचा । कितने ही दिनों से गदहा कुछ बीमार सा था । समथल जगह में तो वह ज्यों त्यों करके बोझा लादे चल सकता था, पर ऊँचे-नीचे पहाडी रास्ते पर चलने में उसे बडा कष्ट हुआ । उसने घोडे से प्रार्थना की कि तुम मेरे बोझे का कुछ भाग थोडा दूर तक लेते चलो । परन्तु घोडा यह सुन कर बडा नाराज हुआ । वह गदहे से कहने लगा—तुम बीमार हो तो मुझे क्या ? मैं क्यों तुम्हारा बोझा लादूँ ? गदहा इस पर कुछ न कह कर आगे बढने लगा । परन्तु बीमारी के ऊपर बोझ के भार और उस पर भी ऊँचे नीचे पहाडी रास्ते पर चलने से वह शीघ्र ही जमीन पर गिर पडा और मर गया । अब उस व्यापारी ने और कोई उपाय न देख गदहे की पीठ का सारा बोझ भी घोडे पर लाद दिया । गदहे का चमडा बेचने से भी कुछ लाभ होगा, यह सोचकर उसने घोडे के बोझ के ऊपर गदहे की लाश भी रख दी । इस पर घोडा बडे दुःख से कहने लगा—मुझे मेरे बुरे स्वभाव का उचित दण्ड मिला । उस वक्त मैंने गदहे के बोझ का थोडा सा हिस्सा लेना भी अस्वीकार कर दिया था, और इस वक्त मुझे उसका सारा बोझ तो ढोना ही पडा, स्वयं वह भी मेरे ऊपर बोझ की तरह लदा हुआ है ।

नमक ढोनेवाला बैल

एक आदमी नमक का कारबार करता था। वह बैल लेकर समुद्र के किनारे नमक खरीदने जाता। वहाँ से बैल पर नमक लाद कर वह बाजार को लाता और वहाँ बेचता था। बाजार जाने के रास्ते में एक छोटी सी नदी पड़ती थी, नदी में जल अधिक न रहता था। सब लोग पैरों पैरों उसे पार करते थे। एक रोज नदी पार करते समय बैल का पैर फिसल गया और वह पानी में गिर पड़ा। इससे बैल पर जो नमक लदा था वह पानी मे भीग गया। नमक के पानी में भीग कर गल जाने से बैल का बोझ बहुत कुछ हलका हो गया। यह देख कर बैल ने मन में सोचा—अहा, कैसा मजा हुआ। जल में पड़ते ही मेरी पीठ का बोझ कम हो गया। उसके दूसरे दिन फिर भी बैल को नमक लाद कर नदी पार करना पड़ा। इस बार बैल जान बूझ कर जल में गिर पड़ा। इस प्रकार चालाकी करके उसने अपनी पीठ का बोझ बहुत कुछ कम कर लिया। उस दिन से बैल रोज बदमाशी करके, बोझ के साथ जल में बैठ जाने लगा। तीन चार दिन लगातार इसी तरह बैल को बदमाशी करते देख व्यापारी उसकी चालाकी को समझ गया। बार बार इस प्रकार की चालाकी से हानि उठाकर बैल को सजा देने के लिए एक दिन उसने बहुत सी रुई खरीद कर उसकी पीठ पर लाद दी। और और दिनों जितना नमक वह लादता था उस दिन उससे दूनी रुई बैल पर लाद दी। बैल रोज की तरह आज भी नदी के जल में बैठ गया। परन्तु आज उस व्यापारी आदमी ने उसे दूसरे दिन की तरह जल से जल्दी न उठाया। देर तक जल में भीगने से रुई खूब फूल उठी। इसी कारण, पानी में डूबने के पहले बैल की पीठ पर जितना बोझ था, इस समय उसके दूने से भी अधिक होगया। बैल को आज जब इतना भारी बोझ उठाना पड़ा तब उसे अपनी चालाकी का पूरा फल मालूम हुआ।

हर बार एक ही रास्ते पर चलने से काम नहीं चलता।

ज्योतिषी कहानी १

एक ज्योतिषी रोज रात को आकाश के ग्रहों और नक्षत्रों को दे
हुआ घूमा करता था। एक रात को ऊपर की ओर मुँह उठाये जब
चल रहा था तब एक गहरे कुएँ में गिर गया। कुएँ में गिरते ही वह चिल्ला



कर अपनी सहायता के लिए आदमियों को पुकारने लगा। उसकी पुकार सुन कर

एक आदमी कुएँ के पास आया और पूछने लगा कि यहाँ आप किस तरह गिर पड़े। ज्योतिषी ने उस ज्यों का त्यों सब हाल कह सुनाया। उसकी बात सुनकर वह आदमी बोला—वाह भाई, तुम्हें यही नहीं मालूम कि जिस मार्ग पर चलते फिरते हो उस पर कहाँ क्या है, इस दशा में आकाश की बातें जानने के लिए क्यों इतने उद्विग्न हो रहे हो ?

दो स्त्रियों का पति    कहानी १७०

एक अधेड़ उम्रवाले आदमी के दो स्त्रियाँ थीं। उनमें से एक तो पति की उम्र के करीब थी और दूसरी छोटी उम्र की। बड़ी स्त्री के बाल कुछ कुछ सफेद हो चले थे। छोटी स्त्री की इच्छा थी कि स्वामी मेरी ही उम्र का दीख और बड़ी स्त्री चाहती कि वह मेरे जैसा हो जाय। इस इच्छा के कारण ही छोटी स्त्री को जब मौका मिलता तब वह पति के सफेद बालों को नोचती और बड़ी जब मौका पाती तब काले बालों को। कुछ दिनों में बेचारे स्वामी ने देखा कि उसके सिर पर एक भी बाल नहीं रह गया।

सबकी इच्छा पूरी होने पर अपनी इच्छा पूरी नहीं होती।

बिल्ली और चिड़ियाँ    कहानी १७१

एक बिल्ली डाक्टरनी बन कर चिड़ियों के घोंसलों में पहुँची। वहाँ उसने चिड़ियों से कहा—अरी, तुम सब कैसी हो। अगर किसी को कुछ तकलीफ हो तो मैं आनन्द के साथ उसकी दवा करने को तैयार हूँ। यह सुनकर चिड़ियों ने उत्तर दिया—कृपा कीजिए महाशया, हम अच्छी हैं और रहेंगी भी अच्छी—बशर्ते कि आप ~ ~ कर इधर तशरीफ न लाएं।

लडाई का घोडा और व्यापारी ❀ ❀ ❀ कहानी १७२

एक लडाई का घोडा बुड्ढा होने से लडाई के काम का न रहा । इस कारण उसे एक व्यापारी ने अपने काम के लिए माल ले लिया । व्यापारी घोडे पर व्यापार की चीज लाद कर बाजार ले जाता और वहाँ बेचता था। एक रोज बाजार जाते समय घोडा दु ख के साथ कहने लगा—हाय भाग्य, था मैं वीर का सहायक, लडाई का घोडा और हो गया व्यापारी की गोन ढोनेवाला । घोडे का यह बात सुन कर व्यापारी उससे कहने लगा—बीते हुए सुख के दिनों को सोचकर दु ख न करना। इस ससार का नियम ही है—सब दिन जायँ न एक सम ।

गीदड और बन्दर ❀ ❀ ❀ कहानी १७३

पशुओं की एक सभा हुई । वहाँ सभ्यों को सन्तुष्ट करने के लिए बन्दर नाचने लगा। बन्दर का नाच देख कर सब लोग उस पर बडे प्रसन्न हुए और उन्होंने उसे अपना राजा बनाया। बन्दर को इतने सस्ते इतना सम्मान पाते देख कर एक गीदड मन म बडा कुढा। एक दिन उसने देखा, एक जगह एक जाल लगा हुआ है और उसके भीतर कई तरह की खाने की चीजें रक्खी हुई हैं। तब जल्दी से वह बन्दर के पास दौड गया और उससे कहने लगा—महाराज, एक जगह कई तरह की अच्छी अच्छी खाने की चीजें रक्खी हुई हैं मैं अभी अभी देख कर आ रहा हूँ। वे चीजें राजा के काम में आने लायक हैं, यह सोच कर उन्हें मैंने स्वय नहीं खाया और हुजूर को खबर देने आया हूँ। बन्दर खाने के लोभ में आकर गीदड के साथ वहाँ जा पहुँचा और ज्यों ही हाथ डाल कर जाल से चीजें निकालने लगा त्यों ही उसका हाथ फँस गया । इस पर बन्दर ने गीदड को बहुत कुछ भला-बुरा सुना कर उससे कहा—तूने मुझे जान-बूझ कर इस विपत्ति में डाला है। गीदड बोला—अबे बेवकूफ, तू इसी बुद्धि से पशुओं का राजा बन कर उन पर शासन करना चाहता था ?

अदालत में मेढ़की    कहानी १७४

एक मेढ़की अदालत के दरवाजे के कोने पर एक बिल म रहा करती थी। उसके वहाँ कुछ बच्चे भी पैदा हुए। एक रोज एक साँप उसके बिल में आकर उसके कुल बच्चों को खा गया। इस पर मेढकी को बड़ा दु ख हुआ। वह विलाप करके कहने लगी—हाय, मरा कैसा दुर्भाग्य है। जहाँ सब लोग अपना अपना हक हासिल करते हैं, वहीं मेरा सत्यानाश होगया।

बन्दर का बच्चा    कहानी १७५

एक दिन वनदवता ने जङ्गल के सारे जानवरों को सूचना दी कि पशुओं में से जिसका बच्चा सबसे अधिक खूबसूरत होगा, उसे एक बहुत उमदा ... म मिलगा। इस पर जङ्गल के सभी जानवर इकट्ठे होकर अपने अपने सुन्दर बच्चों को वनदेवता के सामने लाने लगे। सबके साथ साथ बन्दर ने भी चपटी नाक और बिना बालोंवाले बदसूरत अपने बच्चे को लाकर उपस्थित किया। बन्दर की आशा देख कर सारे जानवर उस पर हँसने लगे। यह देख कर बन्दर बोला—मैं नहीं जानता कि वन-देवता मेरे बच्चे को सबसे सुन्दर समझेगा या नहीं, पर, मेरी नजर में तो मेरा ही बच्चा मुझे सबसे खूबसूरत



देख पड़ता है।

बाज़, चील और कबूतर कहानी १७६

कितने ही कबूतर चील के डर के मारे एक बाज की शरण आये। बाज उनकी रक्षा करने पर जब राजी हो गया तब उन्होंने उसे अपने घोंसले में रख लिया। उनके घोंसले में जिस दिन बाज आया उसी दिन से वह एक एक करके कबूतरों को मार कर खाने लगा। अन्त में कबूतरों ने देखा कि चील साल भर में भी जितनी हानि उनकी शायद न कर सकता उतनी हानि बाज ने एक दिन में ही कर दी।

रोग से भी कभी कभी ओषधि भयानक हो जाती है।

गडरिया और बाघ कहानी १७७

एक गडरिये को एक बाघ का बच्चा मिला। उसे उसने खूब पाला पोसा। बाघ के बड़े होने पर गडरिये ने उसे दूसरे की बाड़ में से भेड़ों को चुरा लाना सिखलाया। चोरी करने में होशियार होकर बाघ ने एक दिन गडरिये से कहा—मुझे चोरी करना तो सिखलाया, पर खबरदार, अब अपनी भेड़ें भी बचाये रहना, किसी दिन तुम्हारी ही भेड़ें न चोरी चली जायँ।

पिता और उसकी दो कन्यायें कहानी १७८

एक आदमी के दो लड़कियाँ थीं। उनमें से एक का किसान के साथ और एक का कुम्हार के साथ विवाह हुआ। विवाह के बहुत समय बाद पिता पहले पहल अपनी उस लड़की को देखने गया, जो किसान के साथ ब्याही थी। लड़की से मिल कर पिता ने उससे पूछा—बेटी, तू कैसे रहती है? लड़की बोली—हम लोग बहुत अच्छे हैं। दादा, हमें किसी बात की कमी नहीं। पर, यदि इस बार जल्दी ही अच्छी सी वृष्टि हो जाय तो सोलहो आने फसल तैयार मिले। पिता

सन्तुष्ट होकर कुम्हार के घर पहुँचा और वहाँ भी अपनी लडकी से कुशल-प्रश्न के बाद पूछने लगा—बेटी, तू कैसी है? तेरे घर का काम-काज कैसा चलता है? इस पर वह बोली—दादा, हम बहुत आनन्द मे हैं, हमें किसी बात की कमी नहीं। यदि और कुछ दिन पानी न बरसे तो हमें बहुत कुछ लाभ हो। इस पर लडकी का पिता बुद्धिहीन-सा होकर उससे कहने लगा—हाय, तुम अपने मिट्टी के बर्तनों को सुखाने के लिए धूप चाहती हो और तुम्हारी बहन फसल अधिक पैदा होने के लिए वर्षा चाहती है। मैं अब इस समय किसके लिए देवता से विनती करूँ।

कौआ और गीदड * * * कहानी १७६

एक कौआ कहीं से मांस का एक टुकडा उठा लाया। वह मांस को अपनी चोंच में लेकर दरख्त की डाल पर जा बैठा। दरख्त के नीचे एक गीदड रहता था, कौए के मुँह मे मांस का टुकडा देख कर उसे बडा लोभ आया। उसने सोचा, किसी उपाय से कौए के मुँह से यह मांस लेकर खा जाना चाहिए। यही सोच कर वह कौए से कहने लगा—वाह, कैसा खूबसूरत पक्षी है! कैसी सुन्दर शरीर की बनावट है और कैसा मनोहर चिकना रङ्ग है! किन्तु शोक की बात है कि ऐसा सुन्दर होने पर भी यह गूँगा है। अगर गूँगा न होता तो यह अवश्य ही पक्षियों का राजा समझा जाता। गीदड के मुँह से अपनी यह बडाई सुन कर कौआ मन मे सोचने लगा—मूर्ख गीदड ने मुझे गूँगा समझ रक्खा है, अभी अपनी मनोहर आवाज सुना कर उसे मोहित किये देता हूँ। कौआ अपनी हालत को भूल कर ज्योंही मुँह से आवाज निकालने चला त्योंही उसके मुँह से मांस का टुकडा अलग होकर जमीन पर जा पडा। गीदड झट से उसे मुँह में लेकर कौए से कहने लगा—कौए भाई, अब मैंने समझा, तुममें बोलने की ताकत तो है पर, तुममें बुद्धि तनिक भी नहीं।

स्वार्थ के बिना कोई किसी की खुशामद नहीं करता। जो जाते हैं, अन्त में उन्हें ठगाना पड़ता है।

बाघ और गृहस्थ    कहानी १८०

एक गृहस्थ के घर के सामने से जाते जाते एक बाघ ने देखा कि उस घर में दावत के लिए बकरे और भेड़ मारी जा रही हैं। यह देख कर बाघ कहने लगा—ये लोग जो काम खुद करते हैं, वही काम यदि मैं करूँ तो न जाने य लोग कितना गोलमाल करें।

मनुष्य दूसरे के लिए जो काम बुरा समझता है, उसी को खुद करते समय वैसा नहीं समझता।

नाचनेवाला गदहा    कहानी १८१

एक गदहा एक दिन किसी प्रकार मकान के छप्पर पर चढ गया। छप्पर पर जाकर उसने बडे जोर से नाचना शुरू कर दिया। उसकी कठिन टापों के पडने से छप्पर के सारे खपडे फटाफट फूटने लगे। घर का मालिक यह आवाज सुन कर घर के बाहर आया। बाहर आकर उसने गदहे का यह सारा तमाशा देखा। तब उसने एक बडी लम्बी सी लाठी उठा कर पीटते पीटते गदहे का अध मरा सा करके जमीन पर गिरा दिया। इस पर गदहा बोला—वाह रे अन्याय! कल जब बन्दरों ने छप्पर पर चढ कर नाचना शुरू किया था तब सब लोग उन्हे देख देख कर इस प्रकार हँसते थे, मानों बडा आनन्द पा रहे हैं, और आज मेरी बार इतना गुस्सा और इतनी मारपीट।

जो लोग अपना उचित स्थान नहीं जानते, उनकी आँखें दुःख मिलने ही पर खुलती हैं।

दो कुत्ते    कहानी १८२

एक आदमी के दो कुत्ते थे। एक शिकार में उसके साथ जाता और दूसरा घर का पहरा देता था। रोज शिकार से लौट कर वह आदमी घरवाले कुत्ते को बहुत सा मांस दिया करता। यह देख कर शिकारी कुत्ते ने एक

दिन घर के कुत्ते से कहा—भाई, यह बड़ा अन्याय है। मैं बड़ी मिहनत के साथ जो कुछ कमा लाता हूँ, उसका बहुत सा हिस्सा तुम बिना मिहनत के ही पा जाते हो। इस पर घर का कुत्ता बोला—मेरा इसमें क्या दोष ? यह तो मेरे मालिक का दोष है। उसने मुझे खुद कमा लाने की शिक्षा न देकर दूसरे ही के भरोसे रहना सिखलाया है।

लड़के-लड़की अपने आप ही आलसी नहीं होते, उनके आलसी होने का दोष माता पिता के ही ऊपर है।

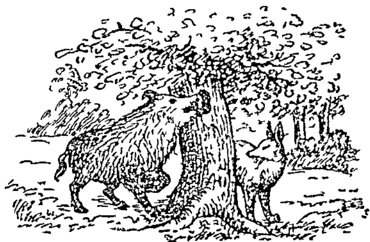
 कहानी १८३

गडरिया और समुद्र  

एक गडरिया समुद्र के किनारे किनारे अपनी भेड़ें चराया करता था। वह समुद्र का इतना बड़ा जल विस्तार और गहराई देख कर उस पर बड़ा मोहित हुआ। अन्त में उसने एक बार समुद्री मार्ग से व्यापार के लिए विदेशों को टापुओं को जाना चाहा। उसके अनुसार उसने अपनी भेड़ों को बेच डाला और जो धन मिला उससे खजूर खरीद लिया। एक जहाज में खजूर भर कर व्यापार के लिए वह विदेश को चला। चलते चलते जब उसका जहाज बीच समुद्र में पहुँचा तब बड़े जोर से आँधी और पानी आ पहुँचा। आँधी और पानी आ जाने से उसका जहाज वहीं डूब गया। व्यापार के लिए जानेवाले गडरिये ने ज्यों त्यों कर, बड़ा मुश्किल से, तीर पर पहुँच कर अपने प्राण बचाये। परन्तु, खजूर एक भी न बचा। कुछ दिनों बाद वह फिर भी भेड़ें खरीद कर उन्हें समुद्र के किनारे ही किनारे चराने लगा। एक दिन एक आदमी समुद्र के किनारे खड़ा होकर उसके शान्तभाव के लिए उसकी बड़ाई कर रहा था। गडरिया उसे समुद्र के शान्तभाव की बड़ाई करते देखकर बोला—सावधान रहो भैया, समुद्र के शान्त होने का कुछ मतलब है, शायद उसे फिर खजूर खाने की इच्छा हुई है।

सुअर और गीदड़ कहानी १८४

एक सुअर एक दरख़्त के तने से घिस घिस कर अपने दाँतों को पैना कर रहा था। यह देख कर एक गीदड़ उससे कहने लगा—भाई सुअर, इस समय अपने दाँतों को क्यों तेज बना रहे हो? अभी तो लड़ाई भिड़ाई की कोई



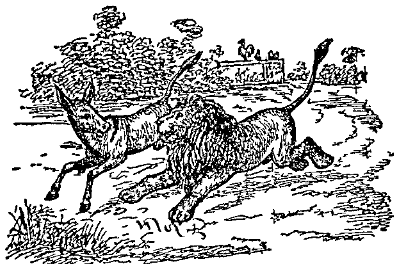
सम्भावना ही नहीं। सुअर बोला—लड़ाई की सम्भावना नहीं है, इसी से तो दाँतों को तेज कर रहा हूँ। लड़ाई छिड़ जाने पर फिर तो दाँतों को तेज करने का समय ही न मिलेगा। उस समय तो दाँत तेज हैं कि नहीं, इसी की जाँच होगी।

लड़ाई की तैयारी लड़ाई का निबटेरा करने ही का कारण है।
विपत्ति के आ पड़ने के पहले ही उसको दूर करने का उपाय करना चाहिए।

गदहा, मुरगा और शेर कहानी १८५

कुम्हार के घर में एक गदहा और एक मुरगा दोनों एक साथ रहा करते थे। एक दिन एक शेर शिकार की खोज में गाँव में घुस आया। मोटे ताजे गदहे को देख कर उसने मन में सोचा कि आज इसी का शिकार कर अपना

पेट भरूँ। शेर गदहे पर टूट पडना ही चाहता था कि मुरगा जोर जोर से चिल्लाने लगा। मुरगे की आवाज को शेर नहीं सह सकता। जहाँ मुरगा बोलता है, वहाँ से शेर फौरन भाग जाता है। मुरगे की आवाज सुनते ही शेर, भूख-प्यास को भूल कर, एक-दम वहाँ से भागा। एक छोटे से पची को शेर इतना डरता है, यह जान कर



गदहे को बडी हिम्मत हुई। वह साहस करके शेर को डरा कर भगाने के लिए जोर जोर से उसके पीछे दौडने लगा। थोडी ही दूर जाने पर शेर ने लौट कर गदहे को पीछे देखा। तब वह उस पर फौरन टूट पडा और मार कर खा गया।

बेवकूफ ही अपने को बलवान् समझ कर अन्त में मृत्यु के मुख में पहुचते हैं।

कहानी १८६

नदी और समुद्र

सब नदियों ने मिल कर एक दिन समुद्र से कहा—यह तुम्हारा बडा अन्याय है। तुम्हारे साथ मिलते ही तुम हमारे स्वादिष्ट और निर्मल जल को खारी कर डालते हो। नदियों की यह बात सुन कर और उनके

मन की हालत समझ कर समुद्र उनसे कहने लगा—अच्छा, अब से तुम हमारे पास न आना।

उपकार करवाकर अनुयोग करना कितनों ही का स्वभाव होता है।

तीन व्यवसायी

कहानी १८७

एक शहर पर शत्रुओं की चढ़ाई हुई। शहर की रक्षा का उपाय सोचने के लिए वहाँ के निवासियों ने एक सभा की। सभा में एक ईंट बेचनेवाला



बोला—मेरी राय में शहर के चारों ओर ईंटों की दीवार बना देने से शहर की रक्षा हो सकती है। इस पर लकड़ी बेचनेवाला बोला—नहीं, नहीं, तुम्हारी ईंट-फींट का कोई काम नहीं। बड़ी बड़ी लम्बी लकड़ियों की चारों ओर बाढ़ बना देने से किसी प्रकार शत्रु शहर के भीतर न घुस सकेंगे और शहर पर कब्जा न कर सकेंगे। इस पर एक मजदूर बोला—महाशय, आप लोगों में से किसी की सलाह मुझे अच्छी नहीं लगती। अब इसी बात पर विचार कीजिए कि रुई

का गोठा से मोर्चेबन्दी करके किसी प्रकार शत्रु के आक्रमण में बाधा पहुँचाई जा सकती है या नहीं।

हर एक मनुष्य अपना स्वार्थ खोजता है।

बूढ़ा शेर

कहानी १८८

एक शेर बहुत बुड्ढा होकर मरने के करीब होगया। उसे उठने बैठने की भी शक्ति न रही। वह जमीन पर पड़ा हुआ उसांसें ले रहा था। ऐसे ही समय एक सूअर वहाँ आया। शेर के साथ इस जङ्गली सूअर की बहुत दिनों से शत्रुता था। पर, शेर के बलवान् होने से वह उसका कुछ नहीं कर सकता था। इस समय शेर को इस हालत में देख कर सूअर दौड़ा दौड़ा उसके पास गया और अपने पुराने विरोध के कारण उसके शरीर में अपने तीखे दाँत भोंक दिये। इसके बाद थोड़ी ही देर में एक जङ्गली भैंसा आया। उसने भी अपने सींगों से शेर के शरीर में कई घाव कर दिये। शेर को तो उठने की भी ताकत न थी। वह बेचारा चुपचाप इन दुःखों को सहता गया। पशुराज को इस उपायहीन अवस्था में देख कर एक गदहे ने सोचा—मैं ही क्यों ऐसा सुअवसर हाथ से जाने दूँ। यह सोच कर जल्दी से वह शेर के पास गया और उसके मुँह पर दुलत्ती लगा दी। अन्त में शेर ने यह कहते हुए अपने प्राण त्याग दिये—हाय, दुर्भाग्य के कारण मेरी कैसी बुरी हालत हुई। जो जानवर पहले मुझे देखते ही मारे डर के काँपने लगते थे वे आज निर्भय होकर सहज ही मेरा अपमान कर रहे हैं। जो हो, बलवान् और वीर पशु का किया हुआ अपमान तो इस समय तक मैं किसी प्रकार सह लेता था, पर हाय, गदहा तो ब्रह्मा की सृष्टि का कलङ्क है—उसने भी मेरा अपमान सहज ही में कर डाला, इसी से अब मेरी मृत्यु को भी बड़ा दुःख है।

पशुशाला में शेर

   कहानी १८

एक शेर किसी किसान की पशुशाला में घुस गया। शेर के पकड़ने की इच्छा से किसान ने शाला के किवाड़ बन्द कर दिये। शेर भागने के लिए राह न पाकर शाला के पशुओं पर टूटा और एक ओर से गाय, बकरी और भेड़ों को मारने लगा। इस पर किसान ने डर कर किवाड़ खोल दिये। किवाड़ खुले पाकर शेर वहाँ से निकल कर चम्पत हुआ। शेर का गर्जना और शाला के पशुओं की आवाज सुन कर किसान की स्त्री वहाँ आ गई। उसने सब हाल देख कर अपने पति से कहा—तुम्हारी जैसी बुद्धि है उसके अनुसार ठीक ही हुआ। जिसका गर्जन दूर से सुनते ही देह काँपने लगती है, उसे किस बुद्धिमानी के सहारे पकड़ने चले थे

बाघ और शेर

   कहानी १८

एक बाघ बाड़े में से एक बकरी लिये जा रहा था। यह देख कर मार्ग में एक शेर ने उसके मुँह से बकरी छुड़ा ली। कुछ देर तक बाघ बुद्धिहीन सा चुपचाप खड़ा रहा। अन्त में शेर से दूर जाकर वह शेर से बोला—दूसरे का धन छीन लेना बड़ा भारी अन्याय है। इस पर शेर गुस्सा होकर बोला—मालूम होता है, यह बकरी तुम्हारे घर का धन है? तुम इसे न्यायपूर्वक लाये हो? तुम्हारे परम मित्र गृहस्थ ने इसे तुम्हें उपहार में दिया था न?

हरिण और शेर

   कहानी १८१

शिकारी के डर के मारे एक हरिण भाग कर एक गुफा में जा छिपा। उसी गुफा में एक शेर रहता था। हरिण के गुफा में घुसते ही शेर ने उसे पकड़ लिया। इस पर हरिण बोला—हाय, मेरा कैसा अभाग्य है। मनुष्य के हाथ से बचा तो अन्त में एक दुष्ट पशु के मुँह में पड़ा।

एक विपत्ति से छुटकारा पाने का उपाय निश्चित करते समय यह ध्यान में रखना चाहिए कि दूसरी और कोई विपत्ति न आ पड़े।

चिड़ीमार, तीतर और मुरग़ा ✲ ✢ ✢ कहानी १८२

एक शिकारी को एक रोज कुछ शिकार न मिला। बिना मांस के खाना अच्छा न होगा यह सोच कर वह अपने पाले हुए तीतर को ही मारने पर तैयार हो गया। इस पर तीतर बोला—मुझे न मारिए, मुझे मार डालने पर आपके जाल में पक्षियों को लाकर कौन फँसावेगा? शिकारी ने तीतर की बात सुनकर उसे छोड़ दिया और अपने मुरगे को जा पकड़ा। मुरगा बोला—मुझे मारिएगा नहीं। मुझे मार डालने पर कौन आपको सबेरे जल्दी जगावेगा? इस पर शिकारी बोला—सो तो ठीक है, पर मुझे भी तो भोजन करना है।

जरूरत कहासुनी नहीं मानती।

चींटी और कबूतर ✲ ✢ ✢ कहानी १८३

एक प्यासी चींटी नदी में पानी पीने गई। वह अचानक जल मे पड़ कर नदी की धार में बहने लगी। वृक्ष की डाली पर बैठे हुए एक कबूतर ने उसका यह दुःख देखा। तब उसने शीघ्र ही वृक्ष से एक पत्ता तोड़ कर चींटी के सामने नदी की धार मे डाल दिया। इस पत्ते पर चढ़कर चींटी बहते बहते किसी प्रकार किनारे लग गई। ठीक उसी समय एक शिकारी अपने बाण से उस कबूतर को मारने की चेष्टा कर रहा था। कबूतर का उधर ध्यान ही न था। इसलिए वह चुपचाप शान्तिपूर्वक वहीं बैठा था। चींटी अपने प्राणरक्षक पर आई हुई इस विपत्ति को देख कर जल्दी से दौड़कर शिकारी के पास पहुँची। उसने वहाँ पहुँचते ही शिकारी के पैर में ऐसे जोर से काटा कि शिकारी उसकी जलन से विह्वल-सा हो गया। उसके हाथ से बाण जमीन पर गिर पड़ा और निशाना चूक गया। इसी गड़बड़ के समय कबूतर अपनी विपत्ति को समझ गया। वह फौरन वहाँ से उड़कर भाग गया।

उपकार कभी व्यर्थ नहीं जाता।

शिकारी और लकडहारा

कहानी १४४

एक शिकारी जङ्गल में शिकार करने गया और वहाँ उसने देखा—एक लकड़हारा देवदारु का वृक्ष काट रहा है। लकड़हारे को अपनी वीरता दिखाने के लिए शिकारी उससे कहने लगा—अरे भाई लकडहारे, तूने इस जङ्गल में शेर के पैरों के निशान देखे हैं ? बतला सकता है, शेर किस तरफ रहता है ? इस पर लक



ड़हारा बोला—आओ मेरे साथ, मैं सीधा आपको शेर ही दिखा दूँ। यह सुन शिकारी डर के मारे काँपते काँपते बोला—नहीं भाई, मैं खुद बखुद शेर को न

ढूँढता, मैं तो केवल उसके पैरों के निशान और उसके रहने की जगह जानना चाहता हूँ। लकड़हारा उसे कायर समझ कर और कुछ न बोला और पहले की तरह ज्यों का त्यों अपने काम में लग गया।

कहने और करने में भेद न रखना ही वीरता है।

कहानी १९५

बन्दर और मछुओं का जाल

एक बन्दर नदी-किनारे दरख्त पर बैठा बैठा मछुओं का मछली पकड़ना देख रहा था। दोपहर के समय मछली पकड़ने के जाल को नदी के किनारे रख कर मछुए रोटी खाने घर चले गये। इसी अवसर पर बन्दर ने मन में सोचा कि मैं भी एक बार नदी में जाल फैला कर मछुओं की तरह मछलियाँ पकड़ूँ। यह सोच कर वह दरख्त से नीचे उतरा और हाथ में जाल लेकर उसे नदी में फैलाने चला। पर, जाल को सीधा कर वह ज्यों ही उसे नदी में फैलाने लगा त्यों ही खुद बखुद उसमें फँस गया। उससे छुटकारा पाने की बन्दर ने बहुत चेष्टायें कीं, पर ज्यों ज्यों वह उसे छुड़ाता त्यों त्यों उसमें और बुरी तरह फँसता जाता था। इससे दुःखी होकर बन्दर अपने आप कहने लगा—मेरे लिए बहुत अच्छा हुआ। मैं जाल फैलाने की तरकीब को जाने बिना ही नदी में जाल फैलाने आया था, सो मुझे जञ्जाल में फँसना पड़ा।

जिसका जो काम है, उसे ही वह अच्छा लगता है। दूसरा उसे करे तो सिवा हानि के लाभ नहीं होता।

कहानी १९६

पेटफूला गीदड़

एक गीदड़ बहुत भूखा था। भूख से उसका पेट खाली और शरीर दुबला हो गया। उसने आहार की खोज में घूमते घूमते देखा कि एक जगह एक वृक्ष के खोखले में किसानों ने बहुत कुछ खाने का सामान रख छोड़ा है।

किसान जब खेत में काम करने के लिए चले गये तब गीदड़ बड़े आनन्द के साथ खोखले में जा घुसा। खोखले में घुस कर उसने इतना खाना खाया कि उसका पेट फूल कर नक़ारा हो गया। पेट के फूल जाने से गीदड़ का खोखले से निकलना मुश्किल हो गया। अब वह डर के मारे वहीं बैठा बैठा क्याउँ, क्याउँ करने लगा। उसकी चिल्लाहट सुन कर एक और गीदड़ वहाँ आया और उससे पूछ कर उसने सब हाल मालूम किया। तब वह मुसकुरा कर बोला—"अब कुछ समय तक इसी खोखले में रह कर तुम्हें उपवास करना पड़ेगा, उपवास करके पहले की तरह दुबले होने पर तुम बाहर निकल सकोगे।"

दो मेढक

कहानी १८

दो मेढक एक साथ एक गड्ढे में रहते थे। गरमी के दिनों में अधिक धूप पड़ने के कारण गड्ढे का पानी सूख गया। अतएव दोनों एक साथ किसी दूसरे जलाशय को ढूँढने निकले। रास्ते में एक गहरा कुआँ देख कर एक मेढक बोला—आओ भाई, हम इसी कुएँ में घुस चलें। इस पर दूसरा बोला—पर भाई, यदि इस कुएँ का जल भी सूख जाय तो हम इसके अन्दर से बाहर कैसे निकल सकेंगे?

हर एक काम का आगा-पीछा सोचना और उपाय निश्चित कर उसमें लगना चाहिए।

चूहा और साँड

कहानी १८८

साँड को एक चूहे ने काट खाया। इससे गुस्सा होकर वह चूहे को पकड़ने चला। चूहा भाग कर दीवार के भीतर अपने बिलरूपी क़िले में जा घुसा। तब साँड अपने सींगों से दीवार खोदने लगा। अन्त में वह थक कर वहीं दीवार से सटकर सो रहा, चूहे ने बिल के भीतर से सिर निकाल कर देखा, कि साँड सो रहा है। इस पर चूहा फौरन बिल से निकल कर दौड़ता हुआ बैल के

शरीर पर चढ़ गया और उसे काट कर फिर भाग गया। साँड जाग कर उठ बैठा और इधर-उधर देख कर सोचने लगा—क्या करना चाहिए। अन्त में कुछ भी स्थिर न करके वह बुद्धिहीन-सा हो रहा। तब चूहा बिल के भीतर से ही बोला—बड़े होने से ही जीत नहीं होती। कई बार छोटे और साधारण मनुष्य भी बड़ों और बलवानों का बुरा कर सकते हैं।

कहानी १९९

चोर और मुरग़ा

एक चोर किसी गृहस्थ के घर में और कुछ न पाकर उसके यहाँ से एक मुरगा चुरा ले गया। घर जाकर जब वह मुरगे को मारने लगा तब मुरगा बड़ी अधीनता से कहने लगा—मुझे बचा दो। मैं मनुष्य का बहुत उपकार करता हूँ, मैं रात रहते ही सबको जगा देता हूँ। यह सुन कर चोर बोला—इसी लिए तो मैं तुझे और भी जल्दी मारूँगा। तू ही लोगों को जगा कर मेरे काम में विघ्न करता है।

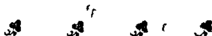
चोर धर्म की बातें नहीं सुनते।

कहानी २००

किसान और गीदड़

एक गीदड़ एक किसान के पालतू पशुओं के बच्चों और पक्षियों को मौक़ा पाते ही लेकर भाग जाता था। किसान उसके पकड़ने की फ़िक्र में था। एक दिन सुयोग पाकर किसान ने गीदड़ को पकड़ लिया। उसने उसकी दुम में चिथड़े लपेट कर उस पर मिट्टी का तेल छोड़ा और आग लगा दी। फिर उसने गीदड़ को छोड़ दिया। छूटते ही गीदड़ डर और दर्द के मारे इधर-उधर भागने

दैवयोग से भागते भागते वह उसी किसान के पके हुए खेत में जा घुसा
ही उसका दुम की आग से किसान के खेत भर में आग लग गई। सब क
ल कर खाक हो गया। किसान को उस साल खेत से कुछ भी न मिला

नेवाला बन्दर  कहानी २०

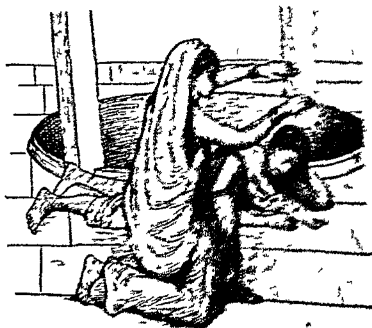
एक राजा के यहाँ कितने ही बन्दर पले हुए थे। उनको मनुष्यों की त
नाचना और हाव भाव बताना सिखलाया गया था। वे बड़ा काम
कें पहन कर नायब दीवान, पेशकार और मुंशी आदि के कामों की खूब न
करते थे। उन कर्मचारियों के सामने बन्दरों से यह तमाशा करा कर रा
खुश होता। पर बेचारे कर्मचारियों को इससे बड़ी शर्म मालूम होती।
इसी प्रकार का तमाशा हो रहा था कि एक कर्मचारी ने, तमाशा बन्द क
इच्छा से, बन्दरों के सामने मुट्ठी भर बादाम डाल दिये। यह देख कर
र तमाशा करना भूल गये और बादाम लेने के लिए परस्पर लड़ने भिड़ने ल
लड़ने भिड़ने में उनकी जरी की बढ़िया बढ़िया पोशाकों के चिथड़े हो गये। ब
तमाशा हँसी और कोलाहल में परिणत हो गया।

अतीत्य हि गुणान् सर्वान् स्वभावो मूर्ध्नि वर्तते।

ाफ़िर और भाग्य  कहानी २०२

एक मुसाफिर राह चलते चलते थक गया। अतएव वह एक कुए का जगत
पर पड़ कर सो रहा। इतने में भाग्यदेवी ने आकर उसे स्वप्न में दर्शन
कर कहा—भलेमानस, जाग कर जरा हट कर सो। नहीं तो करवट बदलते ही कुए

गिर पड़ेगा—और मुझे ही दोष देगा। [illegible]
ती हैं उनके लिए भी वह मुझे ही दोषी [illegible] है।



[illegible]

बिल्ली और ब्रह्मा

एक रात म पुष्पों से सजी हुई शय्या पर सो रहे थे, ऐसे ही समय ब्रह्मा की इच्छा हुई कि देखें, मानुषी होने पर बिल्ली का स्वभाव कुछ बदला है या नहीं। परीक्षा करने के लिए ब्रह्मा ने उसके सामने एक चूहा छोड दिया। चूहे को देखते ही वह बिल्ली शय्या पर से उछल कर उस पर ऐसी झपटी, मानो उसे पकडने पर खा ही जायगी। यह देखकर ब्रह्मा ने उसे फिर बिल्ली बना दिया।

स्वभाव किसी उपाय से भी नहीं बदला जा सकता।

पण्डित, चींटी और स्वर्ग का दूत — कहानी २०४

एक पण्डित ने समुद्र किनारे खडे होकर देखा—एक जहाज जल में डूब गया और उस पर सवार सभी मुसाफिर और मल्लाह भी उसी के साथ डूब गये,—कोई भी न बचा। यह देख कर पण्डित ब्रह्मा को दोष दे करके कहने लगा—हाय, ब्रह्मा का कैसा अन्याय है। मान लो इस जहाज में एक आदमी पापी था, तो एक उसको दण्ड देने के लिए ब्रह्मा ने कई सौ निर्दोष मनुष्यों का वध कर डाला, पण्डित यह सोचता हुआ चला जाता था कि चींटियों के बिल पर जा पहुँचा, अनगिनत चींटियाँ उसके दोनों पैरों के चारों तरफ लिपट गई। देखते देखते बहुत सी चींटियाँ उसके पैरों के ऊपर चढ गई और एक चींटी ने जाकर उसकी टाँग में काट खाया। उसके काटने से पीडित होकर पण्डित झटपट सब चींटियों को पैरों स झाडने लगा। उसके झाडते ही सबकी सब चींटियाँ मर कर नीचे गिर गईं। उसी क्षण एक स्वर्ग के दूत ने आकर पण्डित से कहा—मूर्ख, जिसने एक चींटी के दोष से सब चींटियों को मार डाला, वही ब्रह्मा के कार्यों में दोष लगाने का साहस करता है। कैसा मूर्खता है।

कहानी २०५

ड़िया और कुत्ता

एक भेड़िया भेड़ों के रेवड़ के साथ छिपा छिपा उनके बाड़े में आगया। गड़रिया उसे देख न सका, वह भेड़ों के साथ उसे भी बाड़े में बन्द करने लगा। यह देखकर उसका कुत्ता कहने लगा—स्वामिन, भेड़ों के बाड़े में भेड़िये के रहते क्या आप भेड़ों को सुरक्षित समझते हैं?

कहानी २०६

शेर और खरगोश

शेर ने देखा, एक खरगोश पड़ा सो रहा है। वह खरगोश को पकड़ने लगा कि इतने ही में उसने देखा कि एक सुन्दर हरिण दौड़ा आ रहा है। तब खरगोश को छोड़कर वह हरिण के पीछे दौड़ा। शेर के दौड़ने की आहट पाकर खरगोश जाग पड़ा और दौड़कर अपने बिल में घुस गया। हरिण के पीछे पीछे बहुत दूर तक दौड़ते रहने पर भी शेर उसे पकड़ न सका। अब वह निराश होकर खरगोश को पकड़ने के लिए फिर वापिस लौटा। जब शेर ने देखा कि खरगोश भी भाग गया तब मन ही मन कहने लगा—ठीक हुआ। मैंने अपने मुँह का कौर छोड़कर अधिक पाने का जैसा लोभ किया, वैसा ही मेरा इधर-उधर का सब जाता रहा।

निश्चित को छोड़ कर अनिश्चित के लेने की आशा करने पर ठगाना ही पड़ता है।

कहानी २०७

देवदारु का वृक्ष और ब्रह्मा

देवदारु के वृक्ष ने विनती करके ब्रह्मा से कहा—हे विधाता, तुमने मुझे कैसा दुखमय जीवन दिया है। सब वृक्षों से अधिक मुझ पर ही कुल्हाड़े की चोट लगने का डर रहता है। यह सुन कर ब्रह्मा बोले—बेटा, तुम मनुष्यों के उपकार में न लगो, मैं तुम्हें कुल्हाड़ी के घाव से बचा दूँ। जो बड़े और परोपकारी हैं, वही दूसरों की विपत्ति और दुख सहन करते हैं।

बर्रे और साँप

कहानी २०८

एक बर्रे साँप के फन पर बैठ कर बार बार उसे जोर से काट रही थी। पीड़ा के मारे साँप बहुत घबरा गया। उसने बहुत कोशिश की कि बर्रे को मार डालूँ, पर किसी प्रकार सफल न हो सका। इस पर साँप बुद्धिहीन सा होकर और कुछ उपाय सोचने लगा। इतने ही में उसने देखा कि बोझ से लदी हुई एक बैलगाड़ी सामने से आ रही है। वह झटपट दौड़ कर गया और गाड़ी के पहिये के नीचे अपना सिर रख कर बोला—लो, मैं और मेरा दुश्मन एक साथ ही मरें।

देवदारु के वृक्ष का विलाप

कहानी २०९

एक देवदारु के वृक्ष को काट कर कुछ लकड़ी चीरनेवाले उसे आरे से चीरने लगे। चीर कर तख्ते निकालते समय वे देवदारु की छोटी छोटी डालियों की मेखें बना करके तख्तों के बीच बीच में ठूँस देते थे। इस पर देवदारु ठण्डी साँस लेकर बोला—आरे और कुल्हाड़े के घाव से तो मैं दुःख पाता ही हूँ पर मुझे उससे भी अधिक दुःख तब होता है जब मैं देखता हूँ कि मेरी ही डालियों से बनी हुई ये मेखें मुझे बीच बीच से चीर रही हैं।

घरेलू आदमी की दुश्मनी बहुत खलती है।

साँड, शेरनी और शिकारी

कहानी २१०

एक जगह एक शेरनी का बच्चा पड़ा हुआ था। शेरनी से बदला लेने की इच्छा से साँड ने उसे वहीं अपने सींगों से छेद कर मार डाला। जब शेरनी लौटी और बच्चे को मरा पाया तब बड़े जोर जोर से चिल्लाने लगी। एक शिकारी दूर खड़ा खड़ा यह सब देख रहा था। वह शेरनी से बोला—अब समझीं कि पुत्रशोक कैसा कठिन होता है, तुम एक बार जरा सोचो तो, तुम्हारे ही कारण कितने प्राणियों को पुत्रशोक से हाहाकार करना पड़ता है।

मोर और बगला    कहानी २११

एक मोर अपनी रङ्ग-बिरङ्गी पूँछ फैला कर बगले से कह रहा था—देख मेरे परों की बहार। कैसा सुनहरा और इन्द्र के धनुष जैसा रङ्ग है—सबसे श्रेष्ठ है। तेरे डैने का रङ्ग तो राख जैसा—भद्दा और बुरा—है। यह सुन कर बगला बोला—तुम्हारा कहना सच है। पर, मैं जब अपने हलके परों को फैला कर निर्मल आकाश में विहार करता हूँ तब तुम कूड़े-करकट और घूरे के पास ही घर कर अपने दिन बिताते हो।

काक काक, पिकः पिक।

गदहा और मेढक    कहानी २१२

एक गदहा पीठ पर बोझ लादे चला जा रहा था। इतने ही में वह एक गड्ढे मे जा पड़ा। गड्ढे म गिर पडने से गदहे को बडा कष्ट हुआ। कष्ट के मारे वह जोर जोर से रेंकने और चिल्लाने लगा। गड्ढे मे बहुत से मेढक रहते थे। उन्होंने गदहे को रेंकते देखकर उससे कहा—सिर्फ एक बार गिर पडने से तुम्हें इतना कष्ट हो रहा है! हम लोगों की तरह रात-दिन यहीं रहना पडे तो क्या करो ?

ऊँट और मनुष्य    कहानी २१३

मनुष्य न पहले पहल जब ऊँट को देखा तब उसका बडा भारी डील-डौल देख कर वह डर के मारे वहाँ से भाग गया। कुछ दिनों बाद ऊँट को सीधा और निश्चल देख कर वह बडे साहस के साथ उसके पास आया। जब मनुष्य ने देखा कि ऊँट बिलकुल शक्तिहीन है तब उसने उसको नकेल लगा कर एक बालक के अधीन कर दिया। बालक जहाँ चाहता ऊँट को हाँक ले जाता था।

केंकडा और गीदड    कहानी २१४

एक केंकड़ा नदी छोड कर मैदान में चरने चला। उसे देख कर गीदड ने उसको भक्षण करना शुरू किया। मरते समय केंकडा बोला—मेरी बेवकूफी की मुझे ऐसी सजा मिली। मैं जन्म से जलचर जीव हूँ, पर आज मैदान में चरने का शौक चर्राया था।

जो जिस अवस्था म है, उसे उसी म सन्तुष्ट रहना चाहिए।

गदहा और उसका चरवाहा  कहानी २१५

एक चरवाहे ने गदहा चराते चराते दूर से देखा कि सेना का एक झुण्ड उसी ओर आ रहा है। तब चरवाहे ने गदहे से कहा— चल चल, भागें, अभी वे हमीं लोगों को बेगार में पकड़ लेंगे। इस पर गदहा बोला—मैं न भागूँगा। तुम्हारे पास मुझे जो मिहनत करनी पडती है, वही उनके पास भी करनी पड़ेगी। तो मैं अब भागूँ ही क्यों ?

राजशक्ति के बदले साधारण प्रजा की शक्ति का नाम रख देने से कुछ अधिक परिवर्तन नहीं होता।

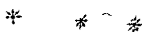
चील का कण्ठस्वर  कहानी २१६

किसी जमाने में चील का गला भी बहुत मीठा था। पर, घोड़े की आवाज सुनकर उन्होंने उसकी नकल करना शुरू किया। इससे अपना बोला भूलकर वे घोड़े की तरह चिहीं, चिहीं करने लगीं।

नीच अनुकरण करने से स्वभाव नष्ट हो जाता है।

खरगोश और गीदड़  कहानी २१७

खरगोशों ने मिलकर शेर से टक्कर लेने की ठानी। इसके लिए उन्होंने गीदड़ों से सहायता माँगी। गीदड़ों ने उत्तर दिया—"यदि हम तुम्हारे स्वभाव और तुम्हारे शत्रु के बल को न जानते तो अवश्य तुम्हारी सहायता करने को तैयार हो जाते"। १२२

हरिण, बाघ और मेढा  कहानी [illegible]सहायता से

एक हरिण ने मेढे से कहा—"भाई, मुझे कुछ धान की उधार दो, [illegible] । इतने ही ही तुम्हारा कर्ज़ चुका दूँगा—यह बाघ मेरा जामिन है।" [illegible] का वाला मेढा बोला—"भाई, तुम [illegible] बाहर जिसका [illegible] रहे हो,

भीतर नहीं हूँ। मैं तुमको उधार नहीं दे सकता। उधार लागे तुम—जो भागने में पक्के हो, जामिन होगा बाघ—जिसका पेशा दूसरे का माल छीन कर भाग जाना ही है। माल वसूल करने के दिन मैं तुम्हें कहा ढूँढता फिरूँगा ?"

भेड़िया और गीदड़    कहानी २१६

भेड़िये के बच्चों मे एक बच्चा ऐसा था जो सब बच्चों से अधिक बलवान् और तेज दौड़ता था। इसी कारण सभी भेड़ियों ने सम्मान करके उसका नाम शेर रख दिया। भेड़िया शेर धीरे धीरे बड़ा होकर खूब मोटा ताजा हो गया। पर, उसके मोटेपन के अनुसार उसकी बुद्धि बड़ी मोटी रही। उसने मन मे सोचा कि मैं सचमुच ही शेर जैसा हूँ, इसी लिए तो लोग मुझे शेर कहते हैं। यह खयाल कर वह अपना जातिवालों को छोड़कर शेरों मे मिलने चला। यह देख एक गीदड़ ने उससे कहा—तुम्हारा यह घमण्ड तुम्हारी हँसी करा रहा है। तुम भेड़ियों के बीच शेर बन सकते हो पर, शेरों के बीच तो तुम निरे भेड़िये ही हो।

चील, बिल्ली और गिदड़िया    कहानी २२०

चील ने एक ऊँचे देवदारु वृक्ष की ऊपरी शाखा पर अपना घोंसला बना कर अण्डे दिये। उसी दरख्त के तने के एक खोखले में बिल्ली ने भी बच्चे दिये। साथ ही वृक्ष की जड़ के नीचे गड्ढा खोदकर एक गिदड़िया ने भी बच्चे रक्खे। बिल्ली ने देखा, कि मेरा घर विपत्ति से खाली नहीं, ऊपर भी शत्रु है और नीचे भी। इसी कारण उसने चालाकी करके अपने शत्रुओं का नाश करना चाहा। एक दिन उसने चील से कहा—"क्या कहूँ बहन, तुम्हारा और साथ साथ मेरा भी सत्यानाश होनेवाला है। गिदड़िया रोज दरख्त की जड़ें खोदती है, तुमने देखा होगा। कुछ समझीं भी, वह ऐसा क्यों करती है? वह दरख्त की जड़ें काट कर उसे गिरा देने की चेष्टा करती है। दरख्त के गिरते ही वह तुम्हारे और मेरे बच्चों को एक-दम

खा लेगा।" यह सुनते ही चील डर के मारे व्याकुल हो गई। अब बिल्ली ने जाकर गिदड़िया से कहा—"बहन, देखती क्या है? तुझ पर बड़ा भारी विपत्ति पड़नेवाली है। सुना है कि बच्चों को साथ लेकर चरने के लिए तेरे बाहर निकलते ही चील तेरा सर्वनाश करेगी। देख न ले सामने, ऊपर बैठी हुई आँखें काढ़ कर वह चोंच मारने का मौका देख रही है।" इस तरह गिदड़िया को भी डरवा कर बिल्ली अपने खोसले में चली गई। अब चील अपना घोंसला छोड़कर चरने न जाती, कि न जाने शृगाली जड़ काट कर दरख्त को कब गिरा दे। गिदड़िया भी इसी डर से चरने के लिए बाहर न निकलती कि न मालूम चील बच्चों को चोंच मार कर कब उठा ले जाय। दोनों बैठे बैठे एक दूसरी का पहरा देती रही। अन्त में दोनों सकुटुम्ब भूखों मर गईं। अब बिल्ली की बन आई। वह गिदड़िया और चील के बच्चों को ला लाकर आनन्द पूर्वक खाने लगी।

दुष्ट की बात पर पूर्ण विचार करके विश्वास करना चाहिए।

कहानी २२१

बैल और बछड़ा

एक बैल गोशाला के तङ्ग दरवाजे से भीतर जाने के लिए कोशिश कर रहा था। इतने में एक बछड़ा फुर्ती से आया और बैल से कहने लगा—ठहरो, ठहरो, मुझे पहले जाने दो। मैं तुम्हें बतला दूँगा कि इस तरह दरवाजे के भीतर घुसना होता है। इस पर बैल बोला—ठहरो भाई, ठहरो, मैं तुम्हारे जन्म के बहुत पहले से इसी रास्ते आता जाता हूँ।

कहानी २२२

ज्योतिषी

एक ज्योतिषी किसी नगर के बाजार में जाकर पञ्चाङ्ग की सहायता से ग्रह आदि देख कर लोगों के भाग्य का फलाफल बतला रहे थे। इतने ही में एक आदमी दौड़ा दौड़ा उनके पास आया और कहने लगा कि आपके घर का ताला

ाड कर चोर सब माल लूट ले गये। यह सुनकर ज्योतिषी महाराज जोर जोर से ाते चिल्लाते घर की ओर दौड़े। उनकी यह हालत देखकर एक आदमी ने कहा—“ज्योतिषी महाराज, तुम दूसरे के भाग्य की बातें तो बतलाते फिरते हो, और अपना भविष्यत् नहीं जानते ?”

चोर और सरायवाला    कहानी २२३

चोरी करने के लिए एक चोर किसी सराय के एक कमरे में कुछ दिनों तक ठहरा। कई दिन बीत जाने पर भी उसे कोई चीज चुराने लायक न दिख पड़ी। अन्त में चोर ने एक दिन देखा कि सराय के मालिक ने एक नया कोट पहना है। तब चोर जाकर सराय के दरवाजे के सामने बेंच पर सराय के मालिक

के साथ बैठ गया और उससे गप्पे लडाने लगा। इधर-उधर की बहुत सी गप्पे लड रही थीं कि चोर एकाएक गीदड की तरह चिल्ला उठा। सरायवाले ने बड़े आश्चर्य में आकर उससे पूछा—"यह क्या, गीदड की तरह तुम चिल्लाने क्यों लगे?" इस पर चोर बोला—"दु:ख की बात क्या कहूँ! कुछ दिनों पहले एक पागल गीदड ने मुझे काट खाया था। तभी से न मालूम क्या होगया है कि पहले तीन बार जम्हाई आती है और फिर सबको काटने की इच्छा होती है।" यह कहते कहते वह दूसरी बार जम्हाई लेकर गीदड की तरह बोलने लगा। उसका यह हाल देख कर सरायवाला बहुत डरा। वह बेन्च से उठ कर उसकी ओर कनखियों से देखता हुआ वहाँ से भागने लगा। इतने ही में चोर ने उसके कोट का पल्ला पकड लिया और उससे कहा—"महाशय, कृपा कर मुझे अकेला न छोड़िए।" यह कह कर वह फिर जोर जोर से गीदड की तरह चिल्लाने लगा। यह देख कर सरायवाला और भी डरा। उसने सोचा कि शीघ्र ही यह मुझे काट खायगा। इसलिए डर के मारे उसने अपना नया कोट उतार कर फेंक दिया और भाग कर सराय मे जा छिपा। चोर भी नया कोट लेकर वहाँ से चम्पत हुआ और फिर सराय में वापस न आया।

चाहे जिसकी हर एक बात पर विश्वास कर लेना ठीक नहीं।

कहानी २२४

मच्छड और शेर

शेर के पास एक मच्छड जाकर कहने लगा—"मैं तुमसे जरा भी नहीं डरता, तुमसे मैं अधिक बलवान् हूँ। विश्वास न हो तो परीक्षा करके देख लो।" यह कह कर वह भिनभिनाता हुआ शेर पर टूट पड़ा और उसके शरीर की ऐसी जगहों पर अपना डक चुभोने लगा जहाँ बाल न थे। उसके काटने से शेर व्याकुल होगया। उसने उसे मार डालने के लिए अपने मुँह पर और शरीर पर इधर-उधर खूब थप्पड जमाये। थप्पडों की चोट से उसका शरीर जगह

जगह चत विच्चत होगया। पर, मच्छड को वह किसी तरह मार न सका। शेर को जीत कर मच्छड जोर जोर से भिनभिनाता हुआ उड चला। रास्ते में उडते उडते वह मकडी के जाल में जा फँसा। मकडा ने फौरन ही आकर उसे खाने के लिए अपने पैरों के नीचे दाब लिया। इस पर मच्छड बडे दु ख से कहने लगा—"हा अभाग्य, शेर से लडाई म जीत कर मैं इस तुच्छ कीडे का आहार बना।"

बकरी का बच्चा और भेडिया ❦ ❦ ❦ कहानी २२५

एक बकरी का बच्चा अपने रेवड से बिछुड कर एक बुरे रास्ते में जा पडा। भेडिये ने उसे अकेला देख कर उसका पीछा किया। उसके हाथ स छुटकारा पाना मुश्किल समझ कर बच्चे ने उससे कहा—"भाई, मैं तुम्हारे पञ्जे मे आगया हूँ, अब मेरी मृत्यु निश्चित है। मरते समय यदि कृपा करके



तुम मेरी एक लालसा पूरी कर दो तो मैं बडे सुख से मरूँ।" इस पर भेडिये ने कहा—"बतला, तू क्या चाहता है।" बकरी का बच्चा बोला—"मुझे नाचना बहुत अच्छा लगता है। तुम गाओ और मैं तुम्हारे ताल पर ठुमुक ठुमुक नाचूँ।" भेडिये

ने कहा—"यह कौन बड़ी बात है, मैं गाता हूँ, तू नाच।" इतना कह कर ज्यों ही उसने गाने के लिए सुर निकाला त्यों ही उस पर गाँव भर के कुत्ते टूट पड़े। कुत्तों को आते देख भेड़िये ने बकरी के बच्चे को वहीं छोड़ दिया। वह गाना और आहार छोड़ कर वहाँ से अपने प्राण लेकर भाग निकला।

गीदड़ और बन्दर    कहानी २२६

एक गीदड़ और एक बन्दर दोनों एक रास्ते में साथ साथ चले जा रहे थे। कुछ दूर जाकर उन्होंने एक कब्रस्तान देखा। कबरों को देखते ही बन्दर कहने लगा—"ये सब मेरे ही बाप-दादों के स्मृति-स्तम्भ हैं। वे लोग बड़े प्रसिद्ध थे।" इस पर गीदड़ ने कहा—"जो मरजी हो सो कहो। तुम्हारे माने हुए इन पूर्व पुरुषों में अब कोई ऐसा नहीं जो तुम्हारी इस बात का प्रतिवाद कर सके।"

कौआ और कबूतर    कहानी २२७

एक कौए ने कबूतरों के घोंसले में बहुत कुछ खाने की चीजें देखीं। उन्हें देख कर उसके मन में बड़ा लोभ हुआ। उसने सोचा, यदि मैं किसी प्रकार कबूतर की तरह अपना रूप बना सकूँ तो फिर आनन्दपूर्वक कबूतरों के घोंसलों की सब चीजें खा जाऊँ। यह सोच कर उसने अपने शरीर को सफेद रङ्ग से रँग डाला और कबूतरों में जा मिला। जब तक वह चुपचाप चुगता रहा तब तक कबूतर उसे अपने ही दल का समझ कर कुछ न बोले। पर एक बार कौआ खुशी के मारे जोर से काँव काँव करके चिल्ला उठा। तब कबूतर फौरन ही उसे पहचान गये। उन्होंने चोंच मार मार कर उसे घोंसले से बाहर निकाल दिया। वहाँ से लौट कर कौआ फिर अपने झुण्ड में मिलने चला। पर, कौओं ने भी कबूतर जैसा रूप देख उसे न पहचाना। उन्होंने फौरन ही उसे अपने झुण्ड

से बाहर कर दिया। औरों का सुख पाने की अभिलाषा करने से उसे किसी का भी आश्रय न मिला।

घोड़ा, बैल, कुत्ता और मनुष्य ✲ ✲ ✲ कहानी २२८

सृष्टि होने के थोड़े दिनों बाद घोड़ा, बैल और कुत्ता जङ्गल छोड़ छोड़ कर मनुष्य के आश्रय में रहने लगे। नये आये हुए अतिथियों को घर और भोजन देकर मनुष्य ने भी उनका बड़ा सम्मान किया। इस पर तीनों पशुओं ने कृतज्ञ होकर अपने अपने स्वभाव के अनुसार मनुष्य को तीन वरदान दिये। घोड़े ने कहा—"मनुष्य का पहला जीवन मेरे जैसा हो।" बैल बोला—"मनुष्य का मध्यम जीवन मेरे सदृश हो।" अन्त में कुत्ता बोला—"मनुष्य का अन्तिम जीवन मेरे जैसा हो।" इन्हीं वरदानों के प्रभाव से मनुष्य की युवा अवस्था घोड़े की तरह उद्दण्ड, नासमझ और खेल-कूद की होती है, दूसरी बैल की तरह कर्मप्रिय, श्रम सहिष्णु और सञ्चयशील तथा तीसरी वृद्धावस्था कुत्ते की तरह चिढ़ चिढ़ा होती है। इस पिछली अवस्था में मनुष्य अपने कुटुम्ब को छोड़ कर और सबके साथ क्रोध और स्वार्थपरायणता का व्यवहार करता है। साथ ही जो लोग उसके परिचित नहीं होते और उसके कुछ काम-काज में नहीं आते उन्हें वह अपनी नजरों देख भी नहीं सकता।

पति और पत्नी ✲ ✲ ✲ कहानी २२९

एक मनुष्य की स्त्री अपने लड़ाकू स्वभाव के कारण अपने पति के घर के सब लोगों को अप्रिय होगई थी। पति ने मन में सोचा, मेरी स्त्री मेरे ही घर के लोगों पर इतनी असन्तुष्ट है या अपने माइकेवालों पर भी। यह सोच कर कुछ दिनों बाद उसने जाँचने के लिए किसी उत्सव के बहाने अपनी स्त्री को उसके माइके भेज दिया। थोड़े दिनों में जब वह माइके से लौटी तब पति ने उससे पूछा—"क्यों, माइके में तो सब लोगों के साथ अच्छी तरह मिल-जुल कर रहीं न?" स्त्री

बोली—"चरवाहे और हरवाहे मुझे देख नहीं सकते थे।" इस पर पति ने स्त्री से कहा—"भलीमानस, जो लोग सूर्य उदय होने के पहले घर से चले जाते हैं, और अस्त होने पर घर आते हैं, वही यदि तुझ पर असन्तुष्ट रहते थे तो सन्तुष्ट कौन रहता था? साफ साफ बतला।"

बादाम का पेड़ कहानी २३०

रास्ते के किनारे एक बादाम का वृक्ष फल-फूलों से लदा खड़ा था। रास्ते के सभी मुसाफिर पत्थर या लकड़ी फेंक कर उसके फल नीचे गिरा लेते थे। इससे दुखी होकर बादाम का वृक्ष एक दिन कहने लगा—"मनुष्य का कैसा बुरा स्वभाव है। मैं उन्हें फल देकर सन्तुष्ट करता हूँ और वही मेरा बुरा चेतते हैं।"

मोर और ब्रह्मा कहानी २३१

ब्रह्मा के सामने मोर रो रो कर बोला—"साधारण बुलबुल भी जब अपने ऊँचे स्वर से बोलता है तब मनुष्य उस पर मोहित हो जाते हैं। पर, मेरी आवाज सुनते ही सब हँसने और दिल्लगी करने लगते हैं। मेरा यह कैसा अभाग्य है।" ब्रह्मा ने उसे दिलासा देकर कहा—"तुम्हारी आवाज जरा कड़ी है, पर तुम्हारा आकार बड़ा और रूप-रङ्ग बहुत सुन्दर है। तुम्हारा नीला कण्ठ और ये चित्र-विचित्र पङ्ख बहुत ही शोभा देते हैं। तुम्हारे अच्छे स्वर की कमी इन्हीं से दूर हो गई।" इस पर मोर बोला—"परन्तु, मैं इस व्यर्थ के सौन्दर्य को लेकर क्या करूँ?" यह सुन कर ब्रह्मा ने कहा—"बेटा, सबके गुण ही गुण नहीं रहते। विचित्रता होना ही ससार का नियम है। तुम्हारी सुन्दरता, बाज की शक्ति, बुलबुल की आवाज, आदि एक एक का एक ही एक गुण मुख्य है। ससार में कोई एक-दम सुन्दर नहीं और न कोई एक दम बुरा है। हर एक में एक न एक ऐसा गुण है जिससे वह आदर पाता है। जिसके जो है, उसको उसी पर प्रसन्न रहना चाहिए।"

बन्दर और दो मुसाफिर ❦ ❦ ❦ कहानी २३२

दो मुसाफिर देश में भ्रमण करने के लिए एक साथ रवाना हुए। उनमें एक का नाम था सत्यवादी, सत्यवादी हमेशा सत्य ही बोलता था। दूसरे का नाम था मिथ्यावादी, वह स्वप्न में भी सच न बोलता था। भ्रमण करते करते वे दोनों बन्दरों के राज्य में जा पहुँचे। बन्दरों के राजा ने दूतों से उनके आने का हाल सुना। उसने उन्हें पकड़वा कर राज-सभा में हाजिर करने की आज्ञा दी। पाँच छः बन्दर उन दोनों मुसाफिरों को पकड़ने चले। इतने में राजा अपनी राज-सभा की गद्दी पर जा बैठा और मुख्य मुख्य बन्दर उसके चारों ओर बैठ गये। दोनों मुसाफिर पकड़े जाकर राज-सभा में लाये गये। राज सभा में उनके आते ही राजा ने उनसे पूछा—"अरे मुसाफिरो, तुम मुझे कैसा राजा समझते हो?" इस पर मिथ्यावादी बोला—"हुजूर, आप वैसे ही राजा हैं जैसा कि होना चाहिए?" बन्दरों के राजा ने प्रसन्न होकर फिर पूछा—"और ये सभासद् लोग?" मिथ्यावादी ने कहा—"हुजूर, ये भी कोई किसी से कम नहीं मालूम होते—इनमें प्रत्येक व्यक्ति दिग्विजयी, वीर और बुद्धि में बृहस्पति जैसा दीखता है।" यह 'सुन कर राजा और राजसभा के सारे लोग स पर बड़े प्रसन्न हुए। राजा ने मिथ्यावादी को खूब इनाम देने की आज्ञा दी। उस समय सत्यवादी ने मन ही मन सोचा कि—'झूठ बोलने से जब इतना इनाम मिलता है तब सच बोलने से न मालूम कितना मिलेगा?' अब बन्दरों के राजा ने सत्यवादी से पूछा—"अरे, तुमने तो कुछ भी न बतलाया। तुम्हें कैसा मालूम होता है?" सत्यवादी बोला—"अहा, जैसे आप बन्दरों के राजा हैं वैसे ही आपके सभासद् भी बन्दर हैं?" यह सुन कर राजा बड़ा क्रोधित हुआ। उसने आज्ञा दी—"सब मिल कर दाँतों और नखों से इसकी खबर लो।"

कहानी २३३

डूबता हुआ लडका   

एक लडका नदी में नहा रहा था। अचानक अधिक पानी में चले जाने से वह डूबने लगा। इतने ही मे उसने रास्ते में जाते हुए एक आदमी को देखा। तब वह जोर जोर से चिल्लाकर उसे अपनी सहायता के लिए बुलाने लगा। वह आदमी उसकी चिल्लाहट सुन कर वहाँ पहुँचा और उसे बचाने का कोई बन्दोबस्त न करके उसकी असावधानी और बेवकूफी पर तरह तरह के कटु वाक्य सुनाने लगा। इस पर लडका दुखी होकर बोला—महाशय, पहले मुझे पानी से निकाल कर जमीन पर ले चलिए, इसके बाद अपना उपदेश सुनाइएगा। नहीं तो आपका उपदेश खत्म होने के पहले ही मैं डूब कर मर जाऊँगा।

सहायता न करके केवल उपदेश करने से कुछ लाभ नहीं।

मूर्ति बेचनेवाला    **कहानी २३४**

एक आदमी लक्ष्मी की काठ की सुन्दर मूर्ति लेकर बाजार में बेचने आया। जब उसने देखा कि बाजार में उसका कोई गाहक ही नहीं तब खरीदारों को अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए वह कहने लगा—"यह लक्ष्मीदेवी की मूर्ति है, यह घर पर रहे तो धन और पुत्र की प्राप्ति होती है, दरिद्रता और दुःख सब दूर हो जाता है।" यह सुन कर एक आदमी बोला—"भाई, जब इस मूर्ति में इतने गुण हैं तब तू इसे बेचने के लिए क्यों उकता रहा है? तू इसे अपने ही पास रख कर धनवान् और पुत्रवान् हो सकता है।" इस पर बेचनेवाला बोला—"आप जो कहते हैं, वह ठीक है। पर कारणवश मुझे धन की बहुत जरूरत है और यह मूर्ति जरा देर से धन देती है।"

लाल और बाज़    **कहानी २३५**

ऊँचे से देवदारु की फुनगी पर बैठा हुआ एक लाल पक्षी आनन्दपूर्वक अपना गला खोल कर गा रहा था। एक बाज ने उसे देख लिया। वह देखते ही उसे चोंच मार कर पकड़ ले गया। इस पर लाल ने विनती करके कहा—"भाई, मैं बहुत छोटी चिड़िया हूँ। मुझे मारने से तुम्हारा पेट न भरेगा। तुम बड़े बलवान् हो। तुम्हें तो बड़ी बड़ी चिड़ियों का शिकार करना चाहिए। कृपा करके मुझे छोड़ दो और किसी दूसरी बड़ी चिड़िया को ढूँढो।" यह सुन कर बाज बोला—"मैं ऐसा पागल नहीं जो हाथ आये हुए आहार को छोड़ कर अप्राप्त के लिए इधर-उधर हाय हाय करता फिरूँ।"

गदहा और बाघ    **कहानी २३६**

एक गदहे ने मैदान में चरते चरते देखा कि एक बाघ पकड़ने को आ रहा है। बाघ से बच कर भाग निकलना असम्भव जान कर गदहे ने

ा तब एक पैर से लँगडाने का बहाना किया। गदहे के पास आकर बाघ पूछने
गा—"भाई गदहा, तू लँगडाता क्यों है?" गदहा बोला—"क्या बताऊँ, चरते
रते एक बड़ा भारी काँटा चुभ गया। उसी से पैर में दर्द हो रहा है, और उसी
कारण मैं लँगडाता हूँ। देखो भाई, अगर उसे बाहर निकाल सको तो अच्छा
जब मुझे खाओगे तब वह तुम्हारे गले में अटक कर तुम्हे बडा
काँटा निकालना ही ठीक समझा। वह उसके

उसका कुछ भा परवा न की। उल्लू जितना ही उसे मना करता था व हा वह और और विचित्र आवाज निकालता था। अन्त में उल्लू न श का आश्रय लिया। उसने कहा—"अर भाई, तुमको मैंने चुप रहने का कहा था, कुछ समझे भी? तुम्हारी आवाज तो ऐसी मनोहर है जैसा सरस्वती की वीणा का स्वर। तुम्हारा विचित्र गाना सुनकर भूख और नींद भूल जाती है। मैं थोडा सा स्वर्ग का अमृत लाया हूँ। उसे अब खाऊँगा उसके खा लेने स मुझे भूख और प्यास न सतायेगी। फिर मैं निश्चिन्त हो तुम्हारा गाना सुनूँगा। भाई, तुम भी अमृत चखना चाहो तो आ जाओ चिल्लाते चिल्लाते झींगुर का गला सूख गया था। वह अमृत चखने के लोभ और उल्लू की खुशामद से मोहित होकर फौरन उसके खोडर में चला गया। वहाँ पहुँचने की देर थी कि उल्लू ने उसको खतम कर दिया।

बहेलिया और साँप    कहानी २३८

एक बहेलिया अपना जाल आदि लकर चिडियों को फँसा रहा था। दरख्त के ऊपर एक चिडिया को देख कर वह एक-दम ऊपर उसी पर नजर जमा कर चलने लगा। ऊपर नजर रहने के कारण, उसका पैर एक सोते हुए साँप पर पड गया। पैर पडते ही साँप जाग पडा और उसने उसे डस लिया। तब बहेलिया यह कहता हुआ मूर्च्छित हो जमीन पर गिर पडा—"हाय रे मेरे अभाग्य! दूसर का शिकार करते हुए मैं स्वय ही शिकार हो गया।"

घोडा और गदहा    कहानी २३९

एक घोडा बहुमूल्य जीन और साज से सजा हुआ चला जाता था। इतने ही में उसने एक गदहे को देखा जिस पर बोझ लदा हुआ था। गदहे पर बहुत बोझ लदा था, इसलिए धीरे धीरे चल कर उसने घोडे के लिए रास्ता

छाड दिया। घमण्डो घोडा गदहे की धीमी चाल पर बिगड कर उससे कहने लगा—"मन म आता है कि तुझे दुलत्ती मार कर रास्ते से हटा दूँ।" यह अपमान की बात सुन कर गदहा चुपचाप अपने रास्ते चला गया। कुछ दिनों बाद घोडे के तेज न चल सकने पर उसके मालिक ने उसे बेच डाला। एक दिन गदहे ने देखा कि वहा घाडा मैले की गाडी बडे कष्ट से खाचता जा रहा है। यह देख कर गदहा बाेला—"कहा भाई वडे आदमी, आज तुम्हारी वह साज-सजावट क्या हुई ? जिस हालत से एक दिन तुम इतनी नफरत करते थे, आज उससे भी बुरी हालत तुम्हारी हा रही है। भला बतलाओ ता आज तुम्हे लगता कैसा है ?

कहानी २४०

खरगोश और शेर   

खरगोशा ने पशुओं की सभा मे यह मसविदा पेश किया कि सब जानवर बराबर हैं—कोई किसी से छोटा बडा नहीं। मसविदा सुनकर शेर बाला—"भाई खरगोश, तुम्हारी बात ठीक है, पर हम लोगों की तरह जिसके दाँत और नाखून नहीं, उसे मानेगा कौन ?"

कहानी २४१

मछुआ   

कितने ही मछुए जाल लगाकर मछलियाँ पकड रहे थे। एक बार जाल डाल कर उसे उन्होंने ऊपर खींचना चाहा ता वह बहुत बोझीला मालूम हुआ। यह देख कर कि अब की खूब मछलियाँ फँसी होंगी, वे खुशी के मारे नाचने और उछलने लगे। जाल ऊपर लाकर उन्होंने देखा कि मछलियाँ ता कम हैं परन्तु रत और पत्थर आ जाने से जाल भारी हो रहा है। इस पर वे हताश होकर बहुत दु खी हो गये। यह देख एक बूढ़ा मछुआ बोला—"हताेत्साह होने का कोई कारण नहीं। सुख और दु ख जोडवाँ भाई हैं। इसके सिवा जिस समय हम लोग

खुशी के मारे नाच रहे थे उसी समय हमें समझ लेना चाहिए था कि हम पर कोई दुःख भी शीघ्र ही पड़ सकता है।

सुखस्यानन्तर दुःख दुःखस्यानन्तरं सुखम्। चक्रवत् परिवर्तन्ते दुःखानि च सुखानि च।

बर्रे, तीतर और किसान    कहानी २४२

एक बार देश भर में पानी न बरसने से बड़ा भयानक जल-कष्ट हुआ। कहीं भी बिना मुश्किल के जरा सा भी जल नहीं मिल सकता था। एक बर्रे और एक तीतर दोनों प्यास के मारे व्याकुल होकर एक किसान के पास गये और उससे पीने के लिए पानी माँगने लगे। तीतर बोला—"जल देने की कृपा करो मैं तुम्हारा बड़ा कृतज्ञ होऊँगा और अपनी शक्ति भर तुम्हारा कोई न कोई उपकार करूँगा। मैं तुम्हारी आलू की क्यारियों को खूब खोद दूँगा। इससे खेत में बहुत आलू पैदा होंगे।" बर्रे बोली—"मैं अपना डङ्क निकाल कर रात दिन तुम्हारे खेत का पहरा दूँगी और चोरों को भगाऊँगा।" दोनों की बातें सुन कर किसान बोला—"देखो भाई, मेरे एक जोड़ा बैल और एक कुत्ता है। वे बिना कुछ माँग-जाँचे ही चुपचाप मेरे इन कामों को किये जाते हैं। मैं अपना जल तुम्हें न देकर उन्हीं को दूँगा।"

बकरा और गदहा    कहानी २४३

एक आदमी के पास एक बकरा और एक गदहा था। गदहे को रोज अधिक चारा पाते देखकर बकरे को उस पर ईर्ष्या हुई। गदहे को मालिक की नजर से गिराने के लिए बकरे ने उससे कहा—"तुम्हारे साथ मालिक का बर्ताव बहुत ही बुरा है। तुमको वह रात दिन काम में लगाये रहता है। अफसोस, तुम्हें इस प्रकार काम में लगे देख कर मुझे बड़ी तकलीफ होती है। मुझे देखो, मैं किस प्रकार मजे में नाच-कूद कर अपना समय काटता हूँ। तुम भी एक

म करो। बीमारी का बहाना करके तुम एक दिन किसी गड्ढे में गिर पड़ो
र इस प्रकार कुछ दिनों तक आराम से रहो।" गदहे ने बकरे की बात को
त्र का उपदेश समझ कर एक दम उस पर विश्वास कर लिया। बकरे के कथना-
सार वह एक गड्ढे में गिर पड़ा। गड्ढे में गिरने से उसके बहुत चोट लगी।
ब मालिक ने गदहे की चिकित्सा के लिए एक पशु-चिकित्सक को बुलाया। डाक्टर
गदह की देह पर बकरे की चर्बी की मालिश करने की व्यवस्था दी। उसी समय
दहे को उपदेश देनेवाला बकरा काट डाला गया और उसकी चर्बी से गदहे की
मालिश की गई।

कहानी २४४

बाघ और बकरा

एक बाघ ने देखा कि पहाड़ के ऊँचे शिखर पर एक बकरा घास चर रहा है। उस स्थान पर बाघ न जा सकता था। इसलिए उसने बकरे से कहा—"अरे बकरे, तू इतना ऊँचे पर क्यों चढ़ गया है? पैर फिसलते ही नीचे आ गिरेगा। तब तू चूर चूर हो जायगा। नीचे उतर कर मजे में चर। यहाँ बहुत घास है और वह भी बड़ी उमदा।" इस पर बकरा बोला—"मुझे आप क्षमा करें, मैं नीचे नहीं उतर सकता। आप मेरा पेट भरने को नहीं बुला रहे हैं, आप तो मुझे खाने की घात में हैं।"

कहानी २४५

शेर और साँड

एक शेर ने जङ्गल में एक मोटे-ताजे साँड को चरते देखा। शेर की इच्छा हुई कि इसे मार कर खा जायँ। पर, साँड को मजबूत और बलवान देखकर ऐसा करने का उसे एक-दम साहस न हुआ। उसने सोचा कि किसी प्रकार धोखा देकर इसका वध करना चाहिए। तब साँड के पास आकर

वह कहने लगा—"भाई, मैंने तुम्हें भोजन कराने का प्रबन्ध किया है। मेरे घर आज तुम्हारा न्योता है।" शेर ने सोचा था कि साँड खाते वक्त ज्यों ही गर्दन नीचे झुकायगा त्यों ही मैं उसकी गर्दन तोड कर उसे मार डालूँगा। किन्तु, साँड ने शेर की बात का कुछ भी उत्तर न दिया। वह चुपचाप वहाँ से जाने लगा। यह देखकर शेर बोला—"भाई, क्या तुम यह भलमनसी कर रहे हो? मेरा न्योता न मान कर तुम बिना कुछ कहे सुने ही चल खडे हुए।" यह सुन कर साँड बोला—"आपका न्योता मुझे खिलाने के लिए नहीं, पर मुझको ही खा जाने के लिए है। यही जान कर मैं यहाँ से जा रहा हूँ।"

भाई और बहन्    कहानी २४६

एक आदमी के एक लडका और एक लडकी थी। लडका बहुत ही खूबसूरत और लडकी बिलकुल बदसूरत थी। एक रोज खेलते खेलते वे दोनों एक आईना उठाकर उसमें अपना मुँह देखने लगे। अपने मुँह की शोभा देख कर लडका अपनी खूबसूरती की बडाई करने लगा। लडकी ने समझा कि मेरी बदसूरती देख कर ही भाई अपनी खूबसूरती की बडाई कर रहा है। इस पर उसको बडा गुस्सा आया। वह दौड कर बाप के पास गई और उससे इस बात की शिकायत की। लडकी बोली—"देखो पिता, सुन्दरता तो स्त्रियों की चीज है। भैया उसे चोरी में पाकर उसी की बडाई कर रहे हैं।" पिता ने दोनों को बडे प्यार से गोद में बैठा लिया और आदर के साथ दोनों का मुँह चूम कर कहा—"बेटा, मैं चाहता हूँ कि तुम दोनों रोज आईने में अपना मुँह देखा करो। ऐसा करने से बेटा, तुम बुरे कामों और बुरी बातों से अपने सुन्दर रूप को बचाये रहोगे। और बेटी तुम, अच्छे चाल-चलन और अच्छे स्वभाव से अपने बाहरी रूप की कमी को दूर करने की चेष्टा करोगी।"

कहानी २४७

मेढक वैद्य

एक पुराना मेढक जल से बाहर निकल कर टर्र टर्र करता हुआ कहने लगा—"मैं वैद्य हूँ । कौन है हठीला रोगी, मेरे पास आवे, मैं ऐसी उत्तम दवा दूँगा कि जिससे वह छण भर में ही चङ्गा हो जायगा। मैं साक्षात् धन्वन्तरि का पोता और स्वर्ग के वैद्य अश्विनीकुमार का पड़पोता हूँ । मैं उन्हीं के जैसा चिकित्सक-चूडामणि हूँ ।" आडम्बर से भरा हुआ यह विज्ञापन सुन कर एक गीदड़ बोला—"अच्छा, जो तुम इतने बड़े वैद्य हो तो पहले अपनी खुद की टेढ़ी चाल और शरीर का सिकुड़न को क्यों नहीं अच्छा कर लेते ?"

वैद्य को पहले अपनी तबीयत सुधारनी चाहिए।

कहानी २४८

दो शत्रु

दो आदमियों में परस्पर बड़ी दुश्मनी थी। एक रोज, परदेश जाते समय, संयोगवश दोनों नदी पार करने के लिए एक ही नाव पर बैठे। एक दूसरे से अलग रहने के लिए एक आदमी नाव के पीछे बैठा और एक आगे। नाव नदी के मधबीच पहुँची कि घनघोर आँधी-पानी आगया। पानी में डावाँडोल होती हुई नाव डूबने लगी। इस पर जो आदमी नाव के आगे बैठा था उसने पूछा—"अरे माझी, नाव पहले किस तरफ डूबती है ?" माझी बोला—"नाव का पिछला हिस्सा ही पहले डूबता है और अगला हिस्सा पीछे।" इस पर वह आदमी बहुत खुश होकर कहने लगा—"अच्छा हुआ, अब मैं बहुत कुछ निश्चिन्त हो गया। अब मरूँ तो मुझे अधिक पछतावा नहीं, क्योंकि अपने दुश्मन को तो पहले मरते देख लूँगा।"

कहानी २४९

लड़ाकू मुरगे और तीतर

एक आदमी के पास दो लड़ाकू मुरगे थे। उसने एक तीतर भी लाकर उनके साथ रख लिया। अब दोनों मुरगे उस तीतर को दिन भर घर में मारें

तरफ खदेड़ते रहते थे। तीतर ने सोचा कि मैं यहाँ नया और अनजान हूँ, इसी लिए ये दोनों मेरे साथ ऐसा व्यवहार करते हैं। जब मैं यहाँ, दो एक दिन के बाद परिचित हो जाऊँगा तब शायद ये मुझसे हेल मेल कर लें। इसके थोडी ही देर बाद तीतर ने देखा कि दोनों मुरगे आपस में भिड गये और खूब जोर से लडने लगे। अन्त में वे बडी देर तक लडते रहे, और जब तक उनमें से एक घायल न हो गया तब तक एक दूसरे से अलग न हुए। यह तमाशा देख तीतर बोला—"हाय इनका स्वभाव ही ऐसा है। ये दोनों जब आपस में इस प्रकार लडे मरते हैं तब मेरे साथ इन्होंने जो अत्याचार किया, उसके लिए मुझे विस्मित होने और दुःख मानने का कोई कारण नहीं।"

शेर, बाघ और गीदड    कहानी २५०

एक शेर बीमार होकर गुफा में जा रहा। जङ्गल के सारे जानवर क्रम क्रम से उसे देखने आये, केवल गीदड नहीं आया। बाघ यह मौका पाकर गीदड की शिकायत करने की इच्छा से शेर से बोला—"हुजूर, देखा आपने, गीदड कैसा चालाक है। हम लोग यहाँ अपने राजा के बुरे समय में आकर सहानुभूति और सहायता कर रहे हैं। पर गीदड अपने अहङ्कार के मारे इतना उन्मत्त होगया है कि उसने इस ओर नजर उठाकर देखा तक नहीं। बाघ यह कही रहा था कि वहाँ गीदड आ पहुँचा। उसने बाघ की सारी बात सुन ली। गीदड को देखते ही शेर ने गुस्से में आ कर कहा—"आ बदमाश, मैं अभी तेरा सिर तोडता हूँ।" इस पर गीदड बडी अधीनता से बोला—'हुजूर, मैं आपके ही काम में लगा था। इसी लिए इतने दिन तक सेवा में हाजिर न हो सका। सब लोग तो केवल हाथ पर हाथ रक्खे यहाँ बैठे रहे हैं। और मैं आपकी बीमारी को दूर करने के लिए दवा ढूँढ़ता हुआ, भूख प्यास सब कुछ सह कर, जङ्गल जङ्गल भटकता फिरा हूँ।" गीदड की बात सुन कर शेर कुछ थामा पड़ा। वह बोला—"इसी से तो मैं कह रहा था कि मेरा परम मित्र गीदड

बिना किसी कारण के बाहर नहीं रह सकता। तो बतलाओ भाई, कौन सी दवा तुम लाये हो।" गीदड बोला—"हुजूर, दवा मैंने बहुत अच्छी ढूँढ़ी है। बिना दवा ढूँढे मैं आनेवाला न था। दवा यह है कि एक जिन्दा बाघ की खाल खींचकर उसको गरम गरम ओढ लेने से आपकी बीमारी दूर हो सकती है।" यह सुनते ही शेर उछल कर बाघ के ऊपर जा पडा और उसकी खाल खींचने लगा। ऐसे समय गीदड ने बाघ से कहा—"तुम मालिक से दूसरे की शिकायत किये बिना भी उसे खुश कर सकते थे।"

गीदड और शेर    कहानी २५१

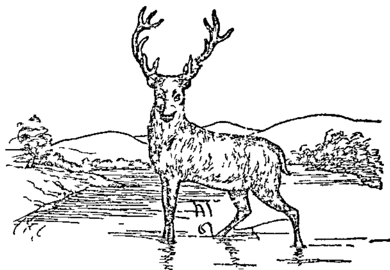
एक गीदड ने देखा कि एक जगह पिँजडे में शेर फँसा पडा है। यह देख कर गीदड के जो कुछ मन मे आया वही कह कर शेर को गालियाँ देने लगा। इस पर शेर बोला—"यह गाली-गलौज तू नहीं दे रहा है। मेरी यह दुरवस्था ही मुझे यह सहन करा रही है।"

भेड़िया और शेर    कहानी २५२

एक भेडिया, दिन डूबते समय, पहाड के नीचे नीचे चला जा रहा था। उसने देखा कि पहाड पर मेरी बडी भारी परछाई पड रही है। परछाई देख कर उसने मन मे सोचा—"वाह, मेरा इतना बडा शरीर है! एक बीघे भर तक तो मेरी छाया जाती है। इस दशा में मैं शेर से क्यों डरता हूँ? मैं ही वास्तव में जङ्गल का राजा हो सकता हूँ।" जिस समय वह ऐसा सोच विचार कर रहा था उसी समय एक शेर ने आकर उस पर हमला किया। इस पर भेडिया बोला "हाय, अपनी शक्ति को न जानने से मैं मारा गया!"

बारहसिंगा और उसके अवयव    कहानी २५

एक बारहसिंगा एक झील में पानी पीने गया। वह जल मे अपनी छाया देख कर अपने शरीर के अवयवों की खूबसूरती पर



विचार करने लगा—वह मन ही मन कहने लगा—"मेरे सींग कैसे मजबूत और सुन्दर हैं। परन्तु मेरे पैर बडे बुरे और भद्दे हैं।" इतने ही में शिकारियों की आहट पाते ही वह अपनी खूबसूरती का सोच विचार छोड प्राण लेकर वहाँ से भागा। वह इतनी तेजी से भागा कि शिकारी और उसके कुत्ते बहुत पीछे रह गये। पर, जङ्गल में घुसते ही उसके टेढे मेढे सींग वृक्षों की डालियों में ऐसे अटक गये कि बहुत कोशिश करने पर भी छूट न सके। अन्त में शिकारी और कुत्ते समीप आने पर उस पर टूट पडे। बारहसिंगे ने यह कह कर प्राण छोड दिये कि मैं जिस अङ्ग को बुरा और

भद्दा समझता था उसी ने मेरे प्राण बचा लिये होते, परन्तु जिसे मैं खूबसूरत और मजबूत समझता था उसने मेरे प्राण गँवाये ।



पहले काम पीछे साज सजावट ।

कहानी २५४

चिडिया और खरगोश

एक खरगोश को शिकरे ने पकड लिया । खरगोश बडा दीनता से रोने-चिल्लाने लगा । यह सुनकर पास बैठी हुई एक चिडिया कहने लगी—"वाह रे बेवकूफ, जरा सावधान होकर चारों तरफ नजर क्यो न रक्खी । जैसे देखा था कि शिकरा चोंच मारता है वैसे ही तेजी से दौड क्यों न पडा ? उस वक्त तेरा जल्दबाजी कहाँ चली गई थी ? चिडिया इसी प्रकार उपदेश दे रही थी कि एक बाज चोंच मारकर उसे उठा ले गया । यह देखकर खरगोश मरते समय शान्तिपूर्वक मरा । उस समय वह कहने लगा—"अरे, अभी तक तू अपने को बिलकुल सुखी

र कर अपने अँगौछे की यह हालत देख कर कहा—"अरे कृतघ्न जानवरो, ग
रों को पहनने ओढने के कपडे बनाने के लिए तो ऊन देते हो पर जो तुम्हें
ाना देता है उसके तुम कपडे फाड डालते हो।"

र और शिकरा    कहानी २६४

एक शिकरे ने शेर से कहा—"भाई आओ, हम तुम दोनों भाई-चारा करें। ऐसा करने पर हम एक दूसरे की मदद कर सकेंगे।" शेर बोला—"मैं राजी हूँ, पर मेरी दुष्टता क्षमा करो। कोई व्यक्ति जब तक तुम्हारी जमानत देनेवाला न हो तब तक मैं तुम्हारा विश्वास नहीं कर सकता। कारण यह है कि जो अपने इच्छानुसार अपनी प्रतिज्ञा को तोड कर उड जा सकता है, उसका विश्वास कैसे किया जाय ?"

चीज को खरीदने के पहले जांच लेना अच्छा है।

कोयल और चिडीमार    कहानी २६५

एक कोयल आम के पेड पर बैठी बैठी पके हुए आम का मीठा रस पी रही थी। इसी समय उसने देखा कि एक चिडीमार कई तीर लिये उसकी ओर आ रहा है। आम का मीठा रस पीती पीती कोयल इतनी बेसुध हो रही थी कि उडती उडती भी वह वहाँ से न उड सकी। इधर चिडीमार ने दरख्त के नीचे आकर अपनी कमान पर तीर चढाया। कोयल ने देख कर सोचा कि 'अब भी तीर के छूटने में देर है, जरा सा आम का रस और पी लूँ।' थोडा सा और पी कर और भी थोडा सा पीने का लाभ उसके मन में हुआ। बस, उसी क्षण चिडीमार का तीर उसके शरीर में छिद गया। वह जमीन पर गिर पडी। चिडीमार के हाथ में पड कर कोयल कहने लगी—"हाय, मैं कैसी मूर्ख हूँ ! क्षण भर के सुख के ... ने अपने अमूल्य धन स्वतन्त्रता का नाश कर दिया।"

कहानी २६६

मुरगी और पतिङ्गा

मुरगी की आदत है कि वह अंडे देखते ही, उन पर अपने पर फैला कर, उन्हें गर्मी पहुँचाने लगती है। एक मुरगी ने एक जगह कुछ साँप के अंडे पड़े देखे। तब वह उन पर पर फैला कर बैठ गई और उन्हें गर्मी पहुँचाने लगी। उसकी यह भूल देख कर एक पतिङ्गा कहने लगा—"अरी बेवकूफ मुरगी, तू साँप के अंडों को क्यों से रही है? उनके बच्चे बाहर होते ही सभी को हानि पहुँचाने लगेंगे और यह हानि पहले-पहल तुझ पर से ही शुरू होगी।"

कहानी २६७

गीदड़ और झरबेरी का दरख्त

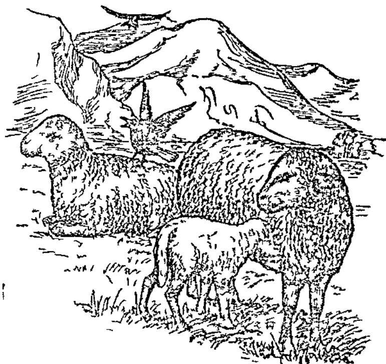
एक गीदड़ एक घेरे को लाँघते समय जब गिरने लगा तब पास ही के एक झरबेरी के पेड़ ने उसे गिरने से बचा लिया पर, उसके शरीर में जगह जगह काँटे चुभ गये। इस पर गीदड़ ने उस पेड़ को बड़े तिरस्कार के साथ कहा—"घेरे के अत्याचार से बचने के लिए मैंने तेरा आश्रय लिया, पर तूने मेरे साथ उससे भी बुरा व्यवहार किया।" यह सुन कर झरबेरी बोली—"यह तुम्हारी ही भूल है। मैं सबको पकड़ती हूँ, किन्तु तुमने मुझे क्या समझ कर पकड़ा था?"

कहानी २६८

कौआ और मेंढा

एक कौआ एक मेंढ़े की पीठ पर बैठा था। मेंढा बहुत गुस्सा होकर उसे उड़ाने की चेष्टा करने लगा। उसने सींग नीचे किये तो वह कूद कूद कर उसकी पूँछ के पास जा बैठा और जब उसने पूँछ हिलाई तब वह उसकी पीठ पर चला गया। कौए को किसी प्रकार न उड़ा सकने पर मेंढ़ा बोला—"दुर अभागे ... पीठ पर बैठ कर तू ऐसा करता तो वह अपने दाँतों और

तुझे मजा चखाता।" कौए ने उत्तर दिया—"मैं बलवान् के पास नम्र हो जाता हूँ, निर्बल और डरपोक को हा मैं खूब सताता हूँ। मैं जानता हूँ कि किसे मैं तङ्ग कर



सकता हूँ और किसे खुशामद करके सन्तुष्ट रख सकता हूँ। इन नीतियों के जानने ही के कारण मैं इतने दिनों तक जीवित हूँ।"

गदहा और लड़ाई का घोड़ा + * + कहानी २६८

गदहे ने एक लड़ाई के घोड़े से कहा—"भाई, तुम्हारा भाग्य कैसा अच्छा है। यद्यपि तुम्हें कोई काम नहीं तो भी तुम्हारा पूरा आदर-सत्कार है। तुम खूब खा पीकर मस्त हो रहे हो। मेरा बड़ा अभाग्य है। अधिक मिहनत

करने पर भी मुझे पेट भर चारा नहीं मिलता।" इसके थोड़े दिनों बाद गदहे ने देखा कि घोड़े पर सवार होकर एक हथियारबन्द सिपाही लड़ाई पर जा रहा है। लड़ाई में गोली खाकर घोड़ा मर गया। अब गदहे की समझ में आया कि विपत्तियों से भरी हुई सम्पत्ति की अपेक्षा बिना विपत्ति की दरिद्रता कहीं अच्छी है।

कहानी २७०

शेर, ब्रह्मा और हाथी

एक शेर ब्रह्मा से फरियाद करके कहने लगा—"भगवन्, यद्यपि मेरा बल और विक्रम काफी है, शरीर भी सुन्दर है और अपने दाँतों और नखों का ताकत स मैं पशुराज् कहलाता हूँ, तथापि एक मुरगे की आवाज से मैं इतना डरता हूँ। यह मेरे लिए बड़े शर्म की बात है। आपने मुझे पैदा करते समय मेरे साथ यह क्या बला लगा दी?" इस पर ब्रह्मा बोले—"मुझे व्यर्थ दोष न दो, ससार में कोई भी सम्पूर्ण नहा है। तुम्हे और कुछ कमी तो नहीं। तुम्हें असन्तोष न करना चाहिए।" ब्रह्मा के समझाने से भी शेर का मन सन्तुष्ट न हुआ। वह मन ही मन कुढ़ता जा रहा था। रास्ते में उसने देखा कि एक ऊँचा पूरा हाथी निरन्तर अपने कान हिलाता चला जाता है। तब शेर ने उससे पूछा—'भाई, तुम लगातार कान क्यों हिला रहे हो?" इस पर हाथी बोला—"भाई, मैं मच्छड़ों से बहुत डरता हूँ। मेरे कान में जो मच्छड़ काट खाय तो अवश्य मेरी मृत्यु हो जाय।" यह सुन कर शेर कहने लगा—"अच्छा, अब मेरे दु:ख होने का कोई कारण नहीं। जब इतना बड़ा जानवर एक छोटे से मच्छड़ के डर से रात दिन भयभीत रहता है तब मच्छड़ से बहुत बड़े मुरगे से यदि मैं डरूँ तो दु:ख की बात नहीं।"

कहानी २७१

कुत्ता और घोंघा

एक कुत्ता अण्डे को देखते ही खा जाता था। एक रोज़ एक घोंघे को देख कर अण्डे के धोखे वह उसे ही निगल गया। घोंघा खाने के बाद जब

कुत्ते का पेट दर्द करने लगा तब उसे अपनी भूल मालूम हुई। भूल मालूम होने पर कुत्ता कहने लगा—"मैंने अपनी बेवकूफी की अच्छी सजा पाई, आज समझ में आया कि दुनिया भर की गोल गोल चीजें अंडे नहीं हैं।"

घोड़े और चोर — कहानी २७२

दो घोड़े बोझे से लदे चले जा रहे थे। एक पर रुपयों की थैली थी और दूसरे पर अनाज का बोरा। जिस घोड़े पर रुपये लदे थे वह अहङ्कार के मारे गर्दन उठा कर जोर जोर से टाप रखता हुआ चलता था। दूसरा धीरे धीरे पैर उठा रहा था। जाते जाते अचानक उन पर चोरों ने आक्रमण किया। जिस पर रुपये लदे थे वह घोड़ा वहाँ से भागने लगा। पर, चोरों ने तलवार मार कर उसे वहीं रोक लिया और जो कुछ धन उस पर लदा था उसे लेकर वे चम्पत हुए। अनाजवाले घोड़े पर चोरों ने नजर भी न डाली। यह देख कर वह घोड़ा कहने लगा—"मेरी उपेक्षा करके चोर चले गये, इसका मुझे जरा भी रञ्ज नहीं। मुझे देख कर वे मुझे लूटते और घायल करते। इसके बजाय उनका निरादर सह कर मैं अपने जान माल से बच गया, यही मेरे लिए बहुत अच्छा हुआ।"

मच्छड़ और मनुष्य — कहानी २७३

एक मच्छड़ एक आदमी को बड़ी देर से बार बार काटता हुआ बहुत दुःखी कर रहा था। उस आदमी ने उसके पकड़ने की बहुत चेष्टा की और अन्त में उसे पकड़ ही लिया। हाथ में आने पर मच्छड़ कहने लगा—"महोदय, कृपा कर आप मुझे छोड़ दें, मैं बहुत छोटा जानवर हूँ। मैं आपकी बहुत कम हानि कर सकता हूँ।" इस पर वह आदमी बोला—"तुमको मैं किसी प्रकार नहीं छोड़ सकता। शत्रु कितना ही छोटा क्यों न हो, उसकी उपेक्षा करना ठीक नहीं।"

धनी और चमार

एक चमार के मकान की बगल में मकान बनवा कर एक धनवान् आदमी उसमें रहने लगा। किन्तु चमड़े की दुर्गन्धि से दुःखी होकर उसने चमार को वहाँ से हटा देने की मन में ठान ली। चमार हाथ पैर जोड़ता हुआ वहाँ से चले जाने में कुछ देरी करने लगा। इस प्रकार चमार के वहाँ से हटने में ज्यों ज्यों देरी होती गई त्यों त्यों धनी आदमी को चमड़े की दुर्गन्धि कम मालूम पड़ने लगी। अन्त में उसने चमार के वहीं बने रहने से कोई असुविधा होते न देख, उसे वहीं रहने दिया।

अभ्यास से सब कुछ आसान हो जाता है।

ईगली और चील

एक ईगली उदासी के साथ एक दरख्त की डाली पर बैठी थी। यह देख चील ने उसके पास जाकर पूछा—"क्यों जी, तुम इस प्रकार उदास क्यों बैठी हो?" ईगली बोली—"मैं अपने लिए एक योग्य पति ढूँढती हूँ, पर मिलता नहीं।" इस पर नर-चील बोला—"मेरे ही साथ अपना विवाह कर लो, मैं तुम्हारे लिए बहुत योग्य हूँ।" ईगली बोली—"तुममे शक्ति कितनी है? तुम अपने आप शिकार पकड़ने की ताक़त रखते हो न?" नर चील बोला—"वाह, मैं अपनी ताक़त की बात अपने मुँह क्या कहूँ? मैं तुमसे अधिक ताकतवर हूँ। एक बार मैं एक शुतुरमुर्ग को भी पकड़ लाया था।" ईगली ने इन बातों से प्रसन्न होकर चील के साथ ही अपना विवाह कर लिया। विवाह के बाद एक दिन उसने चील से कहा—"अच्छा, आज एक शुतुरमुर्ग तो पकड़ लाओ।" यह सुन कर नर चील आकाश में उड़ा और थोड़ी देर में एक सड़ा हुआ चूहा ज़मीन पर से उठा लाया। यह देख कर ईगली दङ्ग रह गई। अन्त में उसने चील से कहा—"यही क्या तुम अपनी प्रतिज्ञा का पालन कर रहे हो? शुतुरमुर्ग के बदले एक चूहा,

वह भी हाल ही का मारा हुआ नहीं, कितने ही दिनों का सड़ा-गला न मालूम कह से उठा लाये हो ?" ईगली को यह बात सुनकर नर-चील कहने लगा—"प्यारी माफ करो। उस समय तुम्हारा पति बनकर पक्षियों का राजा बनने के लोभ से इसरे भी अधिक झूठी बातें कह कर मैं तुम्हें प्रसन्न करना चाहता था। पर, इस सम यह नहीं कहना चाहता कि मैं अपनी प्रतिज्ञा का पालन कर सकता हूँ या नहीं।

राजकुमार और तसवीर का शेर ◎ ◎ ◎ कहानी २७

एक राजा के केवल एक लड़का था। राजा ने एक रोज स्वप्न में देख कि कोई आदमी उससे कह रहा है कि राजकुमार की मृत्यु शेर के द्वार होगी। कहीं यह स्वप्न सच्चा न निकले, इस डर से राजा ने राजकुमार को एक सुन्द महल के भीतर रख दिया। राजकुमार को महल से कहीं बाहर जाने की आज्ञा ी थी। राजकुमार का जी बहलाने के लिए महल की दीवारों और छतों पर तरह तर के पशु-पक्षियों के चित्र खींचे गये थे। एक दीवार पर शेर की बहुत ही साफ तस वीर खिंची हुई था। राजकुमार एक रोज उसी तसवीर के सामने जाकर खड़ा हे गया और कहने लगा—"अरे दुष्ट पशु, तेरे मारे तो पिता ने मुझे स्त्रियों की तरह घ के भीतर कैद कर रक्खा है। पिताजी केवल इस झूठे स्वप्न और साधारण जानव से इतने डर गये हैं।" इसी प्रकार सोच विचार करते हुए राजकुमार के मन बड़ा गुस्सा आया। उस तसवीर को मारने के लिए महल के नजदीक लगे हुए बबूल के दरख्त से एक डंडा काटना चाहा। डंडा काटने के लिए ज्यों ही वह दरख पर चढ़ने लगा त्यों ही उसकी हथेली में बबूल का बड़ा सा काँटा छिद गया काँटे के चुभ जाने से उसकी हथेली पक गई और अन्त में दो चार दिन ज्वर पीड़ित रह कर वह मर गया।

दुःख से छूटने की चेष्टा करने की अपेक्षा धीरज के साथ ... अच्छा है।

बकरी की दाढ़ी    कहानी २७७

पहले बकरी के दाढ़ी न होती थी। तब उसने ब्रह्मा से दाढ़ी के लिए प्रार्थना की। ब्रह्मा ने उसे दाढ़ी दे दी। यह देख कर बकरे बड़े नाराज हुए। वे ब्रह्मा के पास जाकर कहने लगे—"स्वामिन्, यह क्या अविचार है? स्त्रियों को भी क्या अब मर्दों की तरह इज्जत मिल गई?" यह सुन कर ब्रह्मा ने कहा—"बेटा, बकरियों को यह खोखली इज्जत रहने दो। इससे तुम्हारी बेइज्जती न होगी। बाहर से तुम्हारे जैसी होने में क्या रक्खा है, साहस और शक्ति में तो वे तुम्हारी बराबरी नहीं कर सकतीं।"

बाहर की बराबरी से बराबरी नहीं होती।

जल में डूबा हुआ आदमी और समुद्र    कहानी २७८

एक आदमी जहाज के साथ समुद्र में डूब गया। पर, किसी प्रकार कोशिश करके उसने अपने प्राण बचा लिये। अन्त में तैरता तैरता वह समुद्र के किनारे आ लगा। किनारे पहुँच कर उसने कहा—"अरे, समुद्र बड़ा विश्वासघातक है। अपना शान्त और स्थिर रूप दिखाकर वह आदमियों को भुला कर ले जाता है, इसके बाद लहरों की टक्कर मार मार कर उन सबके प्राण ले लेता है।" यह सुन कर समुद्र प्रत्यक्ष शरीर धारण कर जल से बाहर आया और उस आदमी से कहने लगा—"बेटा, मुझे व्यर्थ ही बुरा-भला न बतलाओ। मेरा स्वभाव तो तुम्हारी पृथ्वी की ही तरह शान्त और स्थिर है। यह दोष अभागे वायु का है, जो मुझ पर चढ़ कर मुझे धक्के देता और अशान्त और अस्थिर कर देता है।"

उत्तेजना मिलने पर शान्त स्वभाववाला भी भयावना हो जाता है।

गंजा आदमी और मच्छड़ — कहानी २७९

एक गंजे की गंज पर बैठकर एक मच्छड़ काट रहा था। मच्छड़ को मारने के लिए उसने जोर से एक चपत अपनी गंज पर मारी। पर, मच्छड़ चपत बचा कर भाग निकला और दूर जाकर बोला—"मैं छोटा सा जीव हूँ। मेरे काटने की जरा सी तकलीफ से तुमने मुझे मार डालने का प्रयत्न किया। पर, तुमने अपने आपको चपत मारकर, दुःख के ऊपर अपमान भी सहा। इसके लिए तुम क्या सजा लेना चाहते हो?" यह सुन कर उस आदमी ने कहा—"मैं सरलतापूर्वक अपने साथ मेल मिलाप करके अपना अपराध क्षमा करा लूँगा। क्योंकि, मैं जानता हूँ कि मैंने अपने आपको जो चपत जमाई है, उसका मतलब बुरा न था। पर, तू तो मेरे लोहू का प्यासा है, तेरा मतलब ही बुरा है। मैं तुझे मारने में यदि इससे भी गहरी चोट खाऊँ तो भी मुझे बुरा न लगे।"

— उद्देश देखकर ही कार्य पर विचार करना चाहिए।

कौआ और साँप    कहानी २८०

एक कौआ कहीं भी कुछ आहार न मिलने से इधर-उधर उसी की खोज में फिर रहा था। एक जगह उसने एक साँप को देखा। सोते हुए साँप को मरा हुआ समझ कर ज्यों ही उसने उसे चोंच मार कर उठाना चाहा त्योंही साँप ने जाग कर उसे काट खाया। साँप के काटने की पीड़ा से दुःखी होकर कौए ने यह कहते कहते प्राण छोड़ा—'हाय, मैं कैसा अभागी हूँ, जिसे मैंने ईश्वर का दिया हुआ—ग्रहण करने योग्य—जीवन रक्षा का उपाय समझा था, उसी के द्वारा मेरे जीवन का नाश हुआ।'

ठठेरा और कुत्ता     कहानी २८१

एक ठठेरे के पास एक कुत्ता था। जब तक वह हथौड़ी से बरतन गढ़ता तब तक कुत्ता अपने अगले पैरों पर सिर रक्खे, आँखें मूँद कर, सोया करता था। किन्तु ज्यों ही ठठेरा काम-काज बन्द करके भोजन के लिए बैठता त्यों ही कुत्ता भी उठ कर अपनी पूँछ हिलाने लगता। रोज रोज ऐसा ही करते देख एक रोज ठठेरे ने कुत्ते से कहा—"अभागे कहीं के। जब मैं काम-काज करता हूँ तब तो तू सोता रहता है और जब मैं खाने बैठता हूँ तब तू मेरे सामने खड़ा होकर दुम हिलाने आता है। मूर्ख, तू जानता नहीं कि काम काज किये बिना पेट नहीं भरता, सब सुखों का कारण परिश्रम ही है।

"सुख के साथी बहुत हैं दुख के कोऊ नाहिं।"

शिकारी और घुड़सवार    कहानी २८२



एक आदमी एक खरगोश मार कर उसे कन्धे पर रक्खे घर आ रहा था। रास्ते में उसे एक घुड़-सवार मिल गया। घुड़सवार ने शिकारी से खरगोश मोल लेने के लिए कह कर उसे देखना चाहा। शिकारी ने ज्यों ही खरगोश को घुड़-सवार के हाथ में दिया त्यों ही ने घोड़े की लगाम एक-दम छोड़ दी। शिकारी भी घोड़े के पीछे

साध कर दौड़ा। पर घोड़ा ऐसी तेजी से दौड़ा कि शिकारी बहुत पी
। इस पर शिकारी ने और कोई उपाय न देख मन में बहुत दुखी हो रह
में घुड़-सवार से कहा—"जा, ले जा, यह खरगोश मैंने तुझे इनाम दिय है

थैलियाँ

२८३

हर एक मनुष्य के—एक सामने और एक पीछे—दोष से भ
थैलियाँ लटकती रहती हैं। सामने की थैली में दूसरे के और पीछे वाली
में अपने दोष भर रहते हैं। यही कारण है कि मनुष्य दूसरे के दोषों को
ता रहता है। पर, अपने दोषों की ओर उसकी दृष्टि कभी नहीं जाती। हमेशा

ढ़िया और गुलाबजल का बरतन

एक जगह गुलाबजल का खाली बरतन पड़ा था। वह मिट्टी का था। कहानी २८४
यद्यपि उसमें एक बूँद भी गुलाबजल न था। फिर भी उसकी
रास्ता चलनेवालों का मगज तर हुआ जाता था। एक बुढ़िया ने उसकी सुगन्धि
ध बरतन को उठा कर अपनी छाती से लगा लिया। वह उसके मुँह से आमद के
क लगा कर जोर जोर से साँस खींचकर सुगन्ध लेने लगी। अन्त में पर अपनी
हा, खतम हो जाने पर भी जिसमें इतनी सुगन्धि है, पूरा भरा होने में वह बोली—
समें कितनी सुगन्धि रही होगी। पर न मालूम

अच्छे आदमी का स्वभाव सुख और दुःख दोनों में एक-सा रहता है।

ह्मा और ऊँट

पहले समय में एक दिन ऊँट ने ब्रह्मा से कहा—"स्वामी कहानी २८५
सभी जानवरों के सींग हैं, एक मेरे ही नहीं है। इसलिए, चार पैरवाले
और दुःख मालूम होता है। कृपा कर मुझे भी एक जोड़ा सींग दें इससे मुझे बड़ी लज्जा